मोहरिते सच्चवयणस्स पलिमंथू (ठाणंगसुत्त, ५२९)
'मुखरता सत्यवचननी विघातक छे'

अनुसंधान

प्राकृतभाषा अने जैनसाहित्य-विषयक
सम्पादन, संशोधन, माहिती वगेरेनी पत्रिका

५१

सम्पादक:
विजयशीलचन्द्रसूरि

श्रीहेमचन्द्राचार्य

कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी
स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि
अहमदाबाद
२०१०

अनुसन्धान ५१

आद्य सम्पादक: **डॉ. हरिवल्लभ भायाणी**

सम्पादक: **विजयशीलचन्द्रसूरि**

सम्पर्क: C/o. **अतुल एच. कापडिया**
A-9, जागृति फ्लेट्स, पालडी
महावीर टावर पाछळ
अमदावाद-३८०००७
फोन : ०७९-२६५७४९८१

प्रकाशक: **कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि, अहमदाबाद**

प्राप्तिस्थान: (१) **आ. श्रीविजयनेमिसूरि जैन स्वाध्याय मन्दिर**
१२, भगतबाग, जैननगर, नवा शारदामन्दिर रोड,
आणंदजी कल्याणजी पेढीनी बाजुमां,
अमदावाद-३८०००७

(२) **सरस्वती पुस्तक भण्डार**
११२, हाथीखाना, रतनपोल,
अमदावाद-३८०००१

मूल्य: Rs. 80-00

मुद्रक:
क्रिश्ना ग्राफिक्स, किरीट हरजीभाई पटेल
९६६, नारणपुरा जूना गाम, अमदावाद-३८००१३
(फोन: ०७९-२७४९४३९३)

निवेदन

अनुसन्धाननी यात्रानो आ एकावनमो पडाव छे. आ अंकमां पूर्व प्रकाशित १ थी ५० अंकोनी सामग्रीनी वर्गीकृत सूचिओ आपवामां आवी छे. सूचि ए संशोधन माटेनुं एक महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ-साधन छे. कृति विषे, कर्ता विषे, कृति क्यां-क्यारे प्रगट-अप्रगट ते विषे जाणकारी मेळववानुं सूचि ए श्रेष्ठ साधन छे. संशोधको माटे तो मोटा आशीर्वादरूप ज ते गणाय.

अहीं आपेल सूचि कर्तावार, कृतिवार, विषयवार एम विविध प्रकारे तैयार करवामां आवेल छे. अेना परथी 'अनुसन्धाने' ५० पडावोमां केवुं-केटलुं प्रदान कर्युं छे तेनो विगतपूर्ण आलेख अवश्य मळी रहेशे.

आ सूचिओ तैयार करवानुं कंटाळाजनक बनी रहे तेवुं काम मुनिश्री धर्मकीर्तिविजयजी तथा मुनिश्री त्रैलोक्यमण्डनविजयजीए करी आप्युं छे. आ अंकनुं प्रूफवाचन पण तेओए ज करेल छे.

'अनुसन्धान'नी घणी घणी मर्यादाओ छे. ते विषे तेमज केटलीक त्रुटिओ विषे ते सम्पूर्ण सभान छे ज. तेम छतां, तेनी आ शोध-यात्रा धीमी पण अविरत गतिए चालु रही शकी छे, ते मोटुं समाधान छे. अस्तु.

– शी.

अनुक्रम

संशोधकनुं कर्तव्य : ''आसनसों मत डोल'' विजयशीलचन्द्रसूरि १

अनुसन्धान ५०(१)मां छपायेली
बे कृति विशे मुनि त्रैलोक्यमण्डनविजय ७

एक पत्र सिलास पटेलिया ९

Bhattakāle upaṭṭhite :
An Example of a "Mistranslation"
in the Pāli Canon **Yajima Michihiko** १२

माहिती : नवां प्रकाशनो १८

सूचि २१

संशोधकनुं कर्तव्य : ''आसनसों मत डोल''

ताजेतरमां एक साधु महाराजे प्रश्न उपस्थित कर्यो : ''शुं संशोधकोनो आ ज धर्म हशे के गुंचवाडा ज ऊभा करवा ?''

पूर्वापर सन्दर्भो तपासतां जाणी शकायुं छे के पोतानी अमुक गलत तेमज अज्ञानजनित मान्यता पर प्रहार थतो जोईने तेमने खराब लागी जवाने कारणे तेमणे आवो प्रश्न उठाव्यो जणाय छे.

मांडीने वात करीए. बन्युं छे एवुं के जैन श्रमण-परम्परानुं अने केटलीक ऐतिहासिक घटनाओनुं वर्णन करती एक नानकडी कृति छे - हिमवंत थेरावली. थोडा दायका अगाऊ ते प्रकाशमां आवी, अने विद्वानोए तेने हिमवंताचार्यनी रचना मानी लीधी. परन्तु आ एक आधुनिक रचना होवानुं, ए ज विद्वानोने, पाछळथी, तेनां बाह्यान्तर परीक्षणो करवाथी प्रतीत थयुं, अने तेओए तेना आधारे इतिहासनां तथ्योने मूलववानी वृत्ति पर पडदो पाड्यो, जे उचित ज गणाय. 'अनुसन्धान-४६'मां आ विषे विस्तारपूर्वक नोंध लखवामां आवी, जेथी तथ्योनी जाणकारी सर्वने मळी रहे. आशय एटलो ज के आधुनिक रचनाने प्राचीन गणीने चालवाथी उत्पन्न थयेला अने थता गुंचवाडा दूर थाय. परन्तु संशोधन अने संशोधक ए बे शब्दोथी सदैव भडकता रहेला साधुमित्रने ए आशय न समजायो होय,के पछी पोतानी कोई मान्यता तथा आ विषयने केन्द्रमां राखीने लखेल इतिहास-ग्रन्थ खोटां पुरवार थवानी भयग्रन्थिथी प्रेराईने होय; तेमणे एक ठेकाणे निम्न भाषामां लख्युं के -

''गुंचवाडानो एक नमूनो जोवा जेवो छे. श्रीपुण्यविजयजी बृहत्कल्पसूत्र भाग ६ ना आमुखमां पृ. १८ थी १९ उपर जणावे छे के आ उपरांत 'हिमवंत थेरावली'मां नीचे प्रमाणेनो उल्लेख छे. आचाराङ्गसूत्र उपरनी टीकाना प्रारम्भमां 'शस्त्रपरिज्ञाविवरणमतिबहुगहनं च गन्धहस्तिकृतं' एम जणाव्युं छे ते जोतां हिमवंत थेरावलीनो उल्लेख तरछोडी नाखवा जेवो नथी.

आ रीते एक बाजु श्रीपुण्यविजयजी हिमवंत थेरावलीनी आधारभूततानो संकेत आपे छे त्यारे बीजी बाजु **शी. एवा टुंकाक्षरी नामवाळा कोई अनुसन्धानकार पोताना कोई लेखमां आक्रोशपूर्वक** हिमवंत थेरावली प्रत्ये

पोतानी अश्रद्धा रजू करतां एम लखे छे के डॉ. मधुसूदन ढांकी साथेनी चर्चा दरम्यान तेमने (तेमणे) कह्युं के आ लेखने पहेलां तो बहु महत्त्व अपायुं पण पछी पुण्यविजयजी महाराजे कह्युं के 'आ तो बनावटी रचना छे' – प्रश्न थाय के शुं संशोधकोनो आ ज धर्म हशे के गुंचवाडा ज ऊभा करवा ?'' (ले. जयसुन्दरसूरि, ''२०मी सदीनी अलौकिक व्यक्ति'' पुस्तकमां)

पोतानी मान्यताने तेमज तेना समर्थनमां पोते लखेल-लखावेल कल्पित इतिहासने खोटां पुरवार करता लेखने 'आक्रोश' तरीके कोई माणस मूलवे तो ते तो सहेजे समजाय तेवुं छे. कारण के बधुं ज छूटी शके, पण मान्यतानी अने मतनी ममत तो कोईक वीरला ज छोडी शके ! परन्तु ''शी. एवा टुंकाक्षरी नामवाळा कोई अनुसन्धानकार'' आवा शब्दो लखीने तो ए मित्रवर्ये पोतानी मानसिकताना स्तरनो असल परिचय तो अवश्य आपी दीधो छे ! खेर, आपणे स्तरीय संशोधन-विमर्श करीए ते ज आ तबक्के आवश्यक छे.

★

संशोधन एटले सत्य अने तथ्यनुं प्रकाशन. 'संशोधन एटले परम्पराप्राप्त मत-मन्तव्य-मान्यतानुं खण्डन ज 'एवो अर्थ हरगीझ नथी; न थई शके. संशोधन ए तो, परम्परा द्वारा स्वीकारायेला कोई तथ्यमां क्वचित् गरबड होय, भ्रान्ति प्रवेशी होय, अने तेथी खराने खोटुं अने खोटाने खरुं मानवामां आवतुं होय तो तेनुं निरसन-निराकरण करीने ते तथ्यने तेना यथातथ स्वरूपे पुनः प्रस्थापित करती एक प्रक्रिया मात्र छे. आ प्रक्रिया हमेशां प्रमाणोनी-पुरावा अने साबितीओनी अपेक्षा सेवे छे. वगर प्रमाणे कोई वातने स्वीकारी लेवी ए संशोधन-प्रक्रियाने मंजूर नथी होतुं. तो, कोईवार कोई प्रमाणो वडे कोई बाबतनी स्थापना थई गई होय, परन्तु कालान्तरे ते स्थापनाने अन्यथा ठेरवे तेवां नवां-बीजां प्रमाणो अथवा परीक्षणो उपलब्ध थाय, तो पेली-आपोआप खोटी ठरती-स्थापनाने जिद्दपूर्वक वळगी रहेवुं, ए वात पण संशोधन-प्रक्रियाने माफक आवे तेवी नथी.

आथी, हिमवंत थेरावली प्रथमवार ध्यान पर-हाथमां आवी होय अने कांईक नवीन ने विलक्षण मळयाना उत्साहमां तेने प्रमाणभूत गणीने पुण्यविजयजीए कोईक विधान कर्युं होय; परन्तु पाछळथी, तेनां बाह्यान्तर-परीक्षणो द्वारा ते थेरावली, ज्ञानभण्डारोमां उपलब्ध अन्य असंख्य पट्टावलीओनी जेमज, कोईक

द्वारा रचायेल आधुनिक / अर्वाचीन लेख होवानुं प्रतीत थयुं होय अने तेथी तेने हिमवदाचार्य जेवा क्षमाश्रमण साधुपुरुषनी रचना समजीने करेलां विधानोमां पीछेहठ के परिवर्तन तेओ करे, तो तेने ''गुंचवाडो ऊभो करे छे'' एवुं कहेवामां कहेनारनी अज्ञता अने संशोधन तथा संशोधक परत्वेनी गेरसमज ज प्रगट थती जणाय छे.

एक-बे उदाहरणो द्वारा आ बाबतने स्पष्ट समजीए. 'योगदृष्टिसमुच्चय' ए हरिभद्राचार्यनो रचित ग्रन्थ छे. तेना ८२मा क्रमाङ्कनो श्लोक परम्पराप्राप्त वाचनानुसार आ प्रमाणे छे :

''आत्मानं पाशयन्त्येते, सदाऽसच्चेष्टया भृशम् ।
पापधूल्या जडाः कार्य-मविचार्यैव तत्त्वतः ॥८२॥''

आनो शब्दार्थ - ''पोतानी असत् चेष्टा थकी, आवा लोको, पोताना आत्माने, पापरूपी धूळ वडे **पाशयन्ति** - बांधे छे'' आवो करवामां आवेछे. टीकामां 'पाशयन्ति'नी टीका 'गुण्डयन्ति' (खरडे छे) एम तद्दन स्पष्ट होवा छतां 'पाशयन्ति' अने तेना बांधवारूप अर्थ अंगे कोईने कदीये शङ्का के सवाल थयां/थतां नथी.

हवे प्राचीन प्रतिओमां आ स्थाने ''**पान्सयन्ति**'' एवो पाठ छे. 'पान्सयन्ति' एटले 'धूलिधूसर करे छे' एम अर्थ थाय; अर्थात् 'मेलो करे छे - खरडे छे.' हवे संशोधक जो आ पाठने वास्तविक अने योग्य समजीने 'पाशयन्ति'ने दूर करी 'पान्सयन्ति' करी आपे, तो शुं तेणे गुंचवाडो ऊभो कर्यो गणाशे ? केमके हजारो लोको तो 'पाशयन्ति' ज भण्या छे, अने तेमणे छपावेल पुस्तकोमां पण ते ज पाठ छे. तो शुं शुद्ध पाठ स्वीकारवामां अहीं परम्परानो ध्वंस थयो गणाशे ? जड जनो मुद्रित पाठने वफादारीपूर्वक वळगी रहे अने शुद्ध पाठने-संशोधनने गुंचवाडा तरीके नवाजे, तो शुं संशोधकोए पोतानो धर्म पडतो मूकवो ?अलबत्त, नहीं. 'आसनसे मत डोल' ए ज साचा संशोधकनुं कर्तव्य होय छे. ज्यां सुधी पोताना संशोधनने, बधु सबळ प्रमाणो द्वारा, कोई खोटुं के अन्यथा न ठरावे, त्यां सुधी पोताना कर्तव्यथी डोले-डगे नहि, ते संशोधक.

बीजो दाखलो पण जोईए. डभोईमां उपाध्याय यशोविजयजीनी, स्वर्गवासनी तथा अन्तिम संस्कारनी भूमि प्रसिद्ध छे. सैकाओथी ते जग्या परम्परा द्वारा,

स्थानिक संघ तेमज लोको द्वारा प्रमाणित छे. त्यां तेमनी पादुका पण छे, अने तेनी आराधना पण घणा लोको करे छे. 'गुंचवाडा'वाळा मित्रे अने तेमना स्वजनवर्गे, कशा ज कारण विना, प्रमाण तथा आधार विना, ते स्थानथी बे खेतरवा दूर एक जमीन खरीद करी-करावी, अने ते जग्याने यशोविजयजी महाराजनी अन्तिम भूमि तरीके जाहेर करी. पुरातात्त्विक प्रमाणो तेमनी विरुद्धमां हतां. ३०० वर्षोनी ऐतिहासिक परम्पराथी पण आ जाहेरात विपरीत हती, गेरमार्गे दोरनारी हती. छतां गुंचवाडो ऊभो करवानी पद्धति, ज्यां सुधी स्थानिक श्रीसंघनो कठोर विरोध न थयो त्यां सुधी, छोडी नहोती.

तात्पर्य एटलुं ज के 'आपणी मान्यता ते ज संशोधन' एवुं नथी होतुं; तो 'संशोधन हमेशां आपणी निर्धारित/स्वीकृत मान्यताने समर्थन ज आपे' तेवुं पण नथी होतुं.

उपरोक्त चर्चाना समर्थनमां डॉ. हरिवल्लभ भायाणीनो एक सन्दर्भ टांकवा योग्य छे :

''प्रारम्भ एक प्रश्नथी करीए : 'संशोधन एटले शुं ?' प्रश्न जेवो ज टूंको उत्तर आपवो होय तो कही शकाय के संशोधन एटले सत्यनी शोध. आ सत्य एटले अध्ययन-विषयनी साथे संकळायेलां तथ्यो, तेमनो आन्तर सम्बन्ध तथा अर्थघटन, तथा ते उपरथी फलित थता व्यापक निर्णयो. पण मुश्केली अहींथी ज शरु थाय छे. सत्यने जे जोनार, जाणनार, परखनार छे ते एक चित्त छे, अने चित्तनी प्रकृति सत्यने यथार्थरूपे आपोआप प्राप्त करवानी नथी होती. अमुक चित्तावस्थामां ज तटस्थभावे वस्तुदर्शन ने विचारणा करी शकाती होय छे. चित्त क्षुब्ध के कलुषित होय त्यारे दर्शन, ग्रहण अने विचारणा आदि पूर्वग्रह के अभिनिवेशथी दूषित बने छे. व्यक्तिगत प्रकृति, रुचि, केळवणी अने युगभावना पण आमां महत्त्वनो भाग भजवे छे. अंगत आत्मलक्षी प्रभावथी बने तेटला अलिप्त रहेवाय तो ज तथ्य अने तदधीन व्यापक सत्य सुधी पहोंची शकाय.''

(अनुसन्धान, ले. ह. भायाणी, प्र. सरस्वती पुस्तक भण्डार, अमदावाद, ई. १९७२)

वर्षो पूर्वे एक पुस्तक वांचेलुं : 'साहित्य, तत्त्व अने तन्त्र'. लेखक गुलाबदास ब्रोकर. तेमां एक लेखनुं शीर्षक हतुं : 'सर्जकनुं कर्तव्य : आसनसे

मत डोल.' कबीरना पदनी पंक्तिने लईने बांधवामां आवेलुं ए शीर्षक, घणुं घणुं सूचवी जाय तेवुं हतुं. जेवुं सर्जकनुं, तेवुं ज संशोधकनुं पण कर्तव्य समजी शकाय. चित्तमां परम्परानो द्रोह के खण्डन करवानी मलिन वृत्ति न होय, नवुं नवुं, परन्तु प्रमाणभूत अने प्रमाणिक, शोधी काढीने परम्पराने शुद्ध तेम समृद्ध करवानी खेवना होय; आपणा संशोधनने प्रमाणपूर्वक कोई गलत पुरवार करे तो तेने वधावी लेवानी पूर्वग्रहमुक्त तत्परता होय; तो पछी संशोधके तेना आसन थकी विचलित थवानी लेश पण आवश्यकता रहेती नथी. संशोधन हमेशां गुंचवाडा दूर करे छे, जो आपणी मानसिकता पूर्वग्रहमुक्त विचारणा माटे सक्षम होय तो.

– शी.

नूतन प्रकाशन

योगदृष्टिसमुच्चय (स्वोपज्ञटीकासहित)

ताडपत्रना आधारे संशोधित वाचना

कर्ता : श्रीहरिभद्रसूरिजी

सम्पादक : विजयशीलचन्द्रसूरिजी

प्राप्तिस्थान : आ. श्रीविजयनेमिसूरि जैन स्वाध्याय मन्दिर
१२, भगतबाग, शेठ आणंदजी कल्याणजी पेढीनी बाजुमां,
जैननगर, नवा शारदा मन्दिर रोड,
अमदावाद-३८०००७
दूरभाष : (०७९) २६६२२४६५

मूल्य : रू. ७०-००

आवरणचित्र-परिचय

भगवान महावीरे स्थापेल ४ प्रकारना संघ पैकी श्रावकसंघमां आनन्द श्रावक, कामदेव श्रावक वगेरे १० मुख्य श्रावको हता. जेमना माटे 'उवासगदसाओ' नामे सातमुं अङ्ग - आगमसूत्र आलेखायेलुं छे. ते १० पैकी पांच श्रावकोनुं लघुचित्र दर्शावती एक पुंठानी पाटली. वन्दननी मुद्रामां ऊभेला ते पांच श्रावकोनो परिचय आपता पाटलीना उपरना भागमां वंचाता अक्षरो : **"आनंदजी आदिक सावकाकी या मुरती छे"**.

बोटादना श्रीलावण्यसूरिज्ञानभण्डारनी आ पाटली छे. राजस्थानी शैलीमां आलिखित आ लघुचित्र सम्भवतः १८मा शतकनुं जणाय छे.

अनुसन्धान ५०(१)मां छपायेली बे कृति विशे

मुनि त्रैलोक्यमण्डनविजय

(१)

तेजबाईव्रतग्रहणसज्झाय

ढाळ	गाथा	मुद्रितपाठ	सम्भवितपाठ
१	१३	घणी	धणी
१	१८	आरवडी	आखडी
१	२१	भण	मण
१	२२	भण	मण
२	१७	तगरणि	पगरणि
२	३३	भण	मण

ढा. १ गा. १७मां 'कुटि' ने बदले, नवविध परिग्रहनी गणतरी चालु होवाथी 'कुपि' (कुप्य = सोनुं-रूपुं सिवायनी धातुओ) होवुं सम्भवित छे. अने तो पाठ आम वांचवो पडे -

कुपि मोकली मण सइ च्यार. (अत्रे कृतिमां 'भणसइ' अने शब्दकोशमां 'माणसइ' छपायुं छे.) अर्थ : चारसो मण धातु राखवानी छूट.

कृतिमां ज्यां प्रश्नचिह्नो करायां छे त्यां सम्भवित अर्थ-

ढा. १ गा. २३ सजनादिक कारण उपदसी ? जयणा

- स्वजनादिक कारणे उपदेशेली जयणा.

ढा. २ गा. १७ कालादि तगरणि जयणा ए ?

- कालादि प्रकरणे जयणा

ढा. २ गा. ३१ विहवापगरणि ? काजि जयणा

- विवाह प्रकरणे जयणा

शब्दकोशमां जेनो अर्थ नथी दर्शावायो तेवा केटलाक शब्दो.

ढा. २ गा. ९ संपुन सय्या = सम्पूर्ण शय्या

ढा. २ गा. १७ राजक दैवकइं = राजा अने देव सम्बन्धित प्रसंगोए (अत्रे जयणा साथे सम्बन्ध जोडवानो छे.)

ढा. २ गा. १८ गोटा = कोपराना गोटा

ढा. ३ गा. ३ चूहले तरूं = चूल्हानो / चूल्हा माटेनो

ढा. २ गा. ३४ धोणी–नो अर्थ नाहवुं कर्यो छे, पण नहावानी वात आगळ आवी गई होवाथी धोणी = धोवुं समजवुं जोइए.

(२)

श्रीमल्लिनाथनो रास

कडी	मुद्रितपाठ	सम्भवितपाठ
४	सुर म्हाहरी	सुरम्हा हरी
५९	धणो	घणो
९०	हाथ्य न	हाथ्यन
११८	छइ नइं	छइनइं
२६३	अही कणि	अहीकणि

प्रश्नचिह्न करेला स्थाने सम्भवित अर्थ -

कडी ५५ चम्पानो धणी दूतो ? मोकलइ

- चम्पानो राजा दूत मोकले छे.

कडी ६० स्त्रीअक्रपा रोवत शणगार ? बीहीकिं नवी छंडइ व्रतभार

- स्त्रीनी नाराजगी, रुदन, शणगार व. थी के बीकथी (अर्थात् अनुकूल के प्रतिकूल उपसर्ग) व्रतभार छोडतो नथी.

कडी ७७ ए मलीनो हइ लुघ (ध?) भुप ?

- हे राजन् ! ए मल्लीकुमारीनो लुब्धो लागे छे.

कडी ९० सुतमुं (नुं ?) सीस वडारीउं शिरि हाथ्यन लागो

- शङ्करे पोताना दीकरानुं माथुं कापीने तेनी जग्याए हाथीनुं मस्तक लगाड्युं.

शब्दकोश अंगे

कडी ४० 'सेय' नो अर्थ स्वेद नहीं, पण शय्या होय.

कडी ६० 'विरि' नो अर्थ वैरी नहीं, पण वीर होय.

कडी ७६ 'धव्य' नो अर्थ धावमाता थाय.

कडी २१२ 'सधइणा' नो अर्थ सद्दहणा = श्रद्धा होइ शके.

एक पत्र

परम आदरणीय महाराजश्री, वंदन.

'अनुसंधान' : ५०- भाग : ०२ अंक वांच्यो. भाग : १ विशे तो एक-बे P.C. लख्यां हतां, अे मळ्यां ज हशे. पहेलां तो अंक जेमनी पुण्यस्मृतिमां अर्पण थयो छे एवा श्रुतस्थिर दर्शनप्रभावक स्व. मुनिराज श्रीजम्बूविजयजी महाराजने सादर वन्दन. विहार दरमियान जे रीते तेओश्री अन्य साधुजन साथे काळधर्म पाम्या अे घटना अरेराटी ने पछी घेरी वेदना जन्मावनारी बनी हती, ज्यारे समाचारपत्रमां अेना विशे वांचवामां आव्युं हतुं त्यारे. आ अंकमां अेमने श्रद्धांजलि आपता पत्रो छे. लेखो छे. आपनो लेख पण छे. प्रो. नलिनी बलबीर अने विदेशी विद्यार्थीनीनी नोंधो तथा अहेवाल अने सूचनो आदि छे - आ बधुं ज वांचीने अंदरथी हली जवायुं. केवी छे करुण नियति ! केवा प्रतिभासंपन्न पण्डित ! जैनधर्मपरम्परा, जैनोलोजी अने संशोधनना क्षेत्रे एमनी जे कामगीरी हती अे जोतां लागे के केटली मोटी खोट पडी छे जैन संघने ने आगळ वधीने कही शकीअे, जराय अतिशयोक्ति विना के देश-विदेशमां पण आ दिशामां संशोधनरत ने आ दिशानी प्रतिभा धरावनारा जूज, अेथी देश-विदेशमांय जब्बर खोट ! अेमना विशे मने आ लेखोथी, घणुं जाणवानुं - समजवानुं मळ्युं छे. आ बधा ज लेखो महाराजश्री प्रति उंडा स्नेहभावथी लखाया छे. अेमां अकाळे थयेला अेमना आवा अकस्मातनो अवसाद पण जोई शकाय छे. विदेशी विद्यार्थिनीनो लेख आपणने विचार करता पण करी दे छे के आपणे क्यां छीअे ? अेक विराट व्यक्तिमत्ताने साचववी जोईअे अे ना थई शक्युं. जे परिबळो, अकस्मातमां जे रीते निमित्त बन्यां अे पुनः निमित्त ना बने अेवी गांठ पण बंधावी जोइअे. अे ज साचुं तर्पण ने साचो पस्तावो !

- 'गूढार्थ दोहाओ....' शीर्षक अन्तर्गत डॉ. निरंजन राज्यगुरुनुं सम्पादन अने भूमिका वांची आनन्द थाय अे सहज बाबत छे. मजा पण आवी. दोहा आदिनी सरऴता प्रवाहिता अने लयमाधुर्यने कारणे वारंवारे वांचतो रह्यो.
- 'मरमी संत आनन्दघन....' लेखमां नगीनभाई शाहे जे रीते जैन परम्परा अने जैनचिंतनधाराना व्यापक परिप्रेक्ष्यमां आनन्दघननी अेक मरमी संतलेखे

दार्शनिक भूमिका हती, अे स्पष्ट करी आपी छे. आनन्दघनजीना अनेकान्तवादनुं अहीं सरस विश्लेषण छे. जैनदर्शन स्वयं अेक दृष्टि छे अने बधी दृष्टिओनो समन्वय छे अे समजाव्युं छे जे आजना समयसन्दर्भे अत्यन्त प्रस्तुत छे. तुलनावादी अभिगमनी वात पण गमी ने अे पण जरूरी ज छे. अन्यना मतोना सन्दर्भमां जैनदर्शन आदिनी चर्चा रसप्रद रही. गंभीर विषयनी मावजत रसाळ रही.

- श्री हसु याज्ञिकनो लेख पण खूब ज गम्यो.
- अर्धमागधी भाषानाना उद्‌भव अने विकास विशेनो प्रो. सागरमल जैननो लेख अनेक अर्थमां मूल्यवान छे. भाषाविज्ञानना सन्दर्भमां घणी गूंचो दूर करनारो छे. वळी प्राकृत, पालि, मागधी, अर्धमागधी आदि अंगेनी भ्रामकता पण दूर करनारो लेख छे. अेमणे विकासक्रमना अे युगना परिबळो आदिना सन्दर्भमां अर्धमागधीनी जे विशद् चर्चा करी छे अे विस्मित करी दे अेवी छे. शिलालेखो, पालि त्रिपिटक, अशोकना अभिलेखो, अर्धमागधी आगम, आदिनो आ सन्दर्भमां अेमणे विचार विनियोग कर्यो छे. अेमनो बीजो लेख 'कया आर्यावती' जैन सरस्वती है ?' लेख पण आवो ज गंभीर छे. चित्र तथा अभिलेख वडे थयेली चर्चा प्रभावक छे. बन्नेमांथी उभी थती जब्बर संशोधक तरीकेनी श्री सागरमलजीनी भूमिका वन्दनीय छे.
- डॉ. अनिताबहेन बोथरानो लेख 'हिन्दु और जैनव्रत...' बहु ज गम्यो. घणी बाबतो जाणवा मळी. आवी रीते आपणे भाग्ये ज जोईअे छीअे. बे दृष्टि, बे शैली, बे परम्परा ने बेमां साम्य ने जुदापणुं या व्यावर्तक बाबतो आदिनी चर्चा रसप्रद रही. संशोधन प्रवृत्ति अने संशोधन माटेनी सज्जता पाछळ रहेली महेनत अहीं जोई शकाय छे.

  अन्य लेखोय वांच्या ज ने गम्या ज छे.
- 'जैन तर्कभाषा' ग्रन्थना सन्दर्भमां भुवनचन्द्रजीनी चर्चा गमी. आजकाल थता सम्पादनोमां कशीय सम्पादकीय सूझ प्रगट ना थई होय, छतां नाम आवे, वळी पूर्वसम्पादकनी जगाअे अे आवे, त्यारे सम्पादकनी भूमिका शी ? अेवो मुद्दो चिन्त्य छे. आ बधाथी अलग पडीने चोक्कस सम्पादकीय सूझ साथे थयेला आ ग्रन्थनी सराहना यथार्थ ज.

✦ बे-त्रण अंग्रेजी लेखो वांचवाना बाकी छे. Dr. Nalini Josh नो लेख वांच्यो. अे बधाय वांचीश ज.

✦ आरंभे श्री हेमचन्द्राचार्यने अन्ते स्व. मुनिराज श्री जम्बूविजयजी महाराजनी अत्यन्त प्रभावक तथा ज्ञानतेजथी देदीप्यमान तस्वीर जोया ज करवानुं मन थाय अेवो सुन्दर तस्वीर उपक्रम सराहनीय छे ! अेकमां चहेरामां झळहळतुं स्मित तेज ने बीजामां बोलतुं स्मित !

आपनी निश्रामां थयेलुं आ सम्पादन साचे ज, साचा अर्थमां अभिनन्दन-पात्र छे.

आभार सह.

७-४-२०१०   आपनो

सिलास पटेलिया

इ-११, सूर्या फ्लेट - बी,
निझामपुरा, वडोदरा-३९०००२

Bhattakāle upaṭṭhite: An Example of a "Mistranslation" in the Pāli Canon

Yajima Michihiko

The phrase from the Pāli canon to be considered here was once the subject of some discussion in the debate surrounding H. Oldenberg's "Ākhyāna theory." To be more precise, the discussion was not about the interpretation of the phrase *per se,* but concerned, so to speak, its contextual congruity. In the following, I will first briefly review Oldenberg's and R.O. Francke's arguments and then offer a fresh perspective for the solution of a yet unresolved problem.

The Pāli Jātakas preserve ancient Indian prosimetric literature in its ancient form, and it goes without saying that they served as important evidence in support of Oldenberg's Ākhyāna theory. But the prose sections preserved in the commentaries are quite late in origin and do not preserve the original prose of the early Ākhyānas. This was self-evident to Oldenberg, but Francke refused to accept this temporal gap between the verse and prose of the Jātakas, and considered the relationship between the two to be quite close. As an example illustrative of this close relationship, he cites two Jātakas (J 539: *Mahājanaka-jātaka* and J 507: *Mahāpolabhana-jātaka)* which both contain the phrase with which we are here concerned.

In J 539[1] the Mahāsatta enters the town of Thūṇa, begging for alms, and comes to the house of an arrow-maker. This section is in prose, and it is followed by a verse (v. 163), the first line of which reads: "In the house of an arrow-maker *(koṭṭhake usukārassa)* when mealtime had arrived *(bhattakāle upaṭṭhite).'"* This would appear to be a subordinate clause, but there is no main clause, and it does not constitute a proper sentence. It was this "incompleteness" with which Francke took issue, In the case of J 507,[2] on the other hand, the phrase

bhattakāle upaṭṭhite forms together with the foregoing words *(so tassa gehaṃ pāvekkhi),* a complete sentence ("When mealtime had arrived, he entered his house"). Francke,[3] upon comparing the two, concluded that the incomplete line in the former has in fact its main clause not in the verse but in the preceding prose words *(pavisitvā ...gehadvāraṃ patto).* He asserts, moreover, that this is an example of an element belonging to the prose being wrongly placed in the verse and represents clear proof that Jātaka verses were influenced by the existing prose of the Jātakas.

Oldenberg,[4] on the other hand, argues that the problematic phrase in J 539 was not misplaced as a result of prose influence, and he makes the following points. First, the ascetic, according to the customs of the Indian ascetics, arrived at the arrow-maker's house "to beg for food." Therefore, even though the expression may be incomplete, there is nothing unnatural about its presence in the verse. Furthermore, the fact that a brahmin or *samaṇa* goes to beg of a householder "when mealtime has arrived" is also mentioned in the *Suttanipāta* (Sn 130),[5] and it is indeed quite probable that this phrase derives from the well-known words of the "Vasala-sutta" in the latter and was applied to a similar situation in the Jātakas. He suggests that this incomplete expression is the result of its having been adduced from another work.

Such are the arguments of the two scholars. First, there can be no doubt that Francke's views have potential importance when considering the secondary character of Jātaka verses, for verses are sometimes modified in conjunction with changes to the narrative, and in such cases the verses can be said to be clearly under the influence of the prose. But is this so in the present case? Oldenberg, on the other hand, convinced of the more recent origins of the Jātaka prose, rejects Francke's hypothesis, but his explanation lacks somewhat in persuasiveness, and his method of seeking the reason for the

said phrase's incompleteness in its having been borrowed from the well-known words of an early verse is not entirely convincing.

Now, grammatically speaking, the phrase in question *(bhattakāle upaṭṭhite)* is made up of two words both in the locative case, and together they form a locative absolute construction which might be translated as "when mealtime has arrived/come." Neither Francke nor Oldenberg questions the interpretation of the phrase itself, and their arguments are premised on this shared understanding of its meaning. It is true that there would appear to be no problems with this interpretation, and it would in fact seem to be the one and only possible interpretation. But this is only so if one considers it within the confines of "Pāli." What would happen if we were to remove this limitation? This question has never been posed in the past, but in the present case it is, I believe, an extremely important question to ask for resolving the point at issue.

In a note accompanying his response to Francke, Oldenberg makes the following comment:[6] "I note in passing that this description seems to have suffered while being handed down. Before or after the hemistich *koṭṭhake,* etc., there will have been a hemistich to which *koṭṭhake* structurally belongs—say, with an *aṭṭhāsi,* as the Commentary has it." One is, of course, at liberty to posit any such extra element. But even if there originally was such an element, there is no way of ascertaining this, and it is in the end nothing more than pure speculation. That being so, could it not be said to be more realistic to abandon any search for some such lost element and to instead consider the possibility that the incompleteness of the said phrase is, for instance, due to an error—that is, a "mistranslation"— that occurred in the course of its translation into Pāli?

In his study of the language of the original Buddhist canon, H. Lüders lists various instances of the apparent misinterpretation of the nominative singular *-e* when it was

transposed from an eastern language into Pāli.[7] In the present case too it should be quite possible to regard the word *upaṭṭhite* as an example of the nominative singular *-e* in an eastern language having been mistaken for a locative and so mistranslated into Pāli. In other words, the final *-e* was originally a nominative singular, but it was misinterpreted as a locative and hence the form *upaṭṭhite* has survived. If we assume that this was the case, then the phrase *bhattakāle upaṭṭhite* beomes a "complete" sentence meaning "he arrived [at the house of an arrow-maker] at mealtime," and the apparent incompleteness of this expression can be explained in a quite reasonable fashion.

That this use of the past participle of the verb *upa-sthā* in an active sense is fundamental to the said expression can in fact be readily ascertained from extant sources. For instance, with regard to Sn 130, alluded to by Oldenberg, the commentary *Paramatthajotikā* mentions the variant reading *upaṭṭhitaṃ* ('arrived').[8] Not only is this reading logical in terms of sentence structure, but its validity is also supported by the corresponding Chinese translations.[9] All previous translations of the *Suttanipāta,* including the relatively recent translation by K.R. Norman, have followed the reading *upaṭṭhite,* but this verse should probably be translated in accordance with the variant given in the *Paramatthajotikā* as follows: "Whoever...a brahman or a *samaṇa* who has arrived at mealtime..." If the word in question was originally an accusative in *-aṃ,* from where then would the reading *-e* in the *Suttanipāta* have come? It is probable that the borrowing occurred in the direction opposite to that posited by Oldenberg. That is to say, it is the secondary form *-e* in the *Suttanipāta* that was borrowed from a verse in the Jātakas or some other work or else "rewritten" by the author who happened to call it to mind.

It should be noted in passing that statements to the effect that a mendicant "arrived" (past particle of *upa-sthā)* at mealtime are also found in Jaina scriptures.[10] What is more, their metre

(śloka), position *(uvaṭṭhie/uvaṭṭhio* take up the final four syllables of a *pāda),* and so on coincide with the situation in Pāli, thus hinting at the antiquity of this expression.

In the above I have presented my views on a phrase once discussed in the context of the debate about Ākhyāna, and if the above hypothesis is correct, the material adduced in order to refute Oldenberg's Ākhyāna hypothesis turns out to have been completely wide of the mark. At the same time, Oldenberg's theory ends up being even more firmly vindicated.

NOTES

1. J No. 539 (Vol. VI): *Pavisitvā ca pana Mahāsatto piṇḍāya caranto usukārassa gehadvāraṃ patto,...* v. 163
   koṭṭhake usukārassa bhattakāle upaṭṭhite
   tatra ca so usukāro ekañ ca cakkhu niggayha
   jimham ekena pekkhati.
2. J No. 507 (Vol. IV), v. 19:
   ath' ettha isi-m-āgañchi samuddam upar ūpari,
   so tassa gehaṃ pāvekkhi bhattakāle upaṭṭhite.
3. ZDMG63, no. 13.
4. H. Oldenberg, "The Prose-and-Verse Type of Narrative and the Jātakas" ("The Ākhyāna Type and the Jātakas"; "Two Essays on Early Indian Chronology and Literature" [trans. from German], Part II), *JPTS* 1912, pp. 19-50, esp. pp. 23-26.
5. Sn 130; *yo brāhmaṇam vā samaṇam vā bhattakāle upaṭṭhite*
   roseti vācā na ca deti, taṃ jaññā 'vasalo' iti.
6. JPTS 1912, p.25, n.2.
7. H. Lüders, *Beobachtungen über die Sprache des buddhistischen Urkanons* (Berlin, 1954), §§12-19 (Nom. Sg. auf -e falsch aufgefaßt).

8. Pj: *bhattakāle upaṭṭhite ti bhojanakālejāte; upaṭṭhitan ti pi pāṭho. bhatta-kāle āgatan ti attho.*

9. (1) 沙門婆羅門　如法来乞求

呵責而不与　当知領群特 (Taishō II, No. 102, p. 29a)

(2) 沙門及与婆羅門　貧窮乞匄請向家

不与飲食亦不施　如是亦名旃陀羅

(Taishō II, No. 268, p. 468a)

10. Utt 12.3cd: *bhikkhaṭṭhā bambhaijjaṃmi jannavāde uvaṭṭhio*
Utt 25.5cd: *Vijayaghosassa jannaṃmi bhikkhaṭṭhā uvaṭṭhie*

1142, Yamagawa-cho
Ashikaga-shi 326002
(JAPAN)

माहिती :

नवां प्रकाशनो

१. धर्माभ्युदयमहाकाव्यम् – कर्ता **:** श्रीउदयप्रभसूरि. सं. मुनिश्रीचतुरविजयजी–पुण्यविजयजी. प्र. सिंघी ग्रन्थमाला, ई. १९४९.
नूतन संस्करण **:** सं. साध्वी चन्दनबालाश्री, प्र.भद्रंकर प्रकाशन, अमदावाद, ई. २०१०

गुजरातना महामन्त्री संघपति वस्तुपालना चरित्रवर्णनात्मक आ महाकाव्यनी रचना मन्त्रीना जीवनकाल दरम्यान ज थई हती, अने तेनी प्रथम नकल स्वयं वस्तुपाले स्वहस्ते लखी हती, जे खम्भात–भण्डारमां आजे पण विद्यमान छे. आमां मुख्यत्वे संघपति तरीके वस्तुपाले करेल संघयात्राना प्रसंगे, श्रीऋषभदेव (शत्रुञ्जय) अने श्रीनेमिनाथ (उज्जयन्त)नां चरित्रो विषे तेमनी जिज्ञासाना जवाबमा थयेल विस्तृत वर्णन करवामां आवेल छे. प्रान्तभागे त्रणेक परिशिष्टो तो पूर्व–सम्पादको द्वारा अपायां ज छे, उपरांत नवीन सम्पादिका द्वारा वधु सातेक परिशिष्टो मूकवामां आव्यां छे.

२. धर्मकल्पद्रुममहाकाव्यम् – कर्ता **:** उदयधर्मगणि. सं. शास्त्री जेठालाल हरिभाई, प्र. जैन धर्मप्रसारक सभा, भावनगर, ई. १९२८
नूतन संस्करण **:** सं. साध्वी चन्दनबालाश्री, प्र.भद्रंकर प्रकाशन, अमदावाद, ई. २०१०

धर्मनुं माहात्म्य वर्णवतो काव्यग्रन्थ. पूर्व प्रकाशनने यथावत् राखी, तेमां केटलांक नवां परिशिष्टो उमेरीने थयेल पुनः प्रकाशन. प्राचीन प्रकाशित पण हाल दुर्लभ्य बनेल ग्रन्थोना पुनः प्रकाशननो आ उपक्रम अनुमोदनीय छे. विशेषता ए छे के पूर्व–संस्करणनी प्रस्तावना वगेरे आमां पण जेमनां तेम राखवामां आवेल छे. पूर्वना सम्पादकोने अन्याय न थाय तेवी आ पद्धति इच्छवा योग्य छे.

३. प्राचीनश्रुतसमुद्धारपद्ममाला – ग्रन्थो १ थी २७ (प्रथम सम्पुट). श्री दशवैकालिकसूत्र वगेरे विविध पूर्व–प्रकाशित जैन आगमो – प्रत–आकारे,तथा १ ग्रन्थ पुस्तकाकारे.

विशेषता : विदेशथी खास मेळववामां आवेला किंमती अने टकाऊ

कागळो पर पूर्वे प्रकाशित ग्रन्थोनुं यथावत् झेरोक्स – ओफसेट पद्धतिथी थयेलुं पुनर्मुद्रण. मोंघो कागळ ए ज आ प्रकाशननी विशेषता. वधुमां पूर्व प्रकाशनना प्रकाशक तेमज सम्पादक-संशोधकोनां नामो सगवडपूर्वक काढी नाखवामां आव्यां छे, ते बीजी विशेषता. पैसा खरचनारने आ प्रकारनी हरकत करवानी विशेष छूट मळी शके छे, ते आ प्रकाशनो (पोथीओ) जोवाथी समजी शकाय. प्रत्येक प्रतमां प्रेरकनुं नाम, आर्थिक सहयोगदाता तथा तेना प्रेरक – प्रेरिकानां नाम, संस्थानी योजनाना अन्वये धनदान आपनार – अपावनाराओनां पानां भरीने नामो – आ बधुं ज निरांते छापी शकायुं छे. परन्तु जे ते ग्रन्थना सम्पादकनुं नाम शोध्युं पण जडतुं नथी ! हा, प्रकाशकीय निवेदनोमां संस्कृत भाषामां पूर्व प्रकाशक संस्थाओनुं नाम नोंधवामां आव्युं छे जरूर. ते निवेदनोमां 'संशोधनपुरस्सरमिदं प्रकाश्यते' एवो सर्वत्र उल्लेख छे; पण ते संशोधन शुं हशे ? तेनी कल्पना ज करवी पडे. वळी तेना (अने आ प्रकाशित ग्रन्थना पण) संशोधक-कोण हशे ? तेनी पण कल्पना ज करवी पडे.

ग्रन्थश्रेणिना प्रकाशक : जिनशासन आराधना ट्रस्ट, मुम्बई, प्रेरक – आ. हेमचन्द्रसू., वि.सं. २०६४.

४. विचाररत्नाकर – कर्ता : उपा. कीर्तिविजयजी (जगद्गुरु श्रीहीरसूरि शिष्य अने उपा. विनयविजयजीना गुरु) सं. – साध्वी चन्दनबालाश्रीजी, प्र. – भद्रंकर प्रकाशन – अमदावाद, ई. २०१०

अनेक जिज्ञासाओनां समाधान अने अनेक चर्चाओनां निराकरण करनारा आगमादि पाठोनो संकलनात्मक ग्रन्थ. जैनधर्मनां मन्तव्यो तथा साधु-श्रावकजीवनना विधिनिषेधोनां मूळ जाणवा माटेनो अतीव उपयोगी ग्रन्थ. आ ग्रन्थ ई. १९२७ मां देवचन्द्र लालभाई-जैनपुस्तकोद्धार संस्था तरफथी प्रताकारे प्रकाशित थयो हतो, जेनुं संशोधन आ. श्रीदानसूरिजी म.ए कर्युं हतुं. तेनुं आ पुनःसम्पादन साध्वी श्रीचन्दनबालाश्रीजीए कर्युं छे. तेओए विस्तृत विषयानुक्रम अने ९ परिशिष्टो पण उमेर्यां छे. उत्तम सम्पादन-मुद्रण.

५. धर्मविधिप्रकरणम् (सटीक) – कर्ता : श्रीप्रभसूरिजी (१३मो सैको), टीका – उदयसिंहसूरिजी (कर्ताना प्रशिष्य), सं. – चन्दनबालाश्रीजी, प्र. –भद्रंकर प्रकाशन-अमदावाद – ई. २००९

धर्मनी परीक्षा, धर्मना गुणो व. वर्णवतो आ ग्रन्थ टीका सहित, हंसविजयजी फ्री लायब्रेरी – अमदावादथी ई. १९२४मां प्रताकारे प्रकाशित थयो हतो. तेनुं विषयानुक्रम, ७ परिशिष्ट व. साथे, शुद्धीकरणपूर्वक आ नवीन संस्करण पुस्तकाकारे प्रकाशित थयुं छे. सम्पादन, मुद्रण वगेरे उत्तम छे. एक बे सूचनो करवा जेवां लागे छे :

नवा संस्करण वखते ग्रन्थने एक वार हस्तलिखित प्रतिओ साथे मेळवी लेवामां आवे ते इच्छनीय छे. खास करीने सम्पादक साध्वीजीए जणाव्युं छे तेम ''प्रथमावृत्तिमां अमुक पृष्ठ पर अक्षरो बराबर छपाया न होवाथी, ते अक्षरो समजाता न होवाथी क्षतिओ रही गई होय...'' एवी परिस्थितिमां हस्तलिखित प्रतिओनो सहारो अवश्य लाभदायक बने.

बीजुं, परिशिष्टो आपवानो उपक्रम आवकारदायक ज छे. पण ए परिशिष्टो केवल संख्यापूरक न बनी रहेतां उपयोगी पण होय तेवो आग्रह अवश्य राखवो जोईए. नानकडी प्रशस्तिना श्लोकोनो अकारादिक्रम पण परिशिष्ट तरीके आपवो बिनजरूरी लागे छे.

श्रद्धांजलि

तेरापन्थ धर्मसंघना जैनाचार्य आचार्य श्री महाप्रज्ञजीनो समाधिपूर्ण स्वर्गवास ताजेतरमां सरदार शहेर (राजस्थान)मां थयो छे, तेथी भारतीय तथा जैन विद्याजगतने एक प्रज्ञावन्त विद्यापुरुषनी खोट पडी छे. तेमनां संशोधन-कार्यो, विद्या-कार्यो तथा आगम-सम्पादनो थकी तेओ जैन जगतमां हमेशां याद रहेशे. तेमना आत्माने शान्ति तथा धर्मशासननो लाभ हो !

सूचि

सूचिओनो अनुक्रम

सम्पादनखण्ड

पृष्ठांक

१. प्राकृत-पद्य-रचना (९२)
   स्तोत्रात्मक (६०) (अकारादिक्रमे) २५
   वर्णनात्मक (३२) (अकारादिक्रमे) २९
   आदिपदानुक्रम (९२) ३१
२. प्राकृत-गद्य-रचना (४)
   कृति (अकारादिक्रमे) ३७
   आदिवाक्य ३७
३. संस्कृत-पद्य-रचना (१०१)
   स्तोत्रात्मक (६९) (अकारादिक्रमे) ३८
   वर्णनात्मक (३२) (अकारादिक्रमे) ४३
   आदिपदानुक्रम (१०१) ४५
४. संस्कृत-गद्य-रचना (३५)
   कृति (अकारादिक्रमे) ५१
   आदिवाक्य ५३
५. उत्तरकालीन-अपभ्रंश, गुजराती व. भाषानी पद्य-रचना (१७९)
   कृति (अकारादिक्रमे) ५६
   आदिपदानुक्रम ६७
६. उत्तरकालीन-अपभ्रंश, गुजराती व. भाषानी गद्य-रचना (१०)
   कृति (अकारादिक्रमे) ७७
   आदिवाक्य ७७
७. कृतिओनी (४२१) कर्ता प्रमाणे अनुक्रमणिका
   निश्चितकर्तृक (३३७) ७९
   अज्ञातकर्तृक (८४) ९८

लेखनखण्ड

१. लेख (१४०)
गुज./हिन्दी (१०३) १०२
– संशोधनात्मक (७०) १०२
– प्राचीन ग्रन्थोना स्वाध्याय-परिचयात्मक (१६) १०७
– अंजलिलेख (१७) १०८
अंग्रेजी (३७) ११०
२. टूंकनोंध (९२)
गुज. / हिन्दी (८०) ११३
अंग्रेजी (१२) ११८
३. सूचि व. (१०) ११९
४. शब्दचर्चा (१४०) (अकारादिक्रमे) १२०
५. विहंगावलोकन (३०) १२६

प्रकीर्णखण्ड

१. माहिती व. (२०) १२७
२. महत्त्वनां पत्रो (३०) १२८
३. प्रकाशनपरिचय १२९
४. आवरणचित्र १५२
५. अवसाननोंध १५४
६. अनुसन्धानिनी तवारीख १५५

सम्पादनखण्ड

- कृतिओमां भाषाविभाग अने पद्य-गद्यविभाग प्राधान्यने अनुलक्षीने करवामां आव्यो छे. पूर्वकालीन-अपभ्रंश भाषानी कृतिओने प्राकृतविभागमां अने उत्तरकालीन-अपभ्रंश भाषानी कृतिओने गुजरातीविभागमां समावाई छे.

- ते ते कृतिने लगती अन्य विगत अनु. ना ज कोईक अंकमां प्रकाशित थई होय तो ते अनु. क्रमांक अने पृष्ठांक टिप्पणीमां नोंधवामां आव्या छे. (दा.त. २१.४७ = २१मां अनु. नुं ४७मुं पानुं) आमां पत्रोनो समावेश नथी कर्यो, पण पत्रो साथे ज ते शेना विशे छे ते जणावी दीधुं छे. आ उपरान्त ते ते कृति जे अनु.मां होय ते अनु.नुं विहंगावलोकन अवश्य जोवुं. आ प्रमाणे अन्य खण्डोमां पण जाणवुं.

- जे कृतिनी बाजुमां * संज्ञा करेली छे, ते कृतिओ अन्यत्र पण प्रकाशित थई होवानुं पछीथी जाणवा मळ्युं छे.

- ५० अंकोमां कुल मळीने ४३२ कृतिओ सम्पादित-प्रकाशित थई छे. तेमां १० कृतिओ अनवधानवश बे वखत छपाई छे. (अनु.मां 'पाण्डवचरित्र' सिवाय जे कृतिनो स्थाननिर्देश बे वार कर्यो होय ते बे वखत छपाई होवानुं समजवुं.) लाभोदयरासनी एक वार खण्डितवाचना अने बीजीवार पूर्णवाचना छपाई छे. आम कुल ११ अंक बाद करतां ४२१ कृति सम्पादित थई छे. ३६३ पाखण्डी स्वरूपस्तोत्र एकवार मूळमात्र अने बीजीवार अवचूरि साथे छपायुं होवाथी अलग गणेल छे.

१. प्राकृत-पद्य-रचना (९२)

स्तोत्रात्मक (६०)

कृति	कर्ता	सम्पादक	अनु.	पृष्ठ
३६३ पाखण्डीस्वरूपस्तोत्र	-	कल्याणकीर्तिविजयजी	२१	३३
३६३ पाखण्डीस्वरूपस्तोत्र - सावचूरि	-	कल्याणकीर्तिविजयजी	२२	२७
अणहिलपुर-रथयात्रास्तवन	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	५०
आज्ञास्तोत्र	जिनप्रभसूरिजी	कल्याणकीर्तिविजयजी	२१	३९
आदिनाथस्तोत्र	-	रत्नकीर्तिविजयजी	१५	२८
		कल्याणकीर्तिविजयजी	३३	२१
आदिस्तव (ते धन्ना...)[१]	-	प्रद्युम्नसूरिजी	२४	१
ऋषभदेवविज्ञप्तिका	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	१८
ऋषभप्रभुस्तव[२]-सावचूर्णि (अष्टभाषामय)	जिनप्रभसूरिजी	कल्याणकीर्तिविजयजी	३९	९
कुलमण्डनसूरिविज्ञप्ति	-	कल्याणकीर्तिविजयजी	२१	२६
गुणरत्नसूरिविज्ञप्ति	-	कल्याणकीर्तिविजयजी	२१	२८
गौतमगणधरस्तव	जिनेश्वरसूरिजी	विनयसागरजी	३१	१८
चतुर्मुखमहावीरस्तवन	धर्मशेखर पण्डित	कल्याणकीर्तिविजयजी	२१	३०

(१) २५.१०८ (२) ४०.८३

चतुर्विंशतिजिनस्तोत्राणि	देवभद्रसूरिजी	विनयसागरजी	४०	१
चन्द्रप्रभस्तव (षड्भाषाबद्ध)	-	कल्याणकीर्तिविजयजी	३३	२५
जिनपतिसूरिपंचाशिका	-	भंवरलाल नाहटा	११	३२
जिनप्रबोधसूरि-जिनचन्द्रसूरि-चन्द्रायणा	मोदमन्दिर गणी	भंवरलाल नाहटा	९	९२
जिनप्रबोधसूरि-नाराचबन्धछन्द	सज्जन श्रावक	भंवरलाल नाहटा	९	९४
जिनेश्वरसूरि-कुण्डलिया	सज्जन श्रावक	भंवरलाल नाहटा	९	९३
ज्ञानसागरसूरिविज्ञप्ति	-	कल्याणकीर्तिविजयजी	२१	२५
तीर्थमालास्तव	मुनिचन्द्रसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	३६	१
त्रिलोकस्थितजिनगृहस्तव	रविसिंह	कल्याणकीर्तिविजयजी	२१	४१
धर्मसूरिगुणस्तुतिषट्त्रिंशिका	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	३३
धर्मसूरिछप्पय	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	६३
धर्मसूरिदेशनागुणस्तुति	रत्नसिंहसूरिजी[१]	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	५६
नेमिनाथरास	सागरचन्द्र मुनि	रमणीक शाह	१०	३६
नेमिनाथस्तव	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	२९
नेमिनाथस्तव	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	३०
नेमिनाथस्तव	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	३१
नेमिनाथस्तव	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	४७

(१) ४५.१०६

नेमिनाथस्तोत्र	-	रत्नकीर्तिविजयजी	१५	२९
		कल्याणकीर्तिविजयजी	३३	२२
नेमिनाथस्तोत्र	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	२६
नेमिसूरीश्वरस्तुति (त्रिभाषामयी)	यशोविजय प्र.	कल्याणकीर्तिविजयजी	५०(१)	६३
पंचपरमेष्ठिस्तव (प्रश्नगर्भ)	-	नलिनी बलबीर	५०(२)	७३
पार्श्वजिनस्तवन	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	५५
पार्श्वजिनस्तुति (शंखेश्वर)	यशोविजय उपा.	धुरन्धरविजयजी	३३	३
पार्श्वनाथस्तव (नवफणा-अष्टभाषामय)	कल्याणचन्द्रजी	कल्याणकीर्तिविजयजी	३७	१०
पार्श्वनाथस्तवन (उवसग्गहरं-समस्यापूर्ति)	हर्षकल्लोल–शिष्य	शीलचन्द्रसूरिजी	६	६२
पार्श्वनाथस्तवन (शंखेश्वर)	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	५८
पार्श्वनाथस्तवन (शंखेश्वर)	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	५९
पार्श्वनाथस्तवन (शंखेश्वर)	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	६०
पार्श्वनाथस्तवन (शंखेश्वर)	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	६०
पार्श्वनाथस्तव	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	२७
पार्श्वनाथस्तव	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	२८
पार्श्वनाथस्तोत्र	-	रत्नकीर्तिविजयजी	१५	३०
		कल्याणकीर्तिविजयजी	३३	२३
पुंडरीकगणधरस्तोत्र	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	४९

बावत्तरिजिनस्तवन (कुमरविहार)	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	५४
महत्तराचारित्रचूलाविज्ञप्ति	-	कल्याणकीर्तिविजयजी	२१	२९
महावीरस्तोत्र	-	रत्नकीर्तिविजयजी	१५	३१
		कल्याणकीर्तिविजयजी	३३	२४
मुनिमाला	सकलचन्द्र उपा.	शीलचन्द्रसूरिजी	३९	१
मुनिसुव्रतस्तवन (भरुयच्छमंडण)	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	५२
वीतरागविनति	-	रसीला कडीआ	३५	१
शान्तिनाथस्तोत्र	-	रत्नकीर्तिविजयजी	१५	२८
		कल्याणकीर्तिविजयजी	३३	२२
शासनदेवीस्तोत्र	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	६५
श्राविकाणां चतुर्विंशतिनमस्कार	-	शीलचन्द्रसूरिजी	३१	६१
साधारणजिनस्तवन	हरिभद्रसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	८	१००
			२२	१
सीमन्धरस्वामिविज्ञप्ति	धर्मशेखर पण्डित	कल्याणकीर्तिविजयजी	२१	३१
हीरविजयसूरिस्वाध्याय	धर्मसागर उपा.	शीलचन्द्रसूरिजी	४	४८
हीरविजयसूरिस्वाध्याय	पद्मसागरजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४	५१
हीरविजयसूरिस्वाध्याय	पद्मसागरजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४	५२
हीरविजयसूरिस्वाध्याय	विजयचन्द्र–शिष्य	शीलचन्द्रसूरिजी	४	५३

वर्णनात्मक (३२)

अप्पाणुसासणं	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	२०
अष्टमहाप्रातिहार्यवर्णन	-	प्रद्युम्नसूरिजी	१४	३८
आणन्दादिदसउवासगकहाओ - सचूर्णि	पूर्णभद्र गणि	अमृत पटेल	४८	१
आत्महितचिन्ताकुलक	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	३६
आलोयणाविहाणं	जयसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	३७	७
उपदेशकुलक	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	४५
उपधानप्रतिष्ठापंचाशक[१]	अभयदेवसूरिजी	प्रद्युम्नसूरिजी	४	३४
कम्मबत्तीसी	भानुलब्धि मुनि	कल्याणकीर्तिविजयजी	२१	३५
कामरूपपंचाशिका	-	शीलचन्द्रसूरिजी	१३	१
गणधरहोरा	-	शीलचन्द्रसूरिजी	११	४३
गुरुभक्तिमहिमाकुलक	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	४१
गुरुस्थापनाशतक	श्रीधर श्रावक	विनयसागरजी	३८	१
'चन्दप्पहचरियं'नी रूपककथा	हरिभद्रसूरिजी	सलोनी जोषी	१४	७०
छन्दोनुशासनम् - सविवृति	जिनेश्वरसूरिजी, वि.-मुनिचन्द्रसूरिजी	विनयसागरजी	४७	१
धर्मरत्नदुर्लभत्वम्	यशोविजय प्र.	कल्याणकीर्तिविजयजी	५०(१)	५४

(१) ५.५२, ७.१०६, १७.१६१, ३०.६२

धूमावलीप्रकरण	हरिभद्रसूरिजी	सूर्योदयसूरिजी	५	१
पंचकपरिहाणि	जयसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	३७	१
पट्टावलीविसुद्धि	उदयविजय उपा.	प्रद्युम्नसूरिजी	७	१
पर्यन्तसमयाराधनाकुलक	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	४४
बूटडिश्राविका-व्रतग्रहणविधि	-	शीलचन्द्रसूरिजी	३६	१४
मनोनिग्रहभावनाकुलक	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	३८
यतिशिक्षापंचाशिका*	पृथ्वीचन्द्रसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	१३	१३
राणीश्राविकागृहीत-द्वादशव्रतवर्णन[१]	-	विमलकीर्तिविजयजी	३	१५
लखमसिरीश्राविका-व्रतग्रहणविधि	-	शीलचन्द्रसूरिजी	३६	१९
ललितांगचरित्र[२] (रासकचूडामणि)	ईसरसूरि	हरिवल्लभ भायाणी	८	१
वज्रस्वामीचरित	जिनप्रभसूरिजी	रमणीक शाह	६	४७
व्यंग्यहीयाली	-	भंवरलाल नाहटा	१६	२२४
शतपंचाशितिकासंग्रहणी - सस्तबक	उत्तम ऋषि	धर्मकीर्तिविजयजी	४४	६७
श्रुतास्वादः	सकलचन्द्र उपा.	शीलचन्द्रसूरिजी	२३	१
संवेगचूलिकाकुलक	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	२५
सामुद्रिकशास्त्रलक्षणानि (भुवनसुन्दरीकथायां वर्णितानि)	विजयसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	१६	२८
हितशिक्षाकुलक	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	२४

(१) ३०.६२ (२) ७.१२९

आदिपदानुक्रम (९२)

आदिपद	कृतिनाम	अनु.	पृष्ठ
अक्खीणमहाणसिचारुचार-	गौतमगणधरस्तव	३१	१८
अङ्गुलिदलाभिरामं	साधारणजिनस्तवन	८	१००
		२२	१
अत्थि अ लोयब्भंतरभूयंमि	'चंदप्पहचरियं 'नी रूपककथा	१४	७०
अमियमऊहं नेमिं सुरराय-	नेमिनाथस्तोत्र	४४	२६
अरिहंतं भगवंतं सव्वन्नं	तीर्थमालास्तव	३६	१
असारे इत्थ संसारे	धर्मरत्नदुर्लभत्वम्	५० (१)	५४
असुरसुरखयरनरनमियपयपंकयं	त्रिलोकस्थितजिनगृहस्तव	२१	४१
असुरिंदसुरिंदाणं	धूमावलीप्रकरण	५	१
अस्सेयकोमलतले कमलोदराभे	सामुद्रिकशास्त्रलक्षणानि (भुवनसुन्दरीकथायां वर्णितानि)	१६	२८
इह विमलधम्मसायर-	हीरविजयसूरिस्वाध्याय	४	५२
उसभ अजिओ संभव	शतपंचाशितिकासंग्रहणी-सस्तबक	४४	६७
गंगजलसच्छतवगच्छसिरिमंडणं	गुणरत्नसूरिविज्ञप्ति	२१	२८
चउविह धम्मु चलणु जसु धीरह	जिनेश्वरसूरि-कुण्डलिया	९	९३

चउवीसंपि जिणिंदे वंदिय	शासनदेवीस्तोत्र	४४	६५
चउवीसंपि जिणिंदे वोलीणे-	बावत्तरिजिनस्तवन (कुमरविहार)	४४	५४
चिंतसु उवायमेसं संसारे	उपदेशकुलक	४४	४५
जइ जीव ! तुज्झ सम्मं	हितशिक्षाकुलक	४४	२४
जय जय नेमि जिणिंद !	नेमिनाथस्तव	४४	२९
जय जय नेमि जिणिंदपहु-	नेमिनाथस्तव	४४	३०
जय जय पईव ! कुंतलकलाव !	आदिनाथस्तोत्र	१५	२८
		३३	२१
जय जय पास ! सुहायर !	पार्श्वजिनस्तवन	४४	५५
जय जय भुवणदिवायर !	ऋषभदेवविज्ञप्तिका	४४	१८
जय जय संखेसरतिलय देव	पार्श्वनाथस्तवन (शंखेश्वर)	४४	५८
जय जोगिंदमुणिचंद-देविंदपवंदिय	पार्श्वजिनस्तुति (शंखेश्वर)	३३	३
जय भवतिमिरदिवायर !	वीतरागविनति	३५	१
जयइ जिणसासणमिणं	यतिशिक्षापंचाशिका	१३	१३
जयइ स जएक्कदीवो वीरो	धर्मसूरिगुणस्तुतिषट्त्रिंशिका	४४	३३
जयउ सो सामी वीरजिणंदो	महावीरस्तोत्र	१५	३१
		३३	३४

जस्स पयनहपहाभरपंजर-	आणंदादिदसउवासगकहाओ-सचूर्णि	४८	१	
जाइ (जइया ?) सहीहिं भणिया	व्यंग्यहीयाली	१६	२२४	
जीवाजीवाइ पए(य)त्थ	गणधरहोरा	११	४३	
जु वीरनाह पाय पट्टभत्तिचंगजुगवरो	जिनप्रबोधसूरि-नारचबन्धछन्द	९	९४	
तिहुयणजणमणलोयण-	मुनिसुव्रतस्तवन (भरुयच्छमंडण)	४४	५२	
तुंगु वट्टलु मसिणु थुड-नालु	अष्टमहाप्रातिहार्यवर्णन	१४	३८	
तं निसुणेविणु चिंतियं	नेमिनाथरास	१०	३६	
नमवि जिणवर निज्जियाणंग	वज्रस्वामीचरित	६	४७	
नमिउ(ऊ)ण महावीरं	उपधानप्रतिष्ठापंचाशक	४	३४	
नमिउं गुरुपयपउमं	गुरुभक्तिमहिमाकुलक	४४	४१	
नमिउं सिरिसिरिभवणं	हीरविजयसूरिस्वाध्याय	४	५१	
नमिऊण छन्दलक्खणधेणुं	छन्दोनुशासनम्-सविवृति	४७	१	
नमिऊण महावीरं गोयमसामिं	आलोयणाविहाणं	३७	७	
नमिऊण महावीरं दंसण-	बूटडिश्राविका-व्रतग्रहणविधि	३६	१४	
	लखमसिरीश्राविका-व्रतग्रहणविधि	३६	१९	
नमिरसुरमउडमाणिक्कतेय-	गुरुस्थापनाशतक	३८	१	
नमो महसेननरेन्द्रतनु(नू)ज !	चन्द्रप्रभस्तव (षड्भाषाबद्ध)	३३	२५	

नयगमभंगपहाणा विराहिआ-	आज्ञास्तोत्र	२१	३९
नारीण बाहिरंगे जह दिट्ठे	संवेगचूलिकाकुलक	४४	२५
नियगुरुपायपसाया नाउं	आत्महितचिन्ताकुलक	४४	३६
निरवधिरुचिरज्ञानम्	ऋषभप्रभुस्तव-सावचूर्णि (अष्टभाषामय)	३९	९
पंचजन्नि आउरिय संख जिणि	नेमिनाथस्तोत्र	१५	२९
		३३	२२
पढममुणिवर जणमणाणंद	श्राविकाणां चतुर्विंशतिनमस्कार	३१	६१
पढमं पढमजिणिंदं	ललितांगचरित्र (रासकचूडामणि)	८	१
पणमिअ जिणवरवसहं	हीरविजयसूरिस्वाध्याय	४	५३
पणमिअ पासजिणिंदं	पट्टावलीविसुद्धि	७	१
पणमिअ वीरजिणं(णिं)दं	हीरविजयसूरिस्वाध्याय	४	४८
पणमिअ सुरवरपूइअ-	पार्श्वनाथस्तवन (उवसग्गहरं-समस्यापूर्त्ति)	६	६२
पणमिय पढमजिणिंदं सीसं	पुंडरीकगणधरस्तोत्र	४४	४९
परिसिद्धिकए सिरिरिसहनाह !	चतुर्विंशतिजिनस्तोत्राणि	४०	१
पिंगियसंजमं नेमिं	नेमिसूरीश्वरस्तुति (त्रिभाषामयी)	५० (१)	६३
प्रणमदिन्द्रशिरोमणिरुग्भरो	पार्श्वनाथस्तव (नवफणा-अष्टभाषामय)	३७	१०
बालत्तणिंमि सामिय	आदिस्तव (ते धन्ना...)	२४	१

मंगलवरतरुकंदं सुहभाव-	पार्श्वनाथस्तव	४४	२७
रागिमिहुणं व रत्तं	जिनपतिसूरिपंचाशिका	११	३२
रेहाहि को तहिं ? को विणय-	पंचपरमेष्ठिस्तव (प्रश्नगर्भ)	५० (२)	७३
वंदहु निम्मलनाणनिहि	जिनप्रबोधसूरि-जिनचन्द्रसूरि-चन्द्रायणा	९	९२
वंदिअ सिद्धसमिद्धं पणट्ठ-	मुनिमाला	३९	१
विमलचारित्तपरिकलियवरदेहओ	ज्ञानसागरसूरिविज्ञप्ति	२१	२५
विमलविउलतवगच्छगयण-	कुलमण्डनसूरिविज्ञप्ति	२१	२६
वीससेण-अइरादेविनंदण	शान्तिनाथस्तोत्र	१५	२८
		३३	२२
श्रीधम्मसूरिचंदो सो नंदउ	धर्मसूरिछप्पय	४४	६३
श्रीसीमंधरदेव देवनरदाणवनायग	सीमन्धरस्वामिविज्ञप्ति	२१	३१
संखतुषारसमाणभूरिगुणकलियसुदेहा	महत्तराचारित्रचूलाविज्ञप्ति	२१	२९
संखपुरेसरि वंदहु देउ	पार्श्वनाथस्तवन (शंखेश्वर)	४४	६०
संखेसरि पुरि संठियह	पार्श्वनाथस्तवन (शंखेश्वर)	४४	६०
संपत्तसंसारसमुद्दतीरं	राणीश्राविकागृहीत-द्वादशव्रतवर्णन	३	१५
सयलतियलोक्कतिलयं	नेमिनाथस्तवन	४४	४७
सामि सामलय तणु कंति	पार्श्वनाथस्तोत्र	१५	३०

		३३	२३
सिद्धत्थसुयं सिद्धं बुद्धं	श्रुतास्वादः	२३	१
सिद्धाण नमुक्कारं अट्ठकम्माण	कम्मबत्तीसी	२१	३५
सिद्धिसहयार-मायावणि-	पंचकपरिहाणि	३७	१
सिरि संखेसरसंठिय	पार्श्वनाथस्तवन (शंखेश्वर)	४४	५९
सिरिचरिमतित्थनाहं	अणहिलपुर-रथयात्रास्तवन	४४	५०
सिरिधम्मसूरिपहुणो	मनोनिग्रहभावनाकुलक	४४	३८
सिरिधम्मसूरिसुगुरुं	अप्पाणुसासणं	४४	२०
सिरिनेमिनाह ! सामिय !	नेमिनाथस्तव	४४	३१
सिरिपास ! तिजयसुंदर !	पार्श्वनाथस्तवन	४४	२८
सिरिमंदिरसुंदरकायजाय	चतुर्मुखमहावीरस्तवन	२१	३०
सिरिवज्जसेणपणयं	३६३ पाखण्डीस्वरूपस्तोत्र	२१	३३
	३६३ पाखण्डीस्वरूपस्तोत्र-सावचूरि	२२	२७
सिरिसिलसूरिगुरुगणहरह	धर्मसूरिदेशनागुणस्तुति	४४	५६
सुहिओ वा दुहिओ वा थोवं	पर्यन्तसमयाराधनाकुलक	४४	४४
सो जयउ जस्स सयलं	कामरूपपंचाशिका	१३	१

२. प्राकृत-गद्य-रचना (४)

नाम	कर्ता	सम्पादक	अनु.	पृष्ठ
नाटिकानुकारि षड्भाषामयं पत्रम्	रूपचन्द्र उपा.	विनयसागरजी	२७	१
'पढमाणुओग'नी उपलब्ध वाचना	-	शीलचन्द्रसूरिजी	६	१
प्राकृतशब्दाः संस्कृते नानार्थाः	निन्हण कवि	शीलचन्द्रसूरिजी	५	४
विज्ञप्तिपत्र	जयशेखर पण्डित	विनयसागरजी	३३	८

आदिवाक्य

- नाटिकानुकारि षड्भाषामयं पत्रम् २७.१
  स्वस्तिश्रीसिद्धसिद्धान्ततत्त्वबोधा(ध)विधायिने ।
- पढमाणुओगनी उपलब्ध वाचना ६.१
  तेणं कालेणं तेणं समएणं भगवं वीरे वद्धमाणे.....
- प्राकृतशब्दाः संस्कृते नानार्थाः ५.४
  इक्कम्मि पए पयडत्थसंगए बहुलअत्थसंदोहं ।
- विज्ञप्तिपत्र ३३.८
  स्वस्तिश्रीवरवर्णिनी प्रियतमं विश्वत्रयैकाधिपं.....

३. संस्कृत-पद्य-रचना (१०१)

स्तोत्रात्मक (६९)

कृति	कर्ता	सम्पादक	अनु.	पृष्ठ
आदिनाथस्तवन (अकारान्तपदात्मक)	हेमहंस उपा.	धर्मकीर्तिविजयजी	७	८१
आदिनाथस्तवन (सुखभक्षिकानामगर्भित)	रविसागर	धुरन्धरविजयजी	८	८५
			२३	२१
आदिनाथस्तुति (कुटुम्बनामगर्भित)	भक्तिसागर	धुरन्धरविजयजी	८	८८
			२३	१८
आदिनाथस्तोत्र (कोट्टदुर्गमण्डन)	ज्ञानप्रमोद उपा.	विनयसागरजी	४०	३३
आदिनाथस्तोत्र (भक्तामर-पादपूर्ति)	विवेकचन्द्र गणि	विनयसागरजी	५० (१)	३७
आनन्दलहरी (सौन्दर्यलहरी-पादपूर्ति)	रत्नसिंह	सुयशचन्द्रविजयजी, सुजसचन्द्रविजयजी	४३	४६
ऋषभजिनस्तोत्र - सावचूरि (रघुवंश-पादपूर्ति)	रत्नसिंह	अमृत पटेल	३८	११
ऋषभदेववंशवर्णन (रघुवंशरीत्या)	रविसागर गणि	शीलचन्द्रसूरिजी	२३	४०
ऋषभदेवस्तोत्र - सटिप्पण (भक्तामर- पादपूर्ति)	महीसागर गणि	अमृत पटेल	३८	१९
ऋषभशतक	हेमविजय पण्डित	कल्याणकीर्तिविजयजी	२९	१
कमलपंचशतिकास्तोत्र - सटिप्पण	हर्षकुल गणि	शीलचन्द्रसूरिजी	१५	३२

गिरिनारवर्णन (कुमारसम्भवरीत्या)	रविसागर गणि	शीलचन्द्रसूरिजी	२३	३३
गुरुवर्णन (जिनशतकमहाकाव्य-प्रथमपरिच्छेदाद्यपद)	रविसागर गणि	शीलचन्द्रसूरिजी	२३	४२
गुरुस्तुति	-	भुवनचन्द्रजी	३९	२३
गौतमगणधरस्तव	सूरप्रभसूरिजी	विनयसागरजी	३१	१८
चतुर्विंशतिजिननमस्कारकाव्यानि	-	शीलचन्द्रसूरिजी	१३	१९
चतुर्विंशतिजिनस्तवन	भुवनहिताचार्य[१]	विनयसागरजी	२५	५३
चतुर्विंशतिजिनस्तुति (वर्धमानाक्षरा)	लक्ष्मीकल्लोल गणि	विनयसागरजी	३४	१
चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र	-	सुयशचन्द्रविजयजी, सुजसचन्द्रविजयजी	४८	३५
चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र	दीप्तिविजयजी	सुयशचन्द्रविजयजी, सुजसचन्द्रविजयजी	४८	४०
चतुर्हारावलीचित्रस्तव - सवृत्ति	जयतिलकसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	२०	१
जिनकुशलसूरिछन्दः	ज्ञानतिलक	विनयसागरजी	४८	४८
जैनतीर्थावलीद्वात्रिंशिका	क्षमाकल्याण उपा.	सुयशचन्द्रविजयजी, सुजसचन्द्रविजयजी	४९	९८
तीर्थकरस्तवन	-	शीलचन्द्रसूरिजी	२०	९६
नन्दीश्वरादिस्तुतयः	-	रत्नकीर्तिविजयजी	१५	२७

(१) ३२.८९

नाभेयजिनस्तवन	यशोविजय उपा.	शीलचन्द्रसूरिजी	३	१२
नाभेयस्तवन	हीरसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	३	५
नेमिजिनस्तुति (रैवतकमण्डन)	ऋषिवर्धनसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४९	११५
नेमिजिनस्तोत्र (उज्जयन्तालङ्कार)	जिनपतिसूरिजी	विनयसागरजी	३१	१६
नेमिनाथस्तवन (नानाछन्दोमय)	-	विमलकीर्तिविजयी	२३	२४
नेमिनाथस्तोत्र	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	३२
नेमिराजीमतीवर्णन (मेघदूतरीत्या)	रविसागर गणि	शीलचन्द्रसूरिजी	२३	३५
पार्श्वजिनलघुस्तवन	रूपचन्द्र	शीलचन्द्रसूरिजी	११	६४
पार्श्वनाथ-महादण्डक-स्तुति	सहजकीर्ति उपा.	प्रद्युम्नसूरिजी	१२	८१
पार्श्वनाथगीत	चन्द्रोदय	जिनसेनविजयजी	१८	१०२
पार्श्वनाथफागुकाव्य (नवखण्डा)	आनन्दमाणिक्य	प्रद्युम्नसूरिजी	६	४३
पार्श्वनाथलघुस्तवन	-	धर्मकीर्तिविजयजी	७	८३
पार्श्वनाथस्तवन (मंगलपुरीय-नवपल्लव)	-	धुरन्धरविजयजी	८	८४
पार्श्वनाथस्तवन (मगसी-कुटुम्बनामगर्भित)	रविसागर	धुरन्धरविजयजी	८	८४
			२३	२०
पार्श्वनाथस्तुति (चारूपमण्डन)	-	पुण्यविजयजी	११	१
पार्श्वनाथस्तोत्र (करहेटक)	सोमतिलकसूरिजी	मुनिचन्द्रसूरिजी	१४	४२
पार्श्वनाथस्तोत्र (गवडी)	ज्ञानतिलक	विनयसागरजी	४८	४३

पार्श्वनाथस्तोत्र (तिमिरीपुरीश्वर)	श्रीवल्लभोपाध्याय	विनयसागरजी	२८	३३
पार्श्वनाथस्तोत्र (रतलामभूषण)	ज्ञानप्रमोद उपा.	विनयसागरजी	४०	३७
पार्श्वनाथस्तोत्र (शंखेश्वर)	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	६१
पार्श्वनाथस्तोत्र (सुन्दरीछन्द)	श्रीवल्लभोपाध्याय	विनयसागरजी	२८	२९
पार्श्वनाथस्तोत्र	रत्नसिंह	सुयशचन्द्रविजयजी, सुजसचन्द्रविजयजी	४३	४०
बन्धकौमुदी	नृसिंह कवि	शीलचन्द्रसूरिजी	७	१२
भारतीस्तोत्र	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	५१
महावीरजिनस्तोत्र (संसारदावा-पादपूर्ति)	ज्ञानसागरसूरिजी	अमृत पटेल	३८	२५
महावीरस्तोत्र (सुजैत्रपुरमण्डन)[१]	रत्नसिंह	सुयशचन्द्रविजयजी, सुजसचन्द्रविजयजी	४३	४३
मेदपाटतीर्थमाला	हरिकलश यति	विनयसागरजी	३७	३८
वीतरागस्तोत्र - सावचूरि (रघुवंश-पादपूर्ति)	रत्नसिंह	अमृत पटेल	३८	१७
वीरजिनस्तोत्र (सुखाशिकानामगर्भित)	नेमिसागर	धुरन्धरविजयजी	८	८६
			२३	२२
वीरस्तुति (चतुरर्थी-सावचूरि)	हीरसूरिजी	धुरन्धरविजयजी	११	६७

(१) ४५.१०६

शत्रुंजयचैत्यपरिपाटिकास्तोत्रम्	-	अरविन्दसूरिजी	२६	११६
शम्भवजिनस्तोत्र (पावकपर्वतमण्डन)	विवेकरत्नसूरि-शिष्य	शीलचन्द्रसूरिजी	११	६५
शान्तिजिनस्तोत्र (आनन्दानन्द-पादपूर्ति)	ज्ञानसागरसूरिजी	अमृत पटेल	३८	२८
शारदागीत	यशोविजय उपा.	शीलचन्द्रसूरिजी	१५	६६
सप्तदलं लेखकमलम्	लावण्यसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	१२	७१
समवसरणस्तोत्र	-	अरविन्दसूरिजी	१४	२७
समस्तजिनस्तुति (पद्धडीछन्द)	रूपचन्द्र	शीलचन्द्रसूरिजी	११	६३
सरस्वतीस्तोत्र[१]	-	रत्नकीर्तिविजयजी	५	२७
सरस्वतीस्तोत्र*	बप्पभट्टिसूरिजी	रत्नकीर्तिविजयजी	५	२४
सरस्वतीस्तोत्र	ज्ञानतिलक	विनयसागरजी	४८	४६
सर्वजिनस्तोत्र	रत्नसिंह	सुयशचन्द्रविजयजी, सुजसचन्द्रविजयजी	४३	४४
सीमन्धरजिनस्तवन[२]	सकलचन्द्र उपा.	शीलचन्द्रसूरिजी	३	१०
सुप्रभातं-स्तवन	-	शीलचन्द्रसूरिजी	२०	९७
सुविधिपार्श्वजिनस्तव (अपूर्ण)	यशोविजय उपा.	धुरन्धरविजयजी	३३	१

(१) १७.१६४ (२) १७.१६०

वर्णनात्मक (३२)

कृति	कर्ता	सम्पादक	अनु.	पृष्ठ
अनुमानमातृका-सावचूरि	-	कल्याणकीर्तिविजयजी	७	८५
अभयाभ्युदयमहाकाव्य	मुनिदेवसूरिजी	सुयशचन्द्रविजयजी, सुजसचन्द्रविजयजी	४६	१
अश्वधाटीकाव्य - सानुवाद	जगन्नाथ पण्डित	नीलांजना शाह	१८	५८
आत्मतत्त्वचिन्ताभावनाचूलिका	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	१४
आत्मानुशास्ति	रत्नसिंहसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४४	१६
आनन्दसमुच्चयः (योगशास्त्रम्)	समुच्चय	शीलचन्द्रसूरिजी	४३	१
कल्पसूत्रलेखनप्रशस्ति	मुनिसोम गणि	विनयसागरजी	४७	१७
चित्रकाव्यानि	-	धर्मकीर्तिविजयजी	३३	४७
ज्ञानभण्डारप्रशस्ति	-	प्रद्युम्नसूरिजी	११	६
दृष्टान्तशतक-१	-	धर्मकीर्तिविजयजी	१४	११
दृष्टान्तशतक-२	-	धर्मकीर्तिविजयजी	१४	१९
बीबीपुरस्थित-श्रीचिन्तामणिपार्श्वनाथ-चैत्यप्रशस्ति	सत्यसौभाग्य गणि	सुयशचन्द्रविजयजी, सुजसचन्द्रविजयजी	४५	१
भवनभूषण-भूषणभवनकाव्य (अपूर्ण)	साधुहर्ष उपा.	भुवनचन्द्रजी	५० (१)	४३
भावप्रदीपः (प्रश्नोत्तरकाव्य)	हेमरत्न	विनयसागरजी	३९	७६

मातृकाप्रकरण	अक्षयचन्द्र उपा.	शीलचन्द्रसूरिजी, हरिवल्लभ भायाणी	१२	१
मातृकाश्लोकमाला	श्रीवल्लभोपाध्याय	विनयसागरजी	२६	१०१
राणभूमीशवंशप्रकाशः	मेघविजय उपा.	कल्याणकीर्तिविजयजी	२५	४४
लघुकर्मविपाक - सस्तबक	-	धर्मकीर्तिविजयजी	८	८९
विज्ञप्तिकालेखः	धनहर्ष-शिष्य	शीलचन्द्रसूरिजी	१६	१
विज्ञप्तिपत्री (महादण्डकाख्या)	समयसुन्दर उपा.	विनयसागरजी	३५	५
विज्ञप्तिपत्र	विनयवर्धन	रत्नकीर्तिविजयजी	१४	३१
षड्दर्शनपरिक्रम[१] (गुर्जर-अवचूरि सह)*	जिनदत्तसूरिजी	कल्याणकीर्तिविजयजी	१४	१
संशयगरलजांगुलीनाममाला	महेश्वरकवि	शीलचन्द्रसूरिजी	१०	१२
सारस्वतोल्लासकाव्य[२]	रत्नमण्डन	शीलचन्द्रसूरिजी	१५	१
सिद्धमातृकाप्रकरण[३]	सिद्धसेनसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी, धुरन्धरविजयजी	२५	१
सुभाषितसंचय	-	शीलचन्द्रसूरिजी	२८	१
सूक्तमाला	नरेन्द्रप्रभसूरिजी	अमृत पटेल	४०	२१
सूक्तावली	-	नीलांजना शाह	१४	९२

१) १८.२८१ २) १६.२४० ३) २८.९८

सेवालेखः	मेघविजय उपा.	शीलचन्द्रसूरिजी	३३	२८
स्याद्वादकलिका*	राजशेखरसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४१	२४
हयाटाखाटकाव्य - सटीक	-	कल्याणकीर्तिविजयजी	३७	१६
हाल्लारदेशचरित्र	-	धर्मकीर्तिविजयजी	११	३७

आदिपदानुक्रम (१०१)

आदिपद	कृतिनाम	अनु.	पृष्ठ
...बमानमेखलाभिरामदाम-	सुविधिपार्श्वजिनस्तव (अपूर्ण)	३३	१
अङ्कादृतक्षितिजमङ्कानभिज्ञ-	अश्वधाटीकाव्य-सानुवाद	१८	५८
अथाऽभ्यर्च्य विधातारम्	ऋषभजिनस्तोत्र-सावचूरि (रघुवंश-पादपूर्ति)	३८	११
अन्तःकुण्डलिनिप्रसुप्तभुजगाकार-	सरस्वतीस्तोत्र	५	२४
अब्धिर्लब्धिकदम्बकस्य	गौतमगणधरस्तव	३१	१८
अविनाभूताल्लिङ्गाद्विज्ञानम्	अनुमानमातृका-सावचूरि	७	८५
अस्त्यत्र भूयःशिखरा-	गिरिनारवर्णन (कुमारसम्भवरीत्या)	२३	३३
अहं विभुर्विश्वशिरोवतंस-	सिद्धमातृकाप्रकरण	२५	१
आनन्दनम्रविबुधाधिपमौलिकोटी-	पार्श्वनाथस्तोत्र (रतलामभूषण)	४०	३७
कल्याणकेलिसवनाय नमो	पार्श्वनाथस्तोत्र	४३	४०
कल्याणवल्लीवनवारिवाहम्	महावीरजिनस्तोत्र (संसारदावा-पादपूर्ति)	३८	२५
कल्याणशस्यपाथोदम्	आत्मतत्त्वचिन्ताभावनाचूलिका	४४	१४

कश्चिज्जनो लज्जितहृज्जडिम्ना	सारस्वतोल्लासकाव्य	१५	१
कश्चित् प्रत्यानयति मनुजो	नेमिराजीमतीवर्णन (मेघदूतरीत्या)	२३	३५
कोऽयं नाथ ! जिनो भवेत्तव	सूक्तावली	१४	९२
चञ्चच्चामीकराभप्रवरवरतनु-	शान्तिजिनस्तोत्र (आनन्दानन्द-पादपूर्ति)	३८	२८
चतुर्विंशतिं तीर्थनाथान् प्रणम्य	मेदपाटतीर्थमाला	३७	३८
चिदानन्दं नत्वा विशदविधिना-	आनन्दलहरी (सौन्दर्यलहरी-पादपूर्ति)	४३	४६
जय जनतारक हे ! जगदाधारक	पार्श्वजिनलघुस्तवन	११	६४
जय जय जनतारक हे जगदाधारक	पार्श्वनाथगीत	१८	१०२
जय जय वागीशे जयदात्रि	सरस्वतीस्तोत्र	४८	४६
जय वीतमोह ! जय वीतदोष !	समस्तजिनस्तुति	११	६३
जयकरजन्तुकृपालय	आदिनाथस्तुति (कुटुम्बनामगर्भित)	८	८८
		२३	१८
जयति विजयलक्ष्मीवासवेस्मा(वेश्मा)-	राणभूमीशवंशप्रकाशः	२५	४४
जयसि साकर मोदक हेशसी	वीरजिनस्तोत्र (सुखाशिकानामगर्भित)	८	८६
		२३	२२
जिनकुशलं सूरीशम्	जिनकुशलसूरिछन्दः	४८	४८
जिनवरेन्द्र ! वरेन्द्रकृतस्तुते !	पार्श्वनाथस्तोत्र	२८	२९
जैनं मैमांसकं बौद्धं साङ्ख्यम्	षड्दर्शनपरिक्रम (गूर्जर-अवचूरि सह)	१४	१

तमालनीलच्छविपिच्छिलाङ्गः	पार्श्वनाथस्तुति (चारूपमण्डन)	११	१
तीर्थेश्वरश्रीयुतविद्यमान-	जैनतीर्थावलीद्वात्रिंशिका	४९	९८
तुभ्यं नमः शुभसुजैत्रपुरावतार !	महावीरस्तोत्र (सुजैत्रपुर-मण्डन)	४३	४३
तेजोऽत्युग्रमपि द्रव्याभावे	दृष्टान्तशतक - १	१४	११
त्रिभुवनप्रभुताभवनक्रमो	नाभेयस्तवन	३	५
देवा भाग्यवतां पक्षे	दृष्टान्तशतक - २	१४	१९
धर्ममहारथसारथिसारम्	पार्श्वनाथलघुस्तवन	७	८३
नन्दीश्वरद्वीपमितैर्जिनानाम्	नन्दीश्वरादिस्तुतयः	१५	२७
नमस्कृत्य सरस्वत्याः	हाल्लारदेशचरित्र	११	३७
नमस्तस्मै नृहरये	बन्धकौमुदी	७	१२
नमस्ते सदानन्दसन्दोहकारिन् !	सर्वजिनस्तोत्र	४३	४४
नम्रेन्द्रचन्द्र ! कृतभद्र !	आदिनाथस्तोत्र (भक्तामर-पादपूर्ति)	५० (१)	३७
नम्रेन्द्रमण्डलमणीमयमौलिमाला-	शत्रुंजयचैत्यपरिपाटिकास्तोत्र	२६	११६
नाभिनामनरनाथचन्दनम्	आदिनाथस्तवन (अकारान्तपदात्मक)	७	८१
निःप्रत्यूहमुपासतां कृतधियः	बीबीपुरस्थित-चिन्तामणिपार्श्वनाथ-चैत्यप्रशस्ति	४५	१
पुरा पुरे राजगृहे प्रसेन-	अभयाभ्युदयमहाकाव्य	४६	१
प्रणमताऽनर्गलज्ञानसञ्जीविनीम्	शारदागीत	१५	६६
प्रणिपत्य परं ज्योति-र्नाना-	सूक्तमाला	४०	२१
प्रतिजन्म भवेत्तेषाम्	लघुकर्मविपाक-सस्तबक	८	८९

प्रथमजिनवर ! प्रथमजिनवर !	चतुर्विंशतिजिननमस्कारकाव्यानि	१३	१९
प्रबोधमाधातुमशाब्दिकानाम्	संशयगरलजांगुलीनाममाला	१०	१२
प्राकृतः संस्कृतो वाऽपि	आत्मानुशास्ति	४४	१६
बुद्ध्यर्थोऽयमभियोगः, प्रभुपाद-	मातृकाप्रकरण	१२	१
ब्रह्माण्डमण्डलविबोधविरोचनाय	सीमन्धरजिनस्तवन	३	१०
भक्तामरप्रभुशिरोमणिमौलिमाला-	ऋषभदेवस्तोत्र-सटिप्पण (भक्तामर-पादपूर्ति)	३८	१९
महाप्रातिहार्यश्रिया शोभमानम्	शम्भवजिनस्तोत्र (पावकपर्वतमण्डन)	११	६५
मूर्तयस्ते क्व नेक्ष्यन्ते श्रीनेमे !	नेमिनाथस्तोत्र	४४	३२
मेऽघं । स्याऽर्हन् । नोऽजाः ।	चतुर्विंशतिजिनस्तुति (वर्धमानाक्षरा)	३४	१
यः सन्तापं गाङ्गं सन्त्यन्य-	सुभाषितसंचय	२८	१
यत्र वित्रासमायान्ति तेजांसि	आनन्दसमुच्चयः (योगशास्त्रम्)	४३	१
यन्नामस्मृतिरप्यशेष-	भारतीस्तोत्र	४४	५१
यस्त्रैलोक्यगतं ततं गुरु-	पार्श्वनाथस्तोत्र (शंखेश्वर)	४४	६१
युगादौ जगदुद्धर्तुं, यौ युग्म-	चतुर्विंशतिजिनस्तवन	२५	५३
रम्यं ते वरनाम वामवदने	भवनभूषण-भूषणभवनकाव्य (अपूर्ण)	५० (१)	४३
लक्ष्मीवन् कृतकु(कू)रसू रणदही-	चित्रकाव्यानि	३३	४७
लोकान्तरसुखं पुण्यम्	वीतरागस्तोत्र-सावचूरि (रघुवंश-पादपूर्ति)	३८	१७
वाग् प्रसन्नमुखी भूया [त्]	ऋषभदेववंशवर्णन (रघुवंशरीत्या)	२३	४०
विज्ञानपारगत ! बालकवीरमान-	वीरस्तुति (चतुरर्थी)	११	६७

विदितनिखिलभावसद्भूतभूत-	पार्श्वनाथ-महादण्डक-स्तुति	१२	८१	
विपुलमङ्गल-मण्डलदायकम्	पार्श्वनाथफागुकाव्य (नवखण्डा)	६	४३	
विश्वप्रभुं प्रणतनाकिकिरीटरत्न-	आदिनाथस्तोत्र (कोट्टदुर्गमण्डन)	४०	३३	
व्याख्यास्तु यस्य रदनद्युतयोऽसिता-	नेमिजिनस्तोत्र (उज्जयन्तालङ्कार)	३१	१६	
शाश्वतलक्ष्मीवल्लीदेवम्	पार्श्वनाथस्तोत्र (गवडी)	४८	४३	
श्रीदेवार्चितं देवं, सेव्यम्	चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र	४८	३५	
श्रीनवपल्लवपार्श्वजिनेशम्	पार्श्वनाथस्तवन (मंगलपुरीय-नवपल्लव)	८	८४	
श्रीनाभिनन्दन जिनेषु कुरुष्व शान्ते	गुरुस्तुति	३९	२३	
श्रीनाभिनन्दनजिनोऽजितसम्भवेशम्	सुप्रभातं-स्तवन	२०	९७	
श्रीनाभिसूनो ! जिनसार्वभौम !	चतुर्हारावलीचित्रस्तव-सवृत्ति	२०	१	
श्रीनिर्वृतिकमलदृशः करकमल-	कमलपंचशतिकास्तोत्र-सटिप्पण	१५	३२	
श्रीपार्श्वनाथजिनपं तमहं स्तवीमि	पार्श्वनाथस्तोत्र (तिमिरीपुरीश्वर)	२८	३३	
श्रीमगसीपुरमण्डनशम्भो	पार्श्वनाथस्तवन (मगसी-कुटुम्बनामगर्भित)	८	८४	
		२३	२०	
श्रीमते विश्वविश्वैकभास्वते शाश्वत-	भावप्रदीपः (प्रश्नोत्तरकाव्यम्)	३९	७६	
श्रीमद्यत्पादजाताः प्रबलबलभृतः	गुरुवर्णन (जिनशतकमहाकाव्य-प्रथमपरिच्छेदाद्यपद)	२३	४२	
श्रीमन्महे महेभ्यश्रेणिसमृद्धे	ज्ञानभण्डारप्रशस्ति	११	६	
श्रीविमलाचलमण्डण गतदूषण ए	नाभेयजिनस्तवन	३	१२	

श्रीशान्तिं प्रणिपत्य नित्यमनघम्	मातृकाश्लोकमाला	२६	१०१
श्रीशारदां सद्वरदां प्रणम्य	चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र	४८	४०
श्रीशैवेयं शिवश्रीदं, छन्दोभिः	नेमिनाथस्तवन (नानाछन्दोमय)	२३	२४
श्रीसंघे वर साकर	आदिनाथस्तवन (सुखभक्षिकानामगर्भित)	८	८५
		२३	२१
षड्द्रव्यज्ञं जिनं नत्वा	स्याद्वादकलिका	४१	२४
सकलविमलशाश्वतस्वस्ति-	विज्ञप्तिपत्री (महादण्डकाख्या)	३५	५
सत्केवलज्ञानमहाप्रभाभिः	समवसरणस्तोत्र	१४	२७
समुल्लसद्भक्तिसुराः	नेमिजिनस्तुति (रैवतकमण्डन)	४९	११५
सर्वज्ञवाणी जयतात्	सरस्वतीस्तोत्र	५	२७
सुपर्ववेलिवर्धिष्णु-	कल्पसूत्रलेखनप्रशस्ति	४७	१७
सुरकिन्नरनागनरेन्द्रनुतम्	तीर्थकरस्तवन	२०	९६
स्वस्ति श्रीः प्रसभं सभासु भगवत्-	सेवालेखः	३३	२८
स्वस्ति श्रीभृगुकच्छमच्छनगरम्	सप्तदलं लेखकमलम्	१२	७१
स्वस्ति श्रीमति यत्र मित्रमहसि	ऋषभशतक	२९	१
स्वस्ति श्रीशं देवाधीशम्	विज्ञप्तिपत्र	१४	३१
स्वस्तिश्रीकरिणी यदीयविलसत्-	विज्ञप्तिकालेखः	१६	१
स्वामिन् ! नमन्नर-सुरा-ऽसुरमौलि-	पार्श्वनाथस्तोत्र (करहेटक)	१४	४२
हयाटाखाट-सिंहाटागोटाजाटा-	हयाटाखाटकाव्य-सटीक	३७	१६

४. संस्कृत-गद्य-रचना (३४)

नाम	कर्ता	सम्पादक	अनु.	पृष्ठ
अर्हत्प्रवचनसूत्र-सविवरण	-	शीलचन्द्रसूरिजी	५	८८
आत्मसंवादः	यशोविजय उपा.	शीलचन्द्रसूरिजी	२०	३०
ऋषभतर्पण	-	शीलचन्द्रसूरिजी	२१	१०
कर्मप्रकृतिसंक्षेपविवरण	यशोविजय उपा.	शीलचन्द्रसूरिजी	२२	४
गायत्रीमन्त्रवृत्ति	शुभतिलक उपा.	रत्नकीर्तिविजयजी	१७	१७३
चतुर्दशस्वरस्थापनवादस्थलम्	श्रीवल्लभोपाध्याय	विनयसागरजी	४५	३०
जातिविवृत्तिः	गुणविजयजी	शीलचन्द्रसूरिजी	३४	२३
जिनस्तुति	-	जगच्चन्द्रसूरिजी	८	१२५
जैनसन्ध्याविधि	-	जिनसेनविजयजी	१७	१६६
न्यायसिद्धान्तमंजरीटिप्पनक	सिद्धिचन्द्र उपा.	कल्याणकीर्तिविजयजी	१४	५०
पंचसूत्रावचूरि	मुनिसुन्दरसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	११	४७
पत्र-खरडो	यशोविजय उपा.	शीलचन्द्रसूरिजी	६	६५
परीहार्यमीमांसा	नेमिसूरिजी, सागरानन्दसूरिजी	-	४१	१२
प्रणम्यपदसमाधानम्	सूरचन्द्र उपा.	विनयसागरजी	३३	६९
प्रमाणसारः[१]	मुनीश्वरसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	२५	१८
बृहच्छान्तिस्तोत्र	शान्तिसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	१५	९४

(१) २७.६७

भक्तामरस्तववृत्ति	शान्तिसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	५० (१)	१
भक्तामरस्तवसुखबोधिकावृत्ति	-	शीलचन्द्रसूरिजी	५० (१)	२४
मङ्गलवादः	सिद्धिचन्द्र उपा.	शीलचन्द्रसूरिजी	१०	१
मूर्तिपूजायुक्तिबिन्दुः	विजयोदयसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	३१	१
मूर्तिमन्तव्यमीमांसा	विजयोदयसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	३१	७
मेघदूतखण्डना (अपूर्ण)	मानसागर पण्डित	शीलचन्द्रसूरिजी	३२	३८
मेघदूतप्रथमपद्यस्याऽभिनवत्रयोऽर्थाः	समयसुन्दर उपा.	विनयसागरजी	३२	२७
रघुवंशद्वितीयसर्गटीका	विजयनेमिसूरिजी	धर्मकीर्तिविजयजी	२६	१
ललितविस्तरः - लिपिशालासन्दर्शनपरिवर्तः-सानुवाद	-	प्रीतम सिंघवी	१६	२१७
विबुधपदविज्ञप्ति	हीरसूरिजी	महाबोधिविजयजी	५	३९
शत्रुंजययात्रावृत्तान्त	सोमतिलकसूरिजी	प्रद्युम्नसूरिजी	१०	१०
शब्दसंचयः	-	धर्मकीर्तिविजयजी	४९	१
शब्दार्थचन्द्रिका	हंसविजयजी	धर्मकीर्तिविजयजी	५	१२
सप्तनयविवरण	-	शीलचन्द्रसूरिजी	२१	१
सिद्धचक्रयन्त्रोद्धारविधिव्याख्या	चन्द्रकीर्तिसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	३६	२३
स्तम्भनपार्श्वनाथद्वात्रिंशत्प्रबन्धोद्धारः	-	शीलचन्द्रसूरिजी	९	६१
स्तम्भनाधीशप्रबन्धसंग्रह	मेरुतुंगाचार्य	शीलचन्द्रसूरिजी	९	१
हर्मन जेकोबीना पत्रनो उत्तर	नेमिसूरिजी, सागरान्दसूरिजी	-	४१	२२
हर्मन जेकोबीनो पत्र	हर्मन जेकोबी	-	४१	२०

आदिवाक्य

- अर्हत्प्रवचनसूत्र-सविवरण ५.८८

  अथातो अर्हत्प्रवचनं व्याख्यास्यामः । तद् यथा ।

- आत्मसंवादः २०.३०

  इह खलु 'ज्ञान-क्रियाभ्यां मोक्षः' इति जैनाः ।

- ऋषभतर्पण २१.१०

  ॐ नमः श्रीपरमात्मने आदिपुरुषाय....

- कर्मप्रकृतिसंक्षेपविवरण २२.४

  ऐन्द्रश्रेणिनतं नत्वा ...। सिद्धं सिद्धार्थसुतम्...

- गायत्रीमन्त्रवृत्तिः १७.१७३

  चिदात्मदर्शसङ्क्रान्त-लोकालोकविहायसे ।

- चतुर्दशस्वरस्थापनवादस्थलम् ४५.३०

  श्रीसिद्धी भवतान्तरां भगवतीभास्वत्प्रसादोदयाद्....

- जातिविवृतिः ३४.२३

  श्रीमहावीरमर्हन्तं प्रणिपत्य विधीयते ।

- जिनस्तुति ८.१२५

  कु ख गों घ ङ च छो जा

- जैनसन्ध्याविधि १७.१६६

  अथ सन्ध्या उपदेश - आचमनं - ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः स्वाहा ।

- न्यायसिद्धान्तमंजरीटिप्पनक १४.५०

  श्रीसर्वज्ञं नमस्कृत्य, सिद्धिचन्द्रेण धीमता ।

- पंचसूत्रावचूरिः ११.४७

  इह पापप्रतिघात-गुणबीजाधानादिपञ्चसूत्र्याः क्रमोऽयम्-

- पत्र-खरडो ६.६५

  स्वस्ति श्रीमद् यदीयक्रमकमल....

- परीहार्यमीमांसा ४१.१२

  येनाऽक्षालि सुभव्यमानसतमोलेपः सुधासोदरैः....

- प्रणम्यपदसमाधानम् ३३.६९
  प्रणम्य परमाधीशं, सूरचन्द्रेण साधुना ।
- प्रमाणसारः २५.१८
  ब्रूमः श्रिये तं वरिवस्य सार्वं रहस्यमुद्दिश्य विशेषदृष्टीन् ।
- बृहच्छान्तिस्तोत्र १५.९४
  भो भो भव्यलोका इह हि भारते समस्ततीर्थकृतां.....
- भक्तामर-स्तववृत्ति ५०(१).१
  वृत्तिं भक्तामरादीनां स्तवानां वच्मि यथोदितम् ।
- भक्तामरस्तवसुखबोधिकावृत्ति ५०(१).२४
  भक्तामर-। यः समिति । अस्य व्याख्या-किलेत्यव्ययं पदं...
- मङ्गलवादः १०.१
  शङ्खेश्वरपुराधीशं श्रेयोवल्लीनवाम्बुदम् ।
- मूर्त्तिपूजायुक्तिबिन्दुः ३१.१
  प्रणम्य श्रीमहावीरं नेमिसूरिं गुरुं तथा ।
- मूर्तिमन्तव्यमीमांसा ३१.७
  प्रणम्य श्रीमहावीरं नेमिसूरिं गुरुं तथा ।
- मेघदूतखण्डना (अपूर्ण) ३२.३८
  प्रसादो रविवद्यस्यास्तमःसंहारकारणे ।
- मेघदूतप्रथमपद्यस्याऽभिनवत्रयोऽर्थाः ३२.२७
  कश्चित्कान्ताविरह...। श्रीकालिदासकृतमेघदूतकाव्यप्रथमवृत्तस्य...।
- रघुवंशद्वितीयसर्गटीका २६.१
  अथ प्रजानामधिपः.... । अथेति । अथ कुलपतिनिर्दिष्टपर्णशालायां....
- ललितविस्तरः-लिपिशालासन्दर्शनपरिवर्तः - सानुवाद १६.२१७
  देवदेवो ह्यतिदेवः, सर्वदेवोत्तमो विभुः ।
- विबुधपदविज्ञप्ति ५.३९
  संवत् १६४० वर्षे पौषासित १० गुरौ श्रीहीरविजयसूरिभिर्लिख्यते ।
- शत्रुंजययात्रावृत्तान्त १०.१०
  एकदा श्रीतपागच्छाधिराज श्रीसोमतिलकसूरयो महता श्रीसंघेन समं....

- शब्दसंचयः ४९.१
  शब्दाम्भोधिसमुल्लास-रसिकं श्रीजिनं सदा ।
- शब्दार्थचन्द्रिका ५.१२
  ॐ नमः सिद्धिसन्तान-दायिने परमात्मने ।
- सप्तनयविवरण २१.१
  स्यात्कारमुद्रिता भावा, नित्यानित्यस्वभावकाः ।
- सिद्धचक्रयन्त्रोद्धारविधिव्याख्या ३६.२३
  गयणमित्यादि । अत्र गगनादिसंज्ञा मन्त्र-
- स्तम्भनपार्श्वनाथद्वात्रिंशत्प्रबन्धोद्धारः ९.६१
  श्रीस्तम्भनपार्श्वस्य मूर्तिः । शक्रेण कारिता ।
- स्तम्भनाधीशप्रबन्धसंग्रह ९.१
  सर्वभीतिविनाशार्थं, सर्वसौख्यैककारणम् ।
- हर्मन जेकोबीना पत्रनो उत्तर ४१.२२
  राजनगरतो मुनिनेमविजयानन्दसागराभ्यां....
- हर्मन जेकोबीनो पत्र ४१.२०
  श्री श्री श्री १०५ श्रीमुनिनेमिविजयानन्दसागरावाचार्यशिरोमणी.....

५. उत्तरकालीनअपभ्रंश-गुजराती व. भाषानी पद्यरचना (१७९)

कृति	कर्ता	सम्पादक	अनु.	पृष्ठ
अनन्तहंसगणि-स्वाध्याय	कनकमाणिक्य गणि	विनयसागर	४२	४२
अपभ्रंशदोहा	-	भुवनचन्द्रजी	६	६८
अभयकुमारचौपाई	कीर्तिसुन्दर गणि	धर्मकीर्तिविजयजी	४७	२६
अभयकुमारस्वाध्याय	मानदत्त	समयप्रज्ञाश्रीजी	३५	५९
अमृतधुन	-	शीलचन्द्रसूरिजी	२०	९८
अरणकस्वाध्याय	मेघा	समयप्रज्ञाश्रीजी	३५	६१
आचार्यजीना बार मसवाडा	गंगदास	सुयशचन्द्रविजयजी, सुजसचन्द्रविजयजी	४९	१०८
आदिनाथ-बाललीला	-	शीलचन्द्रसूरिजी	४०	३९
आदिनाथवीनती-पूजा	अनन्तहंस	रसीला कडीआ	२७	६३
आदिनाथवीनती	-	रसीला कडीआ	२९	५८
आरती	मेघा	समयप्रज्ञाश्रीजी	३५	६१
आराधनाध्यांनभास	मुनीचन्द्रनाथ	शीलचन्द्रसूरिजी	३५	२५
उपदेशकुशलकुलक	श्रीब्रह्म	दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी	२४	७९
ऋषभदेवस्तुति१ (शत्रुंजय)	विजयतिलकसूरिजी	भुवनचन्द्रजी	५	४०

कलयुगस्वाध्याय	मानदत्त	समयप्रज्ञाश्रीजी	३५	६५
कृष्ण-बलभद्र-गीत	-	रसीला कडीआ	२४	९८
खिमापंचावन्नी	लब्धिविजयजी	कल्याणकीर्तिविजयजी	२४	४२
गांगजीऋषिभास	शिवजी ऋषि	सुयशचन्द्रविजयजी, सुजसचन्द्रविजयजी	४३	४९
गीत	मुनीचन्द्रनाथ	शीलचन्द्रसूरिजी	३५	२९
गूढार्थ-दोहाओ	-	निरंजन राज्यगुरु	५० (२)	५
गौतमगणधर-भास	-	जिनसेनविजयजी	९	७६
गौतमगणधर-भास	-	जिनसेनविजयजी	१९	१३४
गौतमस्वामिच्छन्दांसि	मेरुनन्दन गणि	शीलचन्द्रसूरिजी	६	५६
गौतमस्वामीनी सज्झाय	लक्ष्मीविजयजी	धर्मकीर्तिविजयजी	१८	१०३
गौतमस्वामीनुं स्तवन*	धीरविजयजी	जिनसेनविजयजी	१९	१३२
गौतमस्वामीरास	रत्नशेखरसूरिजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४	५६
गौतमस्वामीरास	रायचन्द ऋषि	शीलचन्द्रसूरिजी	४९	११९
गौतमस्वामीरास	शान्तिदास	शीलचन्द्रसूरिजी	७	५१
चतुर्दशपूर्वपूजा	चारित्रनन्दी	शीलचन्द्रसूरिजी	३५	३१
चोत्रीसअतिशय-स्तवन	कान्ह मुनि	महाबोधिविजयजी	३५	४९
चोवीशजिननमस्कार (अष्टमीमाहात्म्य)	यशोविजयजी	शीलचन्द्रसूरिजी	५	४४

चोवीस जिनगीतो	तत्त्वविजयजी	जिनसेनविजयजी	११	११
जगजीवनऋषिभास	महानन्द ऋषि	सुयशचन्द्रविजयजी, सुजसचन्द्रविजयजी	४३	५३
जगजीवनऋषिभास	महानन्द ऋषि	सुयशचन्द्रविजयजी, सुजसचन्द्रविजयजी	४३	५४
जगडूसाहछन्द	-	कान्तिभाई शाह	१०	६८
जयकेसरीसूरिगीत	हरसूर	विनयसागरजी	४३	६७
जयकेसरीसूरिभास	-	विनयसागरजी	४३	६३
जयकेसरीसूरिभास	आस कवि	विनयसागरजी	४३	६७
जयकेसरीसूरिभास	हरसूर	विनयसागरजी	४३	६८
जिनप्रतिमापूजा-स्वाध्याय	मानदत्त	समयप्रज्ञाश्रीजी	३५	६२
जिनसागरसूरिगीतानि (१५ गीत)	हर्षनन्दन उपा.	विनयसागरजी	५० (२)	२५
जिनस्तवना (विविधनामगुम्फित)	रामविजयजी	कल्याणकीर्तिविजयजी	३३	२७
जिनानां पंचकल्याणकानि (दिगम्बरमतानुसारी)	रूपचन्द्रजी	शीलचन्द्रसूरिजी	४०	४४
जीभसज्झाय	लावण्यसमय	कल्याणकीर्तिविजयजी	२४	५५
जोगमायानो सलोको	उदयरत्नजी	निरंजन राज्यगुरु	३२	१
तपागच्छगुर्वावली-स्वाध्याय	विनयसुन्दर	भुवनचन्द्रजी	३९	२०
तीर्थस्थापनाभास	मुनीचन्द्रनाथ	शीलचन्द्रसूरिजी	३५	२४

तेजबाई-व्रतग्रहण-सज्झाय	देवचन्द्र मुनि	सुयशचन्द्रविजयजी, सुजसचन्द्रविजयजी	५० (१)	१०१
त्रणचउवीसी-विहरमाणजिनस्तवन	लक्ष्मीसागरसूरि-शिष्य	कल्याणकीर्तिविजयजी	५	४७
त्रणमित्रउपनय-सज्झाय	नयसुन्दर उपा.	कल्याणकीर्तिविजयजी	२४	५८
त्रम्बावती-तीर्थमाल (सूचि, निष्कर्ष व. साथे)	ऋषभदास	भुवनचन्द्रजी	८	६२
दशार्णभद्रराजर्षि-श्लोक	गुणविजयजी	कल्याणकीर्तिविजयजी	२४	६५
दानसूरिभास	भीम कवि	विनयसागर	४२	४६
दामन्नककुलपुत्रकरास	ज्ञानधर्म	कल्पना शेठ	१२	४९
देवसूरिभास	सिद्धिविजयजी	विनयसागरजी	४३	५८
देवसूरिभास	सिद्धिविजयजी	विनयसागरजी	४३	६१
दोधकबावनी	जशराज	दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी	३५	५३
धरणविहार-चतुर्मुखस्तव	विशालमूर्ति-शिष्य	विनयसागर	४५	५८
धर्मसूरिबारमासा	-	रमणीक शाह	२	६९
नवगीतिका (९ गीतो)	मेरु मुनि	भुवनचन्द्रजी	४५	४४
नारीस्वरूपप्ररूपण-स्वाध्याय	ऋद्धिविजयजी	कल्याणकीर्तिविजयजी	२४	४७
निजआराधभावनाभास	मुनीचन्द्रनाथ	शीलचन्द्रसूरिजी	३५	२७
निशालगरणुं	-	धर्मकीर्तिविजयजी	१५	६८
निह्नवविचारसज्झाय	सुकवि	कल्याणकीर्तिविजयजी	२४	५६

नेम-राजुल-लेख	रूपविजयजी	रसीला कडीआ	२६	११९
नेम-राजुलना बारमास	विजयशेखर उपा.	समयप्रज्ञाश्रीजी	४७	५७
नेमगीत	विजयशेखर उपा.	समयप्रज्ञाश्रीजी	४७	६२
नेमनाथगीत (ऊना)	विनयचन्द	शीलचन्द्रसूरिजी	१५	९२
नेमनाथगीत (गिरनार)	विनयचन्द	शीलचन्द्रसूरिजी	१५	९१
नेमिनाथभास	सिद्धिविजयजी	विनयसागर	४२	३९
नेमिनाथभास	सिद्धिविजयजी	विनयसागर	४२	४१
पद	मुनीचन्द्रनाथ	शीलचन्द्रसूरिजी	३५	२९
पन्नरतिथि (आगमसारउद्धार)	मुनीचन्द्रनाथ	शीलचन्द्रसूरिजी	२९	२३
पाण्डवचरित्र-बालावबोध-१	मेरुरत्नउपाध्याय-शिष्य	हरिवल्लभ भायाणी	४	६८
पाण्डवचरित्र-बालावबोध-२	मेरुरत्नउपाध्याय-शिष्य	हरिवल्लभ भायाणी	६	१०१
पार्श्वगीत (चिन्तामणि)	मानदत्त	समयप्रज्ञाश्रीजी	३५	६३
पार्श्वजिनब्रह्मस्तवन	मुनीचन्द्रनाथ	शीलचन्द्रसूरिजी	३५	३०
पार्श्वनाथगीत (अजारा)	विनयचन्द	शीलचन्द्रसूरिजी	१५	९०
पार्श्वनाथगीत (नवपल्लव-मंगलपुर)	विनयचन्द	शीलचन्द्रसूरिजी	१५	९१
पार्श्वनाथछन्द (अन्तरीक)	भावविजय उपा.	रसीला कडीआ	२९	६४
पार्श्वनाथप्रतिष्ठा-स्तवन (चिन्तामणि-कोठारीपोल)	विवेकविजय-शिष्य	रसीला कडीआ	२४	१०२

पार्श्वनाथस्तवन (गोडीजी-उर्दूभाषा)	मोहनविजय यति	भुवनचन्द्रजी	७	८९
पार्श्वनाथस्तवन (गोडीजी-उर्दूभाषा)	मोहनविजय यति	भुवनचन्द्रजी	७	९३
पार्श्वनाथस्तवन (चिन्तामणि-कोठारीपोल)	मुनिचन्द्रसागरजी	रसीला कडीआ	२३	६०
पार्श्वनाथस्तवन (शंखेश्वर-उर्दूभाषा)	नयप्रमोद	भुवनचन्द्रजी	७	९५
पार्श्वनाथस्तवन (शंखेश्वर-श्लोकबन्ध)	गुणविजयजी	कल्याणकीर्तिविजयजी	२४	६८
पार्श्वनाथस्तोत्र (अजपुर)	धर्ममंगल-शिष्य	शीलचन्द्रसूरिजी	७	४३
पार्श्वनाथस्तोत्र (अठोतरसो नामें)	सहजकीर्ति उपा.	भुवनचन्द्रजी	२४	४
पिस्तालीसआगम-पूजा	उत्तमविजयजी	शीलचन्द्रसूरिजी	१५	७६
पुण्यबत्रीसी	-	भुवनचन्द्रजी	५० (२)	१
पुष्पमालाचिंतवणी[१]	-	शीलचन्द्रसूरिजी	४८	५६
प्रमोदचन्द्रभास	करमसीह	विनयसागर	३०	११
बलदेवमुनिनी सज्झाय	-	रसीला कडीआ	२३	५७
बलभद्रऋषिसज्झाय	सालिग श्रावक	कल्याणकीर्तिविजयजी	२४	४९
बारभावनासज्झाय	जयवन्तसूरिजी	जयन्त कोठारी	१७	१४२
बारभावना	आनन्दघन	शीलचन्द्रसूरिजी	३५	१५
भवस्थितिस्तवन	लक्ष्मीमूर्ति	कान्तिभाई शाह	२८	४२
भाणवडनगर-प्रतिष्ठा-स्तवन	केसर पण्डित	रसीला कडीआ	२४	९६

(१) ४९.१४१

भावलक्ष्मीसाध्वीजी-धुलबन्ध	मुकुन्द मुनि	सुयशचन्द्रविजयजी, सुजसचन्द्रविजयजी	५० (२)	३६
भीमछन्द	बिल्ह कवि	भंवरलाल नाहटा	१४	४८
मल्लिनाथनो रास	ऋषभदास	दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी	५० (१)	१११
महावीरजिनस्तवन	ऋषभदास	शीलचन्द्रसूरिजी	२६	१२२
महावीरपारणा-स्तवन	माल मुनि	सुयशचन्द्रविजयजी, सुजसचन्द्रविजयजी	४७	५३
माहाज्ञांनआराधभास	मुनीचन्द्रनाथ	शीलचन्द्रसूरिजी	३५	२६
माहापर्मपदसिधआराधनाभास	मुनीचन्द्रनाथ	शीलचन्द्रसूरिजी	३५	२८
मुनिचन्द्रसूरिगुरुगुण-गहुंली	-	प्रद्युम्नसूरिजी	२५	७५
मुनिवरसुरवेली	सकलचन्द्र उपा.	कल्याणकीर्तिविजयजी	१५	५२
मेघकुमारगीत	पूनपाल	रसीला कडीआ	२७	५८
मेघागणिनिर्वाणभास (अपूर्ण)	विमलहंस गणि	विनयसागरजी	४९	१२४
मेघागणिनिर्वाणभास	विमलहंस गणि	विनयसागरजी	४९	१२२
मेवाडको कवित	जिनेन्द्र मुनि	शीलचन्द्रसूरिजी	२०	९९
रतनगुरुरास	-	रसीला कडीआ	२३	६३
रागमाला-शान्तिनाथस्तवन	सहजविमल	शीलचन्द्रसूरिजी	३३	६३

लाभोदयरास	दयाकुशल	शीलचन्द्रसूरिजी	२५	६२
			२७	२७
लेखशृंगार (विज्ञप्तिपत्र)	पुण्यहर्ष	महाबोधिविजयजी	१०	५०
वसुदेवचुपइ	हर्षकुल	रसीला कडीआ	२८	५१
वासुपूज्यजिन-पुण्यप्रकाश-स्तवन	सकलचन्द्र उपा.	शोभना शाह	३०	१५
वासुपूज्यस्वामी-प्रतिष्ठाविधिसूचक-स्तवन	प्रेमविजयजी	दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी	१३	२६
विजयदेवसूरिगीत	विनयचन्द	शीलचन्द्रसूरिजी	१५	९३
विजयप्रभसूरि-बारमास	प्रेमविजयजी	शीलचन्द्रसूरिजी	१५	८७
विजयवल्लीरास	शंकर मुनि	शीलचन्द्रसूरिजी	२४	९
विजयसेनसूरिगीत	पुण्यहर्ष	धुरन्धरविजयजी	८	८७
विजयसेनसूरिगीत	विनयचन्द	शीलचन्द्रसूरिजी	१५	९२
विज्ञप्तिपत्र	मनरूपविजयजी	त्रैलोक्यमण्डनविजयजी	५० (१)	६५
विषयत्यागगीत	मानदत्त	समयप्रज्ञाश्रीजी	३५	६५
वीशस्थानकनाम-स्वाध्याय	गुणविजयजी	कल्याणकीर्तिविजयजी	२४	७१
व्रतविचाररास	ऋषभदास	शीलचन्द्रसूरिजी	१९	१
शान्तिनाथश्लोक	गुणविजयजी	कल्याणकीर्तिविजयजी	२४	६७
शान्तिनाथस्तवन (सप्तदशपूजा)	श्रीसार	सुयशचन्द्रविजयजी, सुजसचन्द्रविजयजी	४५	४८

शाहवीराना सुकृतवर्णननी प्रशस्ति-चउपइ	-	प्रद्युम्नसूरिजी	५	२८
शीलस्वाध्याय	मानदत्त	समयप्रज्ञाश्रीजी	३५	६०
श्रावकना पांत्रीसगुणनी सज्झाय	गुणविजयजी	कल्याणकीर्तिविजयजी	२४	७२
श्रावकविधिरास	गुणाकरसूरिजी	विनयसागरजी	५० (१)	९३
श्रेयांसजिनस्तवन (आडीसर)	विशेषसागर	भुवनचन्द्रजी	३८	३४
संघयात्रानां ढालियां	देवचन्द्र श्रावक	शीलचन्द्रसूरिजी	३१	२१
संसारस्वरूपसज्झाय	पद्मकुमार मुनि	कल्याणकीर्तिविजयजी	२४	५१
सत्तरभेदीपूजा-सस्तबक	सकलचन्द्र उपा. स्त.-सुखसागर, जीवविजयजी	दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी	३९	३९
समतासज्झाय	हेमविजयजी	कल्याणकीर्तिविजयजी	२४	५४
समुद्रबन्धचित्रकाव्य	दीपविजयजी	शीलचन्द्रसूरिजी	२२	७
समेतशिखरगिरिरास	गुलाबविजयजी	शीलचन्द्रसूरिजी	२२	४१
सम्भवनाथकलश	-	रसीला कडीआ	२७	५०
सम्यक्त्वस्तवन	-	सुयशचन्द्रविजयजी, सुजसचन्द्रविजयजी	४५	५४
सरस्वती-बारमासा	भूधर मुनि	शीलचन्द्रसूरिजी	२५	५९
सरस्वतीस्तोत्र	दयासूरिजी	दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी	२१	२०
साधारणजिनस्तवन	मानदत्त	समयप्रज्ञाश्रीजी	३५	६४

सिद्धस्वरूप-स्वाध्याय	-	कल्याणकीर्तिविजयजी	२४	७४
सिलोकानन्दकवित्व	विनयसागर	शीलचन्द्रसूरिजी	४९	११७
सीमन्धरजिन-चन्द्राउला	जयवन्तसूरिजी	जयन्त कोठारी	१८	७२
सीमन्धरजिनस्तवन (चोत्रीसअतिशय)	कमलसागर	महाबोधिविजयजी	३८	४६
सीमन्धरस्वामी-लेख	जयवन्तसूरिजी	प्रद्युम्नसूरिजी	१८	१०९
सीलचूनडी	हीर मुनि	समयप्रज्ञाश्रीजी	४८	५५
सीलसज्झाय	देवसूरिजी	समयप्रज्ञाश्रीजी	४८	५४
सुगणबत्तीशी	रघुपति पाठक	समयप्रज्ञाश्रीजी	३२	१८
सुधर्मगणधर-भास	-	जिनसेनविजयजी	९	७६
सुधर्मगणधर-भास	-	जिनसेनविजयजी	१९	१३३
सुधर्मस्वामीनो रास	पुण्यरत्नसूरिजी	दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी	९	७८
सुभटस्वाध्याय	-	भुवनचन्द्रजी	४१	३२
सुभद्रासतीचतुष्पदिका	धर्म मुनि	कनुभाई शेठ	२	७८
सुमति-कुमतिवाद-गीत	लाल विनोदी	समयप्रज्ञाश्रीजी	४८	५१
सुमतिनाथगीत	मानदत्त	समयप्रज्ञाश्रीजी	३५	६२
सूक्तिद्वात्रिंशिका-सटीक	सारंग मुनि	अमृत पटेल	३७	२०
सूतकचोपाई	पुण्यसागरसूरिजी	कल्याणकीर्तिविजयजी	३२	२३
स्तवनचोवीशी	हीरसागर	जिनसेनविजयजी	१९	११३

स्तवनचोवीसी	मुक्तिसौभाग्य उपा.	अभय दोशी	२५	७८
स्थूलिभद्रनुं चोमासुं	विजयशेखर उपा.	समयप्रज्ञाश्रीजी	४७	६१
स्थूलिभद्रबारमासा	तत्त्वविजयजी	शीलचन्द्रसूरिजी	१५	७२
हंसराजपोसाल-धुलबन्ध	मुकुन्द मुनि	सुयशचन्द्रविजयजी, सुजसचन्द्रविजयजी	५० (२)	३९
हरियाली	कान्तिविजयजी	भुवनचन्द्रजी	४९	१०६
हरियाली	जिनहर्ष पण्डित	भुवनचन्द्रजी	४९	१०६
हरियाली	पार्श्वचन्द्रसूरिजी	भुवनचन्द्रजी	४९	१०४
हरियाली	मेघचन्द्रगणि-शिष्य	भुवनचन्द्रजी	४९	१०७
हरियाली	मेघराज मुनि	भुवनचन्द्रजी	४९	१०५
हरीआली	तत्त्वविजयजी	शीलचन्द्रसूरिजी	१५	७५
हितशिक्षाबोलसज्झाय	हंस साधु	कल्याणकीर्तिविजयजी	२४	५३
हीरगीत	पुण्यहर्ष	धुरन्धरविजयजी	८	८७
हीरविजयसूरिनी सज्झाय	जयविमल	महाबोधिविजयजी	७	९७
हीरविजयसूरिसज्झाय	-	विनयसागर	४२	४९
हीरविजयसूरिसज्झाय	विशालसुन्दर	विनयसागर	४२	५१
हीरसूरिगीत	हंसराज	भुवनचन्द्रजी	३९	२३
हीरसूरिस्वाध्याय	कुशलवर्द्धन	विनयसागरजी	४९	१२५

आदिपदानुक्रम (१७९)

आदिपद	कृतिनाम	अनु०	पृष्ठ
...तुम माइबीउ सिखिन्न म(स?) हुत्त	गौतमस्वामीरास	४	५६
...नउं । अवरायजय मगउं	भीमछन्द	१४	४८
यह अक्षर शार हें	दोधकबावनी	३५	५३
ॐ नमो देवाधिदेवं, तास	सरस्वती-बारमासा	२५	५९
ॐ विजया शान्तिकरा देवी	सरस्वतीस्तोत्र	२१	२०
अंधकारु गमिले प्रगट प्रगासे	नवगीतिका	४५	४४
अट्ठ छंद दस दूहडा	गौतमस्वामिच्छन्दांसि	६	५६
अब मि पायोरी परम	विजयदेवसूरिगीत	१५	९३
अरिहंत मुखकजवासिनी	सत्तरभेदीपूजा-सस्तबक	३९	३९
आंबाडालें सुडली तस पंख ज	हरियाळी	४९	१०६
आज घरि घरिइं वधामणां	जयकेसरीसूरिभास	४३	६७
आदरि समरी आदिभवानी	दशार्णभद्रराजर्षि-श्लोक	२४	६५
आदिलप्रमुख श्रीजिनवरा	विजयवल्लीरास	२४	९
ऊठि घुंटि घणउं चेतना नारि	सिद्धस्वरूप-स्वाध्याय	२४	७४
ऊलट अंगि अपार कामिनि करउ	जयकेसरीसूरिगीत	४३	६७
ऋषभ अजित संभव जिनो	वासुपूज्यजिन-पुण्यप्रकाश-स्तवन	३०	१५
ऋषभ जिणंद मया करी रे	चोवीस जिनगीतो	११	११

ऋषभजिणेसर साहिब सांभलो	स्तवनचोवीशी	१९	११३
ऋषभजिन मंगलकरण	श्रेयांसजिनस्तवन	३८	३४
एक दिन अरणक जाम गोचरी	अरणकस्वाध्याय	३५	६१
एक नारीने बे पुरुषें झाली	हरियाळी	४९	१०६
ओश वंश गगनि चंद	विजयसेनसूरिगीत	८	८७
कर्म समानो बलियो को नही रे	अभयकुमारस्वाध्याय	३५	५९
कागद कहु धुंकइं सिकरी लषीइ	नेमनाथगीत (गिरनार)	१५	९१
काहेकूं नेम रीसाना	नेम-राजुलना बारमास	४७	५७
कुंकुम कज्जल केवडो	पुण्यबत्रीसी	५० (२)	१
गुण गाउ गोतमतणा, लबधितणा	गौतमरास	४९	११९
गुणवंता गुरु गांगजी रे	गांगजीऋषिभास	४३	४९
गोतम प्रश्न कीयो भलोजी	कलयुगस्वाध्याय	३५	६५
गोरी रे गुणवंति गुणि आगली रे	हरियाळी	४९	१०७
गौतम नामे ठामो ठामे	गौतमस्वामीनी सज्झाय	१८	१०३
गौरी पास गरीबनिवाज गदा	पार्श्वनाथस्तवन (गोडीजी-उर्दूभाषा)	७	९३
चरण कमल रे प्रणमी गुरु तणा	शीलस्वाध्याय	३५	६०
चालि सही गुरु वंदीइ	जयकेसरीसूरिभास	४३	६८
चालो चालो चंतामण पास रे	पार्श्वनाथस्तवन (चिन्तामणि-कोठारीपोल)	२३	६०
चेतन छांडो हो यह रीति	सुमति-कुमतिवाद-गीत	४८	५१

जं फलु होइ गया गिरनारे	सुभद्रासतीचतुष्पदिका	२	७८
जगगुरु प्रणमुं वीरजिन	अभयकुमारचौपाई	४७	२६
जय जय जिनदेवा ज०	आरती	३५	६१
जय जिणशासण-गयणचन्द	अनन्तहंसगणि-स्वाध्याय	४२	४२
जाकी रख्या करे एक भगवंतजी	गीत	३५	२९
जिनशासनि जे अछइ सभट	सुभट-स्वाध्याय	४१	३२
जिह जिणधम्म न जाणीयइ	अपभ्रंशदोहा	६	६८
जीव भणइ सुणि जीभडली रे	जीभसंज्झाय	२४	५५
जेहने उपमा देत है कवि	पुष्पमालाचिंतवणी	४८	५६
ज्ञानादिक गुणखाणि	सुधर्मगणधर-भास	१९	१३३
ज्ञानादिक गुणखाणी राजगृही	सुधर्मगणधरभास	९	७६
तिहुयणमणि-चूडामणिहि	धर्मसूरिबारमासा	२	६९
तुं जिनवदनकमलनी देवी	मुनिवरसुरवेली	१५	५२
तुम सुणज्यौ हो ब्रह्मचारी	सीलसज्झाय	४८	५४
ते विण सरग-नरग नहीं	हरियाळी	४९	१०४
त्रिभुवनजिन आणंदा रे	निशालगरणुं	१५	६८
त्रिभुवनपति जिनपय नमी	भवस्थितिस्तवन	२८	४२
थूलिभद्रतणइं विरह किं	स्थूलिभद्रबारमासा	१५	७२
देव निरंजननें आराहो रे	माहापर्मपदसिधआराधनाभास	३५	२८

देवल एसा देख लें	पद	३५	२९
देवी देव मनावतां रे	विषयत्यागगीत	३५	६५
द्वारिका बलती नीकल्या	बलभद्रऋषिसज्झाय	२४	४९
द्वारिका हूंती नीकल्या	कृष्ण-बलभद्र-गीत	२४	९८
धरनपरधुकतधरसमरधुरनादधुः	अमृतधुन	२०	९८
ध्रुव वस्तु निश्चल सदा	बारभावना	३५	१५
नारी रे में दीठी एक आवती रे	हरियाळी	४९	१०५
नेम दीजइं सुरंगी चूनरी	नेमगीत	४७	६२
पंडित कहयो अर्थ विचारी	हरिआली	१५	७५
पणमवि पंच परमगुरु गुरुजन	जिनानां पंचकल्याणकानि	४०	४४
पणमिय नाभिनरेसर नन्दन	धरणविहार-चतुर्मुखस्तव	४५	५८
पणमिय पास जिणिन्द देव	हीरसूरिस्वाध्याय	४९	१२५
परणकुं नेमि मनाया तब	नेमिनाथभास	४२	३९
पहिलउं पणमिअ देव	ऋषभदेवस्तुति (शत्रुंजयमण्डन)	५	४०
पहेलो गणधर वीरनो रे	गौतमस्वामीनुं स्तवन	१९	१३२
पाय वंदिअे रे श्री महावीर	चोत्रीसअतिशय-स्तवन	३५	४९
पायपउम पणमेवि, चउवीसहं	श्रावकविधिरास	५० (१)	९३
पास जिनेस्वर पूजीइ	व्रतविचाररास	१९	१
पास संखेसर सकल राधणपुर	पार्श्वनाथस्तोत्र (अठोतरसो नामें)	२४	४

पुर हत्थिणाउर कुरु देश माहि	शान्तिनाथश्लोक	२४	६७
पूजउ जीउ पारसनाथ दयार	पार्श्वनाथगीत (अजारा)	१५	९०
पूजउ पासजिनेसर देव	पार्श्वनाथगीत (नवपल्लव-मंगलपुर)	१५	९१
पेस करो मन चरयम कादर	पार्श्वनाथस्तवन (गोडीजी-उर्दूभाषा)	७	८९
प्रणमी सन्ति जिणेसर राय	हीरविजयसूरिसज्झाय	४२	४९
प्रणमुं संयम पास जिण	चतुर्दशपूर्वपूजा	३५	३१
प्रथम जिणेसर माहरि प्रीतिने	स्तवनचोवीसी	२५	७८
बलदेव महामुनि तप तपइ वनि	बलदेवमुनिनी सज्झाय	२३	५७
बावन अक्षरमां ठकार बलीओ	जोगमायानो सलोको	३२	१
बेनी चालो गुरुगुण गावा के	मुनिचन्द्रसूरिगुरुगुण-गहुंली	२५	७५
बैद न कोई असो देख्यो	पार्श्वगीत (चिन्तामणि)	३५	६३
ब्रह्मानी धूआ देवी ब्रह्माणी	पार्श्वनाथस्तवन (शङ्खेश्वर-श्लोकबन्ध)	२४	६८
भगत भाइ ! भगवंत भजि	सूक्तिद्वात्रिंशिका-सटीक	३७	२०
भद्रेसर कणयग्गिरि नामह	जगडूसाहछन्द	१०	६८
मंगलकारणि सइंहथइ	जिनसागरसूरिगीतानि	५० (२)	२५
मन धर माता भारती	मेवाडको कवित	२०	९९
मनि आणी जिनवाणी प्राणी	नारीस्वरूपप्ररूपण-स्वाध्याय	२४	४७
मुंनिध्येय नमो, सुरगेय नमो	जिनस्तवना (विविधनामगुम्फित)	३३	२७
मेघमहामुनि वरतणा सखी गावहे	मेघागणिनिर्वाणभास	४९	१२४

रतनगरु गुण मीठडा रे	रतनगुरुरास	२३	६३
राज काज गुण आगलो	गूढार्थ-दोहाओ	५० (२)	५
राजगृही रलियामणी जिहां	गौतमगणधर-भास	१९	१३४
राजगृही रलियामणी जिहां	गौतमगणधरभास	९	७६
रे जिनेस्वर साहिबा माहरी	साधारणजिनस्तवन	३५	६४
वंछितपूरण मनोहरूं	रागमाला-शान्तिनाथस्तवन	३३	६३
वंदउ श्रीविजयसेनसूरिराय	विजयसेनसूरिगीत	१५	९२
वरसइ पुक्खरावरं तसु मेहा	उपदेशकुशलकुलक	२४	७९
विजयवंत पुष्कलावती रे	सीमन्धरजिन-चन्द्राउला	१८	७२
विणजारा रे सरसति करउ पसाउ	दानसूरिभास	४२	४६
वीर जिणंद वखाणियोजी	जिनप्रतिमापूजा-स्वाध्याय	३५	६२
वीर जिणंद समोसर्याजी	मेघकुमारगीत	२७	५८
वीर जिणेसर थया केवली	निह्नवविचारसज्झाय	२४	५६
वीरजिननइं करुं प्रणाम	सुधर्मस्वामीनो रास	९	७८
वीरविजणेसर त्रिभुवनि चंद	हीरविजयसूरिनी सज्झाय	७	९७
वीरा सुत....सोल सोलत्तरइ	शाहवीराना सुकृतवर्णननी प्रशस्ति-चउपइ	५	२८
वृषभलंछन आदि जिणंद	चोवीशजिननमस्कार (अष्टमीमाहात्म्य)	५	४४
शासनदेवति नमउं तुम्ह	भावलक्ष्मीसाध्वीजी-धुलबन्ध	५० (२)	३६
शीतलनीर समीर ससिच्छवि	सिलोकानन्दकवित्व	४९	११७

श्रीअरिहन्त अनन्त गुण	महावीरपारणा-स्तवन	४७	५३
श्रीआदिनाथ अवधारि करि प्रसादु	आदिनाथवीनती	२९	५८
श्रीगुरुचरणे नमी करि	खिमापंचावन्नी	२४	४२
श्रीचिन्तामणि स्वामि सुणो एक	पार्श्वनाथ प्रतिष्ठा-स्तवन (चिन्तामणि-कोठारीपोल)	२४	१०२
श्रीजिन पय प्रणमी करी रे लाल	प्रमोदचन्द्रभास	३०	११
श्रीजिन पास जिणेशरा	पार्श्वजिनब्रह्मस्तवन	३५	३०
श्रीजिनराजनें चरणे नमीजे रे	तीर्थस्थापनाभास	३५	२४
श्रीजिनशासन ध्यावो रे	आराधनाध्यांनभास	३५	२५
श्रीजिनशासन पामीइ	त्रणमित्रउपनय-सज्झाय	२४	५८
श्रीजिनशासन पूजीए	निजआराधभावनाभास	३५	२७
श्रीजिनशासन भासन भाणू	हीरविजयसूरिसज्झाय	४२	५१
श्रीजिनशासन सुंदरुं	माहाज्ञांनआराधभास	३५	२६
श्रीजिनशासनसामीया	पन्नरतिथि	२९	२३
श्रीजीराउलि पास पूरई रे मनची	जयकेसरीसूरिभास	४३	६३
श्रीवासुपूज्यजिणंदनें, प्रणमुं	वासुपूज्यस्वामी-प्रतिष्ठाविधिसूचक-स्तवन	१३	२६
श्रीशंखेश्वर तुझ नमुं	त्रम्बावती-तीर्थमाल	८	६२
श्रीसंखेश्वरपासजी समरि	संघयात्रानां ढालियां	३१	२१
श्रीसरसतिनइं करूं प्रणाम	तेजबाई-व्रतग्रहण-सज्झाय	५० (१)	१०१
श्रीसरसतीदेवी समरु माय	सूतकचोपाई	३२	२३

सकल मनोरथ सिद्धिकर	वसुदेवचुपइ	२८	५१
सकल सुबोध प्रदायनी, प्रणमुं	आचार्यजीना बारमसवाडा	४९	१०८
सकल सुरासर सेवित पाय	तपागच्छगुर्वावली-स्वाध्याय	३९	२०
सदानंदि वंदु जुगादीस देव	सीमन्धरजिनस्तवन (चोत्रीसअतिशय)	३८	४६
समकितदायक वीरना, पदपंकज	सम्यक्त्वस्तवन	४५	५४
समुद्रबंध आसीस, सबपें	समुद्रबन्धचित्रकाव्य	२२	७
समुद्रबीजइ सुत नयनइ देखे	नेमनाथगीत (ऊना)	१५	९२
सरस वदन सुखकारं	पार्श्वनाथस्तवन (गोडीजी-उर्दूभाषा)	७	९५
सरस सकोमल सुदरी	मल्लिनाथनो रास	५० (१)	१११
सरस-वचनदायक सरसती	गौतमस्वामीरास	७	५१
सरसति चरणि नमाडी सीस	श्रावकना पांत्रीसगुणनी सज्झाय	२४	७२
सरसति मति अतिनिरमली	लाभोदयरास	२५	६२
		२७	२७
सरसति शुभमति मुझ दिउजी	मेघागणिनिर्वाणभास	४९	१२२
सरसति सरसति वाणी	बारभावनासज्झाय	१७	१४२
सरसति सांमणि पहलां प्रणमी	जगजीवनऋषिभास-१	४३	५३
सरसति सांमणि विनवुं, माहरा	जगजीवनऋषिभास-२	४३	५४
सरसति सांम्यणि पाइ नमुं	महावीरजिनस्तवन	२६	१२२

सरसति सामिणि माइ पाय	पाण्डवचरित्र-बालावबोध	४	६८
		६	१०१
सरसति सामिणी वीनवउं ए	त्रणचउवीसी-विहरमाणजिनस्तवन	५	४७
सरसती मात मया करी	पार्श्वनाथछन्द (अन्तरीक)	२९	६४
सरसती मातादेवी, चरणकमल शेवि	आदिनाथ-बाललीला	४०	३९
सरसती सामनि वीनवु	भाणवडनगर-प्रतिष्ठा-स्तवन	२४	९६
सहगुरु आव्या मइं सुण्या रे	देवसूरिभास	४३	५८
सहि गुरुचरण नमी करीजी	समतासज्झाय	२४	५४
सांवलिया श्रीपासजी पणमवि	समेतशिखरगिरिरास	२२	४१
सारदमाता वीनवुं रे, मागुं	विजयप्रभसूरि-बारमास	१५	८७
सारयससिसम कायमाय	पार्श्वनाथस्तोत्र (अजपुर)	७	४३
सुखकर साहिब सेवीइं	पिस्तालीसआगम-पूजा	१५	७६
सुगण बूढापो आवियौ	सुगणबत्तीशी	३२	१८
सुगुरु नमी सुररयण समान	वीशस्थानकनाम-स्वाध्याय	२४	७१
सुणउ मेरी बहिनी काह करीजइ	नेमिनाथभास	४२	४१
सुणि जीव पहिलउं उपशम	हितशिक्षाबोलसज्झाय	२४	५३
सुणि सुणि जीवडा कहिउं रे	संसारस्वरूपसज्झाय	२४	५१
सुणी सेत्रुजा सिहरि शृंगार हार	आदिनाथवीनती-पूजा	२७	६३

सुन्दर पाडलीपुर सिरोमणि	स्थूलिभद्रनुं चोमासुं	४७	६१
सुमरो जिनराज सुमतिदाता	सुमतिनाथगीत	३५	६२
सुरसति मात नमी करी	देवसूरिभास	४३	६१
सोलमो जिनवर सेवी(वि)येजी	शान्तिनाथस्तवन (सप्तदशपूजा)	४५	४८
स्वस्ति श्रीऋषभं जिनम्	लेखशृंगार (विज्ञप्तिपत्र)	१०	५०
स्वस्ति श्रीपुंडरगिणी	सीमन्धरस्वामी-लेख	१८	१०९
स्वस्ति श्रीमंगलकरण, प्रणमी	दामन्नककुलपुत्रकरास	१२	४९
स्वस्ति श्रीरैवतगिरें, वाह्ला	नेम-राजुल-लेख	२६	११९
स्वस्ति श्रीवरनाभिनन्दनजिनम्	विज्ञप्तिपत्र	५० (१)	६५
स्वस्तिश्रियां मन्दिरमिन्द्रवन्द्य	सम्भवनाथकलश	२७	५०
हीर हीर हीर रंगीलो	हीरगीत	८	८७
हीरजी, तंबोले सोहइ नवरस रंगा	हीरसूरिगीत	३९	२३
हेजी सील सुरंगडी	सीलचूनडी	४८	५५

६. उत्तरकालीनअपभ्रंश-गुजराती व. भाषानी गद्य-रचना (१०)

कृति	कर्ता	सम्पादक	अनु.	पृष्ठ
१०१ बोलसंग्रह	यशोविजय उपा.	शीलचन्द्रसूरिजी	७	२१
कल्पव्याख्यानमांडणी[१]	देवाणन्द मुनि	शीलचन्द्रसूरिजी	२७	१३
चारध्यानविचारलेश	भोज	मालती शाह	२३	४७
जिनपूजाविधि	-	शीलचन्द्रसूरिजी	२२	३२
टीप[२]	प्रेमविजयजी	भुवनचन्द्रजी	६	७१
पंचसूत्रस्तबक	वेलजी भारमल	शीलचन्द्रसूरिजी	४२	१
पट्टक	विजयमानसूरिजी	महाबोधिविजयजी	१०	४४
भोजनविच्छित्तिः	-	समयप्रज्ञाश्रीजी	४९	१३१
सिद्धाचलतीर्थ-चैत्यपरिपाटी	मालजी नागजी	शीलचन्द्रसूरिजी	१८	११७
हाटग्रहणकखतपत्र	-	रसीला कडीआ	५०(२)	४५

आदिवाक्य

- १०१ बोलसंग्रह ७.२१

  सर्वज्ञशतकादिग्रंथ माहिला विरुद्ध बोल जे धर्मपरीक्षा ग्रंथमांहि

१) २८.९४ (२) ७.१०७

- कल्पव्याख्यानमांडणी २७.१३

  सर्वो जनः सुखार्थी, तत् सौख्यं धर्मतः स च ज्ञानात् ।

- चारध्यानविचारलेश २३.४७

  हिवइ चारि ध्यान कहइ छइ । तिहां ध्यानरा ४ भेद छइ ।

- जिनपूजाविधि २२.३२

  पूजानी विधि लिखिइ छइ । पूरवदिसि बइसी अंघोलि कीजि ।

- टीप ६.७१

  परमगुरु विजयमान भट्टारिक श्री...श्री...श्री... हीरविजयसूरिगुरुभ्यो नमः ।

- पंचसूत्रस्तबक ४२.१

  नमो वीयरागाणं.... । नमस्कार हो वीतरागोनइं सर्वज्ञोनइं.... ।

- पट्टक १०.४४

  संवत् १७४४ वर्षे कार्तिक सुदि १० शुक्रे । भ. श्रीविजयमानसूरिनिर्देशात् ।

- भोजनविच्छित्तिः ४९.१३१

  मांड्यो उत्तंग तोरण मांडवउं, तुरत बैसवानो नवो ।

- सिद्धाचलतीर्थ-चैत्यपरिपाटी १८.११७

  श्री जंबुधीपमध्ये दखणात भरतक्षेत्रे श्रीसोरठदेसमधे सीधखेत्रे....

- हाटग्रहणकखतपत्र ५०(२). ४५

  स्वस्ति श्रीमन्नृप विक्रमाऽर्क सितमातीत (समयातीत) । संवत् (त) १७३० वर्षे शाके १५(९५)

७. कृतिओनी (४२१) कर्ता प्रमाणे अनुक्रमणिका

निश्चितकर्तृक (२१४ कर्ता - ३३७ कृति)

अक्षयचन्द्र उपा. [पार्श्वचन्द्रसूरिजी (पार्श्वचन्द्रगच्छस्थापक) → रामचन्द्र उपा. → अक्षय०]※

मातृकाप्रकरण १२.१★

अनन्तहंस [लक्ष्मीसागरसूरिजी → जिनमाणिक्यसूरिजी → अनन्त०]

आदिनाथवीनती-पूजा (गच्छपति रत्नशेखरसूरिना काले) २७.६३

अभयदेवसूरिजी [नवांगीटीकाकार]

उपधानप्रतिष्ठापंचाशक ४.३४

आनन्दघनजी-लाभानन्द

बारभावना ३५.१५

आनन्दमाणिक्य [हेमविमलसूरिजी (१६मा सैकानो उत्तरार्द्ध) → आनन्द०]

पार्श्वनाथफागुकाव्य (नवखण्डा) ६.४३

आनन्दसागरसूरिजी

परीहार्यमीमांसा (वि. १९५४) ४१.१२ जेकोबीना पत्रनो उत्तर ४१.२२

आस कवि

जयकेसरीसूरिभास ४३.६७

ईश्वरसूरिजी-देवसुन्दर [सण्डेरकगच्छ, शान्तिसूरिजी → ईश्वर०]

ललितांगचरित्र / रासकचूडामणि (वि. १५६१) ८.१

उत्तमऋषि

शतपंचाशितिकासंग्रहणी (वि. १६८९) ४४.६७

उत्तमविजयजी [यशोविजय उपा. → गुणविजय → सुमतिविजय → उत्तम०]

पिस्तालीसआगम–पूजा (वि. १८३४) १५.७६

उदयरत्नजी [शिवरत्नसूरिजी (रत्नशाखा) → उदय०]

जोगमायानो सलोको (वि. १७७०) ३२.१

※ आ विवरण कृति के तेनी संपादकीय भूमिकाना आधारे लखायुं छे.

★ आ संख्या अनु.क्रमांक अने पृष्ठांक देखाडे छे. जेमके १२.१ = १२मा अनु.नुं प्रथम पृष्ठ

उदयविजय उपा.
पट्टावलीविसुद्धि ७.१
उदयसूरिजी [नेमिसूरिजी → उदय०]
मूर्तिपूजायुक्तिबिन्दुः ३१.१ मूर्तिमन्तव्यमीमांसा ३१.७
ऋद्धिविजयजी [मेरुविजयजी पं. → ऋद्धि०]
नारीस्वरूपप्ररूपण-स्वाध्याय २४.४७
ऋषभदास कवि
त्रम्बावती-तीर्थमाल (वि. १६७३) ८.६२
मल्लिनाथनो रास (वि. १६८५) ५०(१). १११
महावीरजिनस्तवन (वि. १६६६) २६.१२२
व्रतविचाररास (वि. १६६६) १९.१
ऋषिवर्धनसूरिजी [यशकीर्तिसूरिजी → ऋषि०]
नेमिजिनस्तुति (रैवतकमण्डन) ४९.११५
कनकमाणिक्य गणि [सुमतिसाधुसूरिजी → कनक०]
अनन्तहंसगणि-स्वाध्याय ४२.४२
कमलसागर [विजयदानसूरिजी → हर्षसागर उपा. → कमल०]
सीमन्धरजिनस्तवन (चोत्रीस अतिशय) (वि. १६६६) ३८.४६
करमसीह [पार्श्वचन्द्रगच्छ, जयचन्द्रसूरिजी → प्रमोदचन्द्र उपा. → करम०]
प्रमोदचन्द्रभास (वि. १७४५) ३०.११
कल्याणचन्द्रजी [खरतरगच्छ, कीर्तिरत्न → कल्याण०]
पार्श्वनाथस्तव (नवफणा) ३७.१०
कान्तिविजयजी
हरियाली ४९.१०६
कान्ह मुनि [जीवर्षि गणि → मल्ल गणिवर → कान्ह]
चोत्रीसअतिशय-स्तवन (वि. १६५२) ३५.४९
कीर्तिसुन्दर-कान्हजी [खरतरगच्छ, विमलकीर्ति → विमलचन्द्र → विजयहर्ष → धर्मवर्धन उपा. → कीर्ति०]
अभयकुमारचौपाई (वि. १७५९) ४७.२६

कुशलवर्धन [हीरविजयसूरिजी → कुशल०]
हीरसूरिस्वाध्याय ४९.१२५
केसर पण्डित [क्षमासूरिजी → दयासूरिजी → केसर]
भाणवडनगर-प्रतिष्ठा-स्तवन (वि. १७९५) २४.९६
क्षमाकल्याण उपा. [अमृतधर्म गणि → क्षमा०]
जैनतीर्थावलीद्वात्रिंशिका ४९.९८
गंगदास [लोंकागच्छीय]
आचार्यजीना बारमसवाडा (वि. १६५९) ४९.१०८
गुणविजयजी [कनकविजयजी → गुण०]
दशार्णभद्रराजर्षि-श्लोक २४.६५ पार्श्वनाथस्तवन (शंखेश्वर) २४.६८
वीशस्थानकनाम-स्वाध्याय २४.७१ शान्तिनाथश्लोक २४.६७
श्रावकना पांत्रीसगुणनी सज्झाय २४.७२
गुणविजयजी [सुमतिविजयजी → गुण०]
जातिविवृतिः (हीरसूरिराज्ये) ३४.२३
गुणाकरसूरिजी [पद्मानन्दसूरिजी → गुणा०]
श्रावकविधिरास (वि. १३७१) ५०(१).९३
गुलाबविजयजी [ऋद्धिविजय उपा. → भावविजयजी → मानविजयजी पं. → गुलाब०]
समेतशिखरगिरिरास (वि. १८४७) २२.४१
चन्द्रकीर्तिसूरिजी [रत्नशेखरसूरिजी (१५मो सैको) → चन्द्र०]
सिद्धिचक्रयन्त्रोद्धारविधिव्याख्या ३६.२३
चन्द्रोदय
पार्श्वनाथगीत १८.१०२
चारित्रनन्दी उपा.—चुन्नीजी [निधिउदय उपा. → चारित्र० → चिदानन्दजी]
चतुर्दशपूर्वपूजा (वि. १८९५) ३५.३१
जगन्नाथ पण्डित [तांजोरना मराठाराजा सरफोजी (ई. १७१२-१७२७)ना राजकवि]
अश्वधाटीकाव्य १८.५८

जयतिलकसूरिजी-जयशेखर [आगमिकगच्छ, चारित्रप्रभसूरिजी → जय०]
चतुर्हारावलीचित्रस्तव २०.१
जयवन्तसूरिजी-गुणसौभाग्य [वडतपगच्छ-रत्नाकरशाखा, विनयमण्डन उपा. → जय०]
बारभावनासज्झाय १७.१४२ सीमन्धरजिन—चन्द्राउला १८.७२
सीमन्धरस्वामी-लेख १८.१०९
जयविमल [हर्षविमल → जय०]
हीरविजयसूरिनी सज्झाय ७.९७
जयशेखर पण्डित—जसराज [खरतरगच्छ, सुमतिभक्ति → जय०]
विज्ञप्तिपत्र (जिनमहेन्द्रसूरिने प्रेषित - वि. १८९७) ३३.८
जयसिंहसूरिजी
आलोयणाविहाणं ३७.७ पंचकपरिहाणि ३७.१
जिनदत्तसूरिजी [वायडगच्छ]
षड्दर्शनपरिक्रम १४.१
जिनपतिसूरिजी [खरतरगच्छ, जिनदत्तसूरिजी → जिनचन्द्रसूरिजी (मणिधारी) → जिन०, १३मो सैको]
नेमिजिनस्तोत्र (उज्जयन्त) ३१.१६
जिनपतिसूरि-शिष्य [१३मो सैको]
जिनपतिसूरिपंचाशिका ११.३२
जिनप्रभसूरिजी [देवभद्रसूरिजी (आगमगच्छस्थापक - वि. १२५०) → जिन०]
वज्रस्वामीचरित ६.४७
जिनप्रभसूरिजी—शुभतिलक [जिनसिंहसूरिजी (लघुखरतरशाखा) → जिन० (१४मो सैको)]
आज्ञास्तोत्र २१.३९ ऋषभप्रभुस्तव (अष्टभाषामय) ३९.९
गायत्रीमन्त्रवृत्तिः १७.१७३
जिनहर्ष गणि—जसराज [शान्तिहर्ष उपा. (खरतरगच्छ - क्षेमकीर्ति शाखा) → जिन०]
दोधकबावनी (वि. १७३०) ३५.५३

जिनहर्ष पण्डित

हरियाली ४९.१०६

जिनेन्द्र मुनि

मेवाडको कवित २०.९९

जिनेश्वरसूरिजी [खरतरगच्छना आदिपुरुष, १२मो सैको]

छन्दोनुशासनम् ४७.१

जिनेश्वरसूरिजी–वीरप्रभ [खरतरगच्छ, जिनपतिसूरिजी → जिने०, १३मो सैको]

गौतमगणधरस्तव ३१.१८

जीवविजय पण्डित [दोलतविजय पं. → जीव०]

सत्तरभेदीपूजा-स्तबक (वि. १८५४) ३९.३९

ज्ञानतिलक [खरतरगच्छ, विमलकीर्ति → विमलचन्द्र → विजयहर्ष → धर्मवर्धन उपा. → ज्ञान०]

जिनकुशलसूरिछन्द ४८.४८ पार्श्वनाथस्तोत्र (गवडी) ४८.४५

सरस्वतीस्तोत्र ४८.४६

ज्ञानधर्म [खरतरगच्छ, जिनचन्द्रसूरिजी → मतिसार → सुमतिसागर → साधुरंग → राजसार → ज्ञान०]

दामन्नककुलपुत्रकरास (वि. १७३५) १२.४९

ज्ञानप्रमोद उपा. [खरतरगच्छ, सागरचन्द्रसूरिजी → धर्मरत्नसूरिजी → पुण्यसमुद्र → दयाधर्म → शिवधर्म → हर्षहंस → रत्नधीर → ज्ञान०, १७मो सैको]

आदिनाथस्तोत्र (कोट्टदुर्ग) ४०.३३ पार्श्वनाथस्तोत्र (रतलाम) ४०.३७

ज्ञानसागरसूरिजी

महावीरजिनस्तोत्र (संसारदावा-पादपूर्ति) ३८.२५

शान्तिजिनस्तोत्र (आनन्दानम्र-पादपूर्ति) (वि. १५६३ पूर्वे) ३८.२८

तत्त्वविजयजी [यशोविजय उपा. → तत्त्व०]

चोवीस जिनगीतो ११.११ स्थूलिभद्रबारमासा १५.७२

हरिआली १५.७५

दयाकुशल पण्डित [मेघविजय → कल्याणकुशल पं. → दया०]
लाभोदयरास (वि. १६४९) २५.६२, २७.२७
दयासूरिजी [क्षमासूरिजी → दया०, १८मानो उत्तरार्ध]
सरस्वतीस्तोत्र २१.२०
दीपविजय कविराज [आणसूरगच्छ]
समुद्रबन्धचित्रकाव्य (वि. १८७७) २२.७
दीप्तिविजयजी [तेजविजयजी → मानविजयजी → दीप्ति०]
चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र ४८.४०
देवचन्द्र मुनि
तेजबाईव्रतग्रहण-सज्झाय (वि. १६८२) ५०(१).१०१
देवचन्द्र श्रावक [शुभवीर गुरुना श्रावक]
संघयात्रानां ढाळियां (वि. १९२७) ३१.२१
देवभद्रसूरिजी
चतुर्विंशतिजिनस्तोत्राणि (वि. १५५० पूर्वे) ४०.१
देवसूरिजी [तपगच्छपति]
सीलसज्झाय ४८.५४
देवाणन्द [विनयचन्द्रसूरिजी (सिद्धान्तीगच्छना आदिपुरुष) → शुभचन्द्रसूरिजी → नाणचन्द्रसूरिजी → अजितचन्द्रसूरिजी → सोमचन्द्रसूरिजी → देवसुन्दरसूरिजी → देवा०]
कल्पव्याख्यानमांडणी (वि. १५७०) २७.१३
धनहर्ष-शिष्य
विज्ञप्तिकालेखः (सेनसूरिजी पर) १६.१
धर्म मुनि
सुभद्रासतीचतुष्पदिका २.७८
धर्ममंगल-शिष्य
पार्श्वनाथस्तोत्र (अजपुर) (वि. १५६३) ७.४३
धर्मशेखर पण्डित [१५मो सैको]
चतुर्मुखमहावीरस्तवन २१.३० सीमन्धरस्वामीविज्ञप्ति २१.३१

धर्मसागर उपा.
हीरविजयसूरिस्वाध्याय ४.४८
धीरविजयजी [सिंहसूरिजी (तपगच्छपति) → धीर०]
गौतमस्वामीनुं स्तवन १९.१३२
नयप्रमोद [खरतरगच्छ]
पार्श्वनाथस्तवन (शंखेश्वर) ७.९५
नयसुन्दर उपा. [वडतपगच्छ, देवसुन्दरसूरिजी → विजयसुन्दरसूरिजी → भानुमेरु → नय०]
त्रणमित्रउपनय सज्झाय २४.५८
नरेन्द्रप्रभसूरिजी [मलधारी]
सूक्तमाला ४०.२१
निन्हण कवि
प्राकृतशब्दाः संस्कृते नानार्थाः ५.४
नृसिंह कवि
बन्धकौमुदी ७.१२
नेमिसागर उपा. [धर्मसागरजी उपा. → लब्धिसागर → नेमि०]
वीरजिनस्तोत्र (सुखाशिकानामगर्भित) ८.८६, २३.२२
नेमिसूरिजी [बूटेरायजी → वृद्धिचन्दजी → नेमि०]
परीहार्यमीमांसा (वि. १९५४) ४१.१२ रघुवंशद्वितीयसर्गटीका २६.१
हर्मन जेकोबीना पत्रनो उत्तर (वि. १९५६) ४१.२२
पद्मकुमार मुनि
संसारस्वरूपसज्झाय २४.५१
पद्मसागरजी [धर्मसागर उपा. → पद्म०]
हीरविजयसूरिस्वाध्याय ४.५१ हीरविजयसूरिस्वाध्याय ४.५२
पार्श्वचन्द्रसूरिजी [पार्श्वचन्द्रगच्छना आदिपुरुष]
हरियाली ४९.१०४
पुण्यरत्नसूरिजी [अंचलगच्छ, सुमतिसागरसूरिजी → गजसागरसूरिजी → पुण्य०]
सुधर्मस्वामीनो रास (वि. १६४०) ९.७८

पुण्यसागरसूरिजी [अंचलगच्छ]
सूतकचोपाई (वि. १९०६) ३२.२३
पुण्यहर्ष
लेखशृंगार (वि. १६४२) १०.५० विजयसेनसूरिगीत ८.८७
हीरगीत ८.८७
पूनपाल
मेघकुमारगीत २७.५८
पूर्णभद्रगणि [खरतरगच्छ, जिनपतिसूरिजी → पूर्ण०]
आणन्दादिदसउवासगकहाओ (वि. १३०९ पूर्वे) ४८.१
पृथ्वीचन्द्रसूरिजी
यतिशिक्षापंचाशिका १३.१३
प्रेमविजयजी [विमलहर्ष उपा. → प्रेम०]
टीप (वि. १६३९) ६.७१
प्रेमविजयजी [देवसूरिजी → दर्शनविजय पं. → प्रेम०]
विजयप्रभसूरि-बारमासा १५.८७
प्रेमविजयजी [सौभाग्यलक्ष्मीसूरिजी → प्रेम०]
वासुपूज्यस्वामी-स्तवन (प्रतिष्ठाविधिसूचक) (वि. १८४३) १३.२६
बप्पभट्टिसूरिजी–भद्रकीर्ति
सरस्वतीस्तोत्र ५.२४
बिल्ह कवि
भीमछन्द (१४मो सैको) १४.४८
भक्तिसागर पण्डित [धर्मसागर उपा. → लब्धिसागर उपा. → भक्ति०]
आदिनाथस्तुति (कुटुम्बनामगर्भित) ८.८८, २३.१८
भानुलब्धि [पूर्णलब्धि उपा. → भानु०]
कम्मबत्तीसी २१.३५
भावविजय उपा. [देवसूरिजी → भाव०]
पार्श्वनाथछन्द (अन्तरीक) (वि. १७५०) २९.६४
भीम कवि
दानसूरिभास (वि. १६१२) ४२.४६

भुवनहिताचार्य [खरतरगच्छ, जिनचन्द्रसूरिजी → भुवन०, १५मानो पूर्वार्ध]
चतुर्विंशतिजिनस्तवन २५.५३
भूधर [जसराज → भधर]
सरस्वती-बारमासा २५.५९
भोज
चारध्यानविचारलेश (वि. १७९९) २३.४७
मनरूपविजय पण्डित [खुशालविजयजी → पद्मविजयजी → मन०]
विज्ञप्तिपत्र (वि. १८६२) ५०(१).६५
महानन्द ऋषि [भीम ऋषि → महा०, १९मो सैको]
जगजीवनऋषिविज्ञप्तिभास ४३.५३ जगजीवनऋषिविज्ञप्तिभास ४३.५४
महीसागर गणि [लक्ष्मीसागरसूरिजी → सोमजयसूरिजी → मही०]
ऋषभदेवस्तोत्र (भक्तामर-पादपूर्ति) ३८.१९
महेश्वर कवि
संशयगरलजांगुलीनाममाला १०.१२
मानदत्त [विजयगच्छ (वीजामत), सरूप → मान०]
अभयकुमारस्वाध्याय ३५.५९ कलयुगस्वाध्याय ३५.६५
जिनप्रतिमापूजा-स्वाध्याय ३५.६३ पार्श्वगीत (चिन्तामणि) ३५.६३
विषयत्यागगीत ३५.६५ शीलस्वाध्याय ३५.६०
साधारणजिनस्तवन ३५.६४ सुमतिनाथगीत ३५.६२
मानसागर पण्डित [हीरसूरिजी → बुद्धिसागर पं. → मान०]
मेघदूतखण्डना ३२.३८
मालजी नागजी [कच्छी]
सिद्धाचलतीर्थ-चैत्यपरिपाटी (वि. १९०८) १८.११७
माल मुनि [लोंकागच्छ]
महावीरपारणा-स्तवन (१८मानो पूर्वार्ध) ४७.५३
मुकुन्द मुनि [वृद्धतपागच्छ, रत्नसिंहसूरिजी → उदयधर्म उपा. → मुकुन्द०]
भावलक्ष्मी-धुलबन्ध ५०(२).३६ हंसराजपोसाल-धुलबन्ध ५०(२).३९
मुक्तिसौभाग्य उपा०
स्तवनचोवीशी २५.७८

मुनिचन्द्रसागरजी [शान्तिसागरसूरिजी → प्रमोदसागर पं. → मुनि०]
पार्श्वनाथस्तवन (चिन्तामणि-कोठारीपोल) (वि. १८८८ पछी) २३.६०
मुनिचन्द्रसूरिजी [सर्वदेवसूरिजी → यशोभद्रसूरिजी → मुनि० (सौवीरपायी)]
छन्दोनुशासनविवृति ४७.१
मुनिचन्द्रसूरिजी [१४मो सैको]
तीर्थमालास्तवः ३६.१
मुनिदेवसूरिजी [वादिदेवसूरिजी-परम्परा, मदनचन्द्रसूरिजी → मुनि०, १४मो सैको]
अभयाभ्युदयमहाकाव्य ४६.१
मुनिसुन्दरसूरिजी [तपगच्छपति]
पंचसूत्रावचूरिः ११.४७
मुनिसोम गणि [खरतरगच्छ, जिनभद्रसूरिपरम्परा]
कल्पसूत्रलेखनप्रशस्ति (वि. १५०९) ४७.१७
मुनीचन्द्रनाथ–धर्मदत्तदेव [बुधदेव → मुनी०]
आराधनाध्यानभास ३५.२५ गीत ३५.२९
तीर्थस्थापनाभास ३५.२४ निजआराधभावनाभास ३५.२७
पद ३५. २९ पन्नरतिथि-आगमसारउद्धार २९.२३
पार्श्वजिनब्रह्मस्तवन ३५.३० माहाज्ञानआराधभास ३५.२६
माहापर्मपदसिधआराधनाभास ३५.२८
मुनीश्वरसूरिजी [वृद्धगच्छ, १५मा सैकानो उत्तरार्ध]
प्रमाणसारः २५.१८
मेघचन्द्रगणि-शिष्य
हरियाली ४९.१०७
मेघराज मुनि
हरियाली ४९.१०५
मेघविजय उपा.
राणभूमीशवंशप्रकाशः २५.४४ सेवालेखः (विजयप्रभसूरिजी पर) ३३.२८
मेघा
अरणकस्वाध्याय ३५.६१ आरती ३५.६१

मेरु मुनि [खरतरगच्छ, कमलसंयम उपा. → मेरु]
नवगीतिका ४५.४४
मेरुतुंगाचार्य
स्तम्भनाधीशप्रबन्धसंग्रहः (वि. १४१३) ९.१
मेरुनन्दन उपा.
गौतमस्वामिच्छन्दांसि ६.५६
मेरुरत्नोपाध्याय-शिष्य
पाण्डवचरित्रबालावबोध ४.६८, ६.१०१
मोदमन्दिर गणि
जिनप्रबोधसूरि-जिनचन्द्रसूरि-चन्द्रायणा ९.९२
मोहनविजय यति
पार्श्वनाथस्तवन (गोडीजी) ७.९१ पार्श्वनाथस्तवन (गोडीजी) ७.९३
यशोविजय उपा. [हीरसूरिजी → कल्याणविजय उपा. → लाभविजय उपा. → नयविजय उपा. → यशो०]
आत्मसंवादः २०.३० १०१ बोलसंग्रह ७.२१
कर्मप्रकृतिसंक्षेपविवरण २२.४
चोवीशजिननमस्कार (अष्टमीमाहात्म्यगर्भ) ५.४४
नाभेयजिनस्तवन ३.१२ पत्रखरडो ६.६५
पार्श्वजिनस्तुति (शंखेश्वर) ३३.३ शारदागीत १५.६६
सुविधिपार्श्वजिनस्तव ३३.१
यशोविजय प्रवर्त्तक [नेमिसूरिजी → यशो०]
धर्मरत्नदुर्लभत्वम् ५०(१).५४
नेमिसूरीश्वरस्तुति (त्रिभाषामयी) ५०(१).६३
रघुपति पाठक—रुघपति [जिनसुखसूरिजी → विद्यानिधान → रघु०, १९मानो पूर्वार्ध]
सुगुणबत्तीशी ३२.१८
रत्नमण्डन [नन्दिरत्न → रत्न०]
सारस्वतोल्लासकाव्य १५.१

रत्नशेखरसूरिजी

गौतमस्वामीरास (वि. १४०५) ४.५६

रत्नसिंह [संघहर्ष → धर्मसिंह → रत्न०]

आनन्दलहरी (सौन्दर्यलहरी-पादपूर्ति) ४३.४६

ऋषभजिनस्तोत्र (रघुवंशपादपूर्ति) ३८.११

पार्श्वनाथस्तोत्र ४३.४०

महावीरस्तोत्र (सुजैत्रपुर) ४३.४३

वीतरागस्तोत्र (रघुवंशपादपूर्ति) ३८.१७

सर्वजिनस्तोत्र ४३.४४

रत्नसिंहसूरिजी—पद्मनाभ [धर्मसूरिजी(चन्द्रगच्छ) → रत्न० → देवेन्द्रसूरिजी → कनकप्रभसूरिजी (लघुन्यासकर्ता)]

अणहिलपुर-रथयात्रास्तवन ४४.५०

अप्पाणुसासणं (वि.१२३९) ४४.२०

आत्मतत्त्वचिन्ताभावनाचूलिका ४४.१४

आत्महितचिन्ताकुलक ४४.३६

आत्मानुशास्ति ४४.१६

उपदेशकुलक ४४.४५

ऋषभदेवविज्ञप्तिका ४४.१८

गुरुभक्तिमहिमाकुलक ४४.४१

धर्मसूरिगुणस्तुति (वि. १२३७ पछी) ४४.३३

धर्मसूरिछप्पय ४४.६३

धर्मसूरिदेशनागुणस्तुति ४४.५६

नेमिनाथस्तव ४४.२९

नेमिनाथस्तव ४४.३०

नेमिनाथस्तव ४४.३१

नेमिनाथस्तव ४४.४७

नेमिनाथस्तोत्र ४४.२६

नेमिनाथस्तोत्र ४४.३२

पर्यन्तसमयाराधनाकुलक ४४.४४

पार्श्वजिनस्तवन ४४.५५

पार्श्वनाथस्तव ४४.२७

पार्श्वनाथस्तव ४४.२८

पार्श्वनाथस्तवन (शंखेश्वर) ४४.५९

पार्श्वस्तवन (शंखेश्वर) ४४.५८

पार्श्वनाथस्तवन (शंखेश्वर) ४४.६०

पार्श्वनाथस्तवन (शंखेश्वर) ४४.६०

पार्श्वनाथस्तोत्र (शंखेश्वर) ४४.६१

पुंडरीकगणधरस्तोत्र ४४.४९

बावत्तरिजिनस्तवन ४४.५४

भारतीस्तोत्र ४४.५१

मनोनिग्रहभावनाकुलक ४४.३८

मुनिसुव्रतस्तवन (भरुच) ४४.५२

शासनदेवीस्तोत्र ४४.६५

संवेगचूलिकाकुलक ४४.२५

हितशिक्षाकुलक ४४.२४

रविसागर गणि [हर्षसागर उपा. → राजपालगणि (राजसागर) पं. → रवि०]

आदिनाथस्तवन (सुखभक्षिकानामगर्भित) ८.८५, २३.२१

ऋषभदेववंशवर्णन (रघुवंशरीत्या) २३.४०

गिरिनारवर्णन (कुमारसम्भवरीत्या) २३.३३

गुरुवर्णन (जिनशतकरीत्या) २३.४२

नेमिराजीमतीवर्ण (मेघदूतरीत्या) २३.३५

पार्श्वनाथस्तवन (कुटुम्बनामगर्भित) ८.८४, २३.२०

रविसिंह

त्रिलोकस्थितजिनगृहस्तव (वि. १६६७ पूर्वे) २१.४१

राजशेखरसूरिजी [मलधारी, १४मो सैको]

स्याद्वादकलिका ४१.२४

रामविजयजी

जिनस्तवना (विविधनामगुम्फित) ३३.२७

रायचन्द ऋषि

गौतमस्वामी रास (वि. १८३४) ४९.११९

रूपचन्द्र उपा.—रामविजय [खरतरगच्छ, १८मो सैको, दयासिंह गणि → रूप०]

नाटिकानुकारि षड्भाषामयं पत्रम् २७.१

रूपचन्द्र

समस्तजिनस्तुति (पद्धडीछन्द) ११.६३ पार्श्वजिनलघुस्तवन ११.६४

रूपचन्द्र [दिगम्बर]

जिनानां पंचकल्याणकानि ४०.४४

रूपविजयजी [विनयविजय उपा. → रूप०]

नेम-राजुल-लेख (वि. १८५६) २६.११९

लक्ष्मीकल्लोल गणि [आगममण्डनसूरिजी → हर्षकल्लोल गणि → लक्ष्मी०, १७मानो पूर्वार्ध]

चतुर्विंशतिजिनस्तुति (वर्द्धमानाक्षरा) ३४.१

लक्ष्मीमूर्ति [सकलहर्षसूरिजी → लक्ष्मी०, १७मानो पूर्वार्ध]
भवस्थितिस्तवन २८.४२

लक्ष्मीविजयजी
गौतमस्वामीनी सज्झाय १८.१०३

लक्ष्मीसागरसूरि-शिष्य [रत्नशेखरसूरिजी → लक्ष्मी० (तपगच्छपति), १६मो सैको]
त्रणचउवीसी-विहरमाणजिनस्तवन ५.४७

लब्धिविजयजी
खिमापंचावन्नी २४.४२

लाल-विनोदी [दिगम्बर]
सुमति-कुमतिवाद-गीत ४८.५१

लावण्यसमय
जीभसज्झाय २४.५५

लावण्यसूरिजी [नेमिसूरिजी → लावण्य०]
सप्तदलं लेखकमलम् (वि. १९९३) १२.७१

विजयचन्द्र-शिष्य [हीरसूरिजी → विजय०]
हीरविजयसूरिस्वाध्याय ४.५३

विजयतिलकसूरिजी [तपागच्छ, १७मो सैको]
ऋषभदेवस्तुति (शत्रुंजय) ५.४०

विजयशेखर उपा. [विवेकशेखर गणि → विजय०]
नेमगीत ४७.६२ नेम-राजुलना बारमास ४७.५७
स्थूलिभद्रनुं चोमासुं ४७.६१

विजयमानसूरिजी
पट्टक (वि. १७४४) (लखनार - लावण्यविजय) १०.४४

विजयसिंहसूरिजी [नागेन्द्रकुलीय]
सामुद्रिकशास्त्रलक्षणानि (भुवनसुन्दरीकथागत) (शक ९७५ वि. ११०९) १६.२८

विनयचन्द
नेमनाथगीत (गिरनार) १५.९१ नेमनाथगीत (ऊना) १५.९२

पार्श्वनाथगीत (अजारा) १५.९०
पार्श्वनाथगीत (नवपल्लव-मंगलपुर) १५.९१
देवसूरिगीत १५.९३ विजयसेनसूरिगीत १५.९२

विनयवर्धन [सिंहसूरिजी → विनय.]
विज्ञप्तिपत्र (वि. १७०१) १४.३१

विनयसागर
सिलोकानन्दकवित्व ४९.११७

विनयसुन्दर [हीरसूरिजी → विजयहंस पं. → विनय०]
तपागच्छगुर्वावली-स्वाध्याय ३९.२०

विमलहंस गणि [विजयहंस → मेघा गणि → विमल०]
मेघागणिनिर्वाणभास ४९.१२२ मेघागणिनिर्वाणभास ४९.१२४

विवेकचन्द्र गणि [दानसूरिजी → सकलचन्द्र उपा. → सूरचन्द्र → भानुचन्द्र उपा. → विवेक०, १७मो सैको]
आदिनाथस्तोत्र (भक्तामर-पादपूर्ति) ५०(१).३७

विवेकरत्नसूरि-शिष्य
शम्भवजिनस्तोत्र (पावकपर्वत) ११.६५

विवेकविजय-शिष्य [रामविजय उपा. → प्रतापविजय → विवेकविजय]
पार्श्वनाथप्रतिष्ठास्तवन (चिन्तामणि-कोठारीपोल) (वि. १८४५) २४.१०२

विशालमूर्ति-शिष्य [देवसुन्दरसूरिजी → सोमसुन्दरसूरिजी → विशाल०]
धरणविहार-चतुर्मुखस्तव ४५.५८

विशालसुन्दर [हीरसूरिजी → विशाल०]
हीरविजयसूरिसज्झाय ४२.५१

विशेषसागर पण्डित [क्षमासूरिजी → दयासूरिजी → कुशलसागर → उत्तमसागर → चतुरसागर → लाभसागर → विशेष०]
श्रेयांसजिनस्तवन (आडीसर) (वि. १७९४) ३८.३४

वेलजी भारमल [कच्छ-कोडायरहीश]
पंचसूत्रस्तबक (वि. १९५८) ४२.१

शंकर मुनि
विजयवल्लीरास (वि. १६५१) २४.९

शान्तिदास
गौतमस्वामीरास (वि. १७३२) ७.५१
शान्तिसूरिजी [वादिवेताल, ११मो सैको]
बृहच्छान्तिस्तोत्र १५.९४
शान्तिसूरिजी [खण्डेल्लकगच्छ]
भक्तामरस्तववृत्ति ५०(१).१
शिवजी ऋषि [लखमसीजी → गांगजी → शिवजी]
गांगजीऋषिभास (वि. १७७६) ४३.४९
शुभतिलक उपा.
गायत्रीमन्त्रवृत्ति १७.१७३
श्रीधर श्रावक
गुरुस्थापनाशतक ३८.१
श्रीब्रह्म [पार्श्वचन्द्रगच्छ, वि. १५६८-१६४६]
उपदेशकुशलकुलक २४.७९
श्रीवल्लभोपाध्याय [खरतरगच्छ, १७मो सैको, रत्नचन्द्र उपा. → भक्तिलाभ → चारित्रसार → भानुमेरु → ज्ञानविमल → श्रीवल्लभ०]
चतुर्दशस्वरस्थापनवादस्थलम् ४५.३०
पार्श्वनाथस्तोत्र (तिमिरीपुरीश्वर) २८.३३
पार्श्वनाथस्तोत्र (सुन्दरीछन्द) २८.२९
मातृकाश्लोकमाला २६.१०१
श्रीसार [खरतरगच्छ, क्षेमशाखा, रत्नहर्ष गणि → श्रीसार]
शान्तिनाथस्तवन (सप्तदशपूजागर्भित) (वि. १६४२) ४५.४८
सकलचन्द्र उपा. [दानसूरिजी → सकल०]
मुनिमाला ३९.१
मुनिवरसुरवेली १५.५२
वासुपूज्यजिनस्तवन ३०.१५
श्रुतास्वादः २३.१
सत्तरभेदीपूजा ३९.३९
सीमन्धरजिनस्तवन ३.१०
सज्जन श्रावक
जिनप्रबोधसूरि-नाराचबन्धछन्द ९.९४
जिनेश्वरसूरि-कुण्डलिया (१४मा सैका पूर्वे) ९.९३

सत्यसौभाग्य गणि [राजसागरसूरिनी परम्परामां, श्रीसौभाग्य → सत्य०]
बीबीपुरस्थित-श्रीचिन्तामणिपार्श्वनाथ-चैत्यप्रशस्ति (वि. १६९७) ४५.१
समयसुन्दर उपा. [जिनचन्द्रसूरिजी → सकलचन्द्र → समय०]
मेघदूतप्रथमपद्यस्याऽभिनवत्रयोऽर्थाः ३२.२७
विज्ञप्तिपत्री (वि. १६५८) ३५.५
समुच्चय
आनन्दसमुच्चय ४३.१
सहजकीर्ति उपा. [खरतरगच्छ, रत्नसार → रत्नहर्ष → हेमनन्दन → सहज०]
पार्श्वनाथ-महादण्डक-स्तुति (वि. १७८३) १२.८१
पार्श्वनाथस्तोत्र (अठोतरसो नामे) २४.४
सहजविमल [दानसूरिजी → जगराज पं. → सहज०]
रागमाला-शान्तिनाथस्तवन ३३.६३
सागरचन्द्र [१२मो सैको, वर्धमानसूरिजी (नागिलकुलीय) → सागर०]
नेमिनाथरास १०.३६
साधुहर्ष उपा.
भवनभूषण-भूषणभवनकाव्य ५०(१).४३
सारंग [चन्द्रगच्छ-महडाहडीयशाखा, पद्मसुन्दर गणि → सारंग]
सूक्तिद्वात्रिंशिका (वि. १६५०) ३७.२०
सालिग श्रावक
बलभद्रऋषिसज्झाय २४.४९
सिद्धसेनसूरिजी
सिद्धमातृका २५.१
सिद्धिचन्द्र उपा. [भानुचन्द्र उपा. → सिद्धि०]
न्यायसिद्धान्तमंजरीटिप्पनक (वि. १७०६) १४.५० मङ्गलवादः १०.१
सिद्धिविजयजी [हीरसूरिजी → कनकविजयजी → शीलविजयजी → सिद्ध.]
देवसूरिभास ४३.५८ देवसूरिभास ४३.६१
नेमिनाथभास ४२.३९ नेमिनाथभास ४२.४१

सुकवि
निह्नवविचारसज्झाय २४.५६
सुखसागर पण्डित
सत्तरभेदीपूजा-स्तबक ३९.३९
सूरचन्द्र उपा. [खरतरगच्छ, जिनभद्रसूरिपरम्परा, वीरकलश उपा. → सूर०, १७मानो उत्तरार्ध]
प्रणम्यपदसमाधानम् ३३.६९
सूरप्रभसूरिजी [१३मो सैको]
गौतमगणधरस्तव ३१.१८
सोमतिलकसूरिजी
शत्रुंजययात्रावृत्तान्त (वि. १३९१) १०.१०
पार्श्वनाथस्तोत्र (करहेटक) १४.४२
हंसविजयजी
शब्दार्थचन्द्रिका ५.१२
हंस साधु (साधुहंस ?)
हितशिक्षाबोलसज्झाय २४.५३
हंसराज
हीरसूरिगीत ३९.२३
हरसूर
जयकेसरीसूरिगीत ४३.६७ जयकेसरीसूरिभास ४३.६८
हरिकलश यति [राजगच्छ, धर्मघोषवंश]
मेदपाटदेशतीर्थमाला (१४मो सैको) ३७.३८
हरिभद्रसूरिजी [याकिनीमहत्तरासूनु]
साधारणजिनस्तवन ८.१००, २२.१ धूमावलीप्रकरण ५.१
हरिभद्रसूरिजी [वडगच्छ, श्रीचन्द्रसूरिजी → हरि०]
रूपककथा (चन्दप्पहचरियं-गत) १४.७०
हर्मन जेकोबी
पत्र ४१.२०

हर्षकल्लोलोपाध्याय-शिष्य [आगममण्डनसूरिजी → हर्ष०]
पार्श्वनाथस्तवन (उवसग्गहरं-समस्यापूर्ति) ६.६२
हर्षकुल गणि [लक्ष्मीसागरसूरिजी → सुमतिसाधुसूरिजी → हेमविमलसूरिजी → कुलचरण → हर्ष०]
कमलपंचशतिकास्तोत्र १५.३२ वसुदेवचुपइ (वि. १५५७) २८.५१
हर्षनन्दन उपा. [खरतरगच्छ, समयसुन्दर उपा. → हर्ष०]
जिनसागरसूरिगीतानि ५०(२).२५
हीर मुनि
सीलचूनडी ४८.५५
हीरसागर [खरतरगच्छ, जिनचन्द्रसूरिजी → हीर०]
स्तवनचोवीशी १९.११३
हीरसूरिजी [दानसूरिजी → हीर० (तपगच्छपति)]
नाभेयस्तवन ३.५ विबुधपदविज्ञप्ति ५.३९
वीरस्तुति (चतुर्थी) ११.६७
हेमरत्न [पूर्णिमागच्छ, देवतिलकसूरिजी → पद्मराज उपा. → हेम०]
भावप्रदीपः (वि. १६२८) ३९.७६
हेमविजय पण्डित [शुभविमल → अमरविजय → कमलविजय पं. → हेम०]
समतासज्झाय २४.५४ ऋषभशतक (वि. १६५६) २९.१
हेमहंस उपा.
आदिनाथस्तवन ७.८१

अज्ञातकर्तृक (८४)

प्राकृत : २४

३६३ पाखण्डीस्वरूपस्तोत्र-सावचूरि	२२.२७
३६३ पाखण्डीस्वरूपस्तोत्र	२१.३३
अष्टमहाप्रातिहार्यवर्णन	१४.३८
आदिनाथस्तोत्र	१५.२८
	३३.२१
आदिस्तव (ते धन्ना...)	२४.१
कामरूपपंचाशिका	१३.१
कुलमण्डनसूरिविज्ञप्ति (धर्मशेखर पण्डित ?)	२१.२६
गणधरहोरा	११.४३
गुणरत्नसूरिविज्ञप्ति (धर्मशेखर पण्डित ?)	२१.२८
चन्द्रप्रभस्तव (षड्भाषाबद्धः)	३३.२५
ज्ञानसागरसूरिविज्ञप्ति (धर्मशेखर पण्डित ?)	२१.२५
नेमिनाथस्तोत्र	१५.२९,
	३३.२३
पंचपरमेष्ठिस्तव (प्रश्नगर्भ)	५०(२).७३
पढमाणुओगनी उपलब्ध वाचना	६.१
पार्श्वनाथस्तोत्र	१५.३०,
	३३.२३
बूटडीश्राविका-व्रतग्रहणविधि	३६.१४
महत्तराचारित्रचूलाविज्ञप्ति (धर्मशेखर पण्डित ?)	२१.२९
महावीरस्तोत्र	१५.३१,
	३३.२४
राणीश्राविकागृहीत-द्वादशव्रतवर्णन	३.१५
लखमसिरीश्राविका-व्रतग्रहणविधि	३६.१९
वीतरागविनति	३५.१
व्यंग्यहीयाली	१६.२२४

शान्तिनाथस्तोत्र	१५.२८, ३३.२२
श्राविकाणां चतुर्विंशतिनमस्कार	३१.६१

संस्कृत : ३२

अनुमानमातृका-सावचूरि	७.८५
अर्हत्प्रवचनसूत्र-सविवरण	५.८८
ऋषभतर्पण	२१.१
गुरुस्तुति	३९.२३
चतुर्विंशतिजिननमस्कारकाव्यो	१३.१९
चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र	४८.३५
चित्रकाव्यानि	३३.४७
जिनस्तुति	८.१२५
जैनसन्ध्याविधि	१७.१६६
ज्ञानभण्डारप्रशस्ति	११.६
तीर्थकरस्तवन	२०.९६
दृष्टान्तशतक-१	१४.११
दृष्टान्तशतक-२	१४.१९
नन्दीश्वरादिस्तुतयः	१५.२७
नेमिनाथस्तवन (नानाछन्दोमय)	२३.२४
पार्श्वनाथलघुस्तवन (-जयसार ?)	७.८३
पार्श्वनाथस्तवन (मंगलपुरीय-नवपल्लव)	८.८४
पार्श्वनाथस्तुति (चारूपमण्डन)	११.१
भक्तामरस्तवसुखबोधिकावृत्ति	५०(१).२४
लघुकर्मविपाक-सस्तबक	८.८९
ललितविस्तर-लिपिशालासन्दर्शनपरिवर्तः-सानुवाद	१६.२१७
शत्रुंजयचैत्यपरिपाटिकास्तोत्र	२६.११६
शब्दसंचय	४९.१
सप्तनयविवरण	२१.१

समवसरणस्तोत्र १४.२७
सरस्वतीस्तोत्र ५.२७
सुप्रभातं-स्तवन २०.९७
सुभाषितसंचय २८.१
सूक्तावली १४.९२
स्तम्भनपार्श्वनाथद्वात्रिंशत्प्रबन्धोद्धारः ९.६१
हयाटाखाटकाव्य-सटीक ३७.१६
हाल्लारदेशचरित्र ११.३७

गुजराती व. भाषा : २८

अपभ्रंशदोहा ६.६८
अमृतधुन २०.९८
आदिनाथ-बाललीला (-सुधनहर्ष ?) ४०.३९
आदिनाथवीनती (-सुरेन्द्रसूरि ?) २९.५८
कृष्ण-बलभद्र-गीत २४.९८
गूढार्थ-दोहाओ ५०(२).५
गौतमगणधर-भास ९.७६
गौतमगणधर-भास १९.१३४
जगडूसाहछन्द १०.६८
जयकेसरीसूरिभास ४३.६३
जिनपूजाविधि २२.३२
धर्मसूरिबारमासा २.६९
निशालगरणुं (-सुर-सुरजी ?) १५.६८
पुण्यबत्रीसी ५०(२).१
पुष्पमालाचिंतवणी ४८.५६
बलदेवमुनिनी सज्झाय (-सकल ?) २३.५७
भोजनविच्छित्तिः ४९.१३१
मुनिचन्द्रसूरिगुरुगुण-गहुंली २५.७५
रतनगुरुरास २३.६३

शाहवीराना सुकृतवर्णननी प्रशस्ति-चउपइ	५.२८
सम्भवनाथकलश (-ज्ञान महोदय ?)	२७.५
सम्यक्त्वस्तवन (-पुण्य महोदय ?)	४५.५४
सिद्धस्वरूपसज्झाय	२४.७४
सुधर्मगणधर-भास	९.७६
सुधर्मगणधर-भास	१९.१३३
सुभटस्वाध्याय	४१.३२
हाटग्रहणकखतपत्र	५०(२).४५
हीरविजयसूरिसज्झाय	४२.४९

लेखनखण्ड

१. लेख (१४०)

गुजराती – हिन्दी

संशोधनात्मक (७०)

नाम	लेखक	अनु.	पृष्ठ
हेमचन्द्राचार्ये आपेल त्रण उदाहरणो विशे [१]	हरिवल्लभ भायाणी	१	५
थोडाक विशिष्ट शब्दो (अभिधानचिन्तामणि अने अनेकार्थसंग्रह गत)	नारायण कंसारा	१	१५
थोडाक अपभ्रंश परम्पराना भाषाप्रयोगो	बलवन्त जानी	१	१८
सिद्धहेमशब्दानुशासन-प्राकृत अध्यायनां उदाहरणोना मूळ स्रोत	हरिवल्लभ भायाणी	२	२५
द्व्याश्रय-काव्यना एक पद्यनी शंकास्पद वृत्ति परत्वे विचारणा (न यथा कोऽपि १-१५)	शीलचन्द्रसूरिजी	२	५०

(१) १. शमणे भयवं महावीले
२. जिण्णे भोयणमत्तेओ
३. सिंहपद-छन्दनुं उदाहरण

गांगेयभंगप्रकरण-सस्तबक - कृतिना कर्ता विशे ऊहापोह (यशोविजयजी के पद्मविजयजी ?)	शीलचन्द्रसूरिजी	२	५२
यतिदिनचर्या : वृत्तिनी गवेषणा	प्रद्युम्नसूरिजी	२	५८
जैन तीर्थस्थान तारंगा : एक प्राचीन नगरी	रमणलाल महेता, कनुभाई शेठ	३	४०
हीरसौभाग्यम्-नी स्वोपज्ञवृत्तिमां प्रयुक्त तत्कालीन गुजराती-देश्य शब्दो	प्रह्लाद पटेल	४	१
सालिभद्र-धन्ना-चरित-ना कर्ता तथा एने अनुषंगे केटलुंक	जयन्त कोठारी	४	१०
घवळी [१]	खोडीदास परमार	४	८६
उवहाण-पइट्ठा-पंचासग-परथी फलित थतो एक मुद्दो	शीलचन्द्रसूरिजी	५	५२
उमास्वाति-आर्यसमुद्रनां नवप्राप्त पद्यो विशे	मधुसूदन ढांकी	५	५४
केटलाक कथाघटको (९)	हरिवल्लभ भायाणी	५	६८
अंगविज्जा-मां निर्दिष्ट भारतीय ग्रीककालीन अने क्षत्रपकालीन सिक्का	हरिवल्लभ भायाणी	६	८३
प्रियतमा वडे प्रियतमनुं स्वागत	हरिवल्लभ भायाणी	६	८७
शत्रुंजयमंडन-ऋषभदेवस्तुति-नी प्राप्त वधु हस्तप्रतो	भुवनचन्द्रजी	६	११४
जैन-गुर्जर-कविओ (संशोधक-जयन्त कोठारी)नी प्रकाशन वेळाना त्रण लेखो			
- अखण्ड दीवानो विस्तरतो उजाश	प्रद्युम्नसूरिजी	९	९४
- कालजयी साहित्यकृतिना पुनरुद्धारकनुं अभिवादन	शीलचन्द्रसूरिजी	९	९७
- समुद्धारयज्ञनी पूर्णाहुति	हरिवल्लभ भायाणी	९	९८

१. १७.१६२

हस्तप्रतनी प्रशस्तिमां प्राप्त नगरो के गामो अंगेनी ऐतिहासिक सामग्री	कनुभाई शेठ	१०	७३
हरिभद्रसूरिविरचित समसंस्कृतप्राकृत जिनसाधरणस्तवन-नो आस्वाद	पारुल मांकड	११	२८
पंचसूत्रना कर्ता कोण, चिरन्तनाचार्य के आ. हरिभद्र ?	शीलचन्द्रसूरिजी	११	७१
आजना विज्ञानयुगमां जैन जीवविचारणानी आहारक्षेत्रे प्रस्तुतता	नारायण कंसारा	११	१०२
कल्पसूत्र में भद्रबाहुप्रयुक्त 'याग'शब्द	शीलचन्द्रसूरिजी	१४	१०६
सारस्वतोल्लास : एक दृष्टिपात	भुवनचन्द्रजी	१६	२४०
जैन परम्परामां परिचारणाभेदविचार	नगीन शाह	१७	२००
कौशिक : एक अप्रसिद्ध वैयाकरण	नीलांजना शाह	१७	२०३
मध्यकालीन गुजराती साहित्यना इतिहासलेखननुं स्वरूप	बलवन्त जानी	१८	९१
सिद्धशिला	मधुसूदन ढांकी	१८	१०४
वसुधारा धारणी अने 'वसो'नुं वसुधारामन्दिर	शीलचन्द्रसूरिजी	२०	१०३
आर्यवेद : जैनवेद	शीलचन्द्रसूरिजी	२१	४५
स्त्रीतीर्थंकर मल्लिनाथनी प्रतिमाओ	शीलचन्द्रसूरिजी	२३	६९
षट्प्राभृतमां दन्त्यनकारना प्रयोग	शोभना शाह	२४	८८
षट्प्राभृतमां विभक्तिरहित शब्दरूप	शोभना शाह	२४	९२
चाणक्यनुं एक दक्षिणी कथानक (वड्डाराधनागत)	शीलचन्द्रसूरिजी	२७	७३
लिंगप्राभृत, शीलप्राभृत, बारस-अणुपेक्खा और प्रवचनसार की भाषा के कतिपय मुद्दों का तुलनात्मक अभ्यास	शोभना शाह	२८	३६

जैन कथासाहित्य	हसु याज्ञिक	२९	७४
तरंगवती कथा तथा पादलिप्तसूरि : जैन के अजैन ?	शीलचन्द्रसूरिजी	३४	४३
समयनो तकाजो : साम्प्रदायिक उदारता	शीलचन्द्रसूरिजी	३५	७५
परमयोगीराज आनन्दघनजी महाराज अष्टसहस्री पढ़ाते थे	विनयसागरजी	३६	२९
संशोधन विरुद्ध कट्टरता : घेरी चिन्तानो विषय	शीलचन्द्रसूरिजी	३६	४२
श्रीमद्भगवद्गीता के विश्वरूपदर्शन का जैन दार्शनिक दृष्टि से मूल्यांकन	नलिनी जोशी	३७	४९
सत्तरभेदीपूजा-सस्तबक : अवलोकन	शीलचन्द्रसूरिजी	३९	२४
भिक्षाविचार : जैन तथा वैदिक दृष्टि से	अनीता बोथरा	४०	५४
जैन और वैदिक परम्परा में वनस्पति विचार	कौमुदी बलदोटा	४०	६७
जैन आगम अने मांसाहार : ऐतिहासिक चर्चा	शीलचन्द्रसूरिजी	४१	१
हर्मन जेकोबीना लेखनो जवाब	गम्भीरविजयजी	४१	५
निगोदथी मोक्ष सुधी	पद्मनाभ जैनी	४१	३६
जय केसरियानाथजी	विनयसागरजी	४१	४५
प्राकृत-जैन-साहित्य में उपलब्ध 'धर्म' शब्द के विशेष अर्थो की मीमांसा	अनीता बोथरा	४२	५३

अंजना : वाल्मीकि और विमलसूरि के रामायणों में वर्णित	कौमुदी बलदोटा	४२	६४
पाली (बौद्ध) आगमोमां चातुयाम-संवर	पद्मनाभ जैनी	४४	१०६
पितर-संकल्पना की जैनदृष्टि से समीक्षा	अनीता बोथरा	४५	६८
गूंगो गोळ्तणा गुण गाय (ज्ञानमंजरी-प्रस्तावना)	शीलचन्द्रसूरिजी	४५	९१
जैन श्रावकाचार में पन्द्रह कर्मदान : एक समीक्षा	कौमुदी बलदोटा	४६	३७
जैन श्रावकाचार में पन्द्रह कर्मादान : एक समीक्षा : इस पर कुछ विचार	कल्याणकीर्तिविजयजी	४६	५०
मध्यकालीन गुजराती साहित्य : प्रतीक्षा, पडकार अने सम्प्राप्ति	कान्तिभाई शाह	४६	५६
आयुर्वेद तथा भगवान् महावीर का गर्भापहरण	जगदीशचन्द्र जैन	४६	६६
भगवान् महावीर का गर्भापहरण : एक वास्तविक घटना	शीलचन्द्रसूरिजी	४६	७९
ध्यानदीपिका (- उपा. सकलचन्द्रजी) संग्रहग्रन्थ है	विनयसागरजी	४७	७६
अर्धमागधी आगमसाहित्य में श्रुतदेवी सरस्वती	सागरमल जैन	४८	६०
जैनधर्म में सरस्वती	सागरमल जैन	४८	६९
चतुर्विंशतिजिनस्तुति के प्रणेता चारित्रसुन्दरगणि ही हैं	विनयसागरजी	४९	१२७
नारद के व्यक्तित्व के बारे में जैन ग्रन्थों में प्रदर्शित सम्भ्रमावस्था	कौमुदी बलदोटा	४९	१४४
नारद के व्यक्तित्व के बारे में जैन ग्रन्थों में प्रदर्शित सम्भ्रमावस्था : इस लेख पर कुछ विचार	कल्याणकीर्तिविजयजी	५०(१)	१४२

मरमी सन्त आनन्दघन अने तेमने परम्पराप्राप्त जैन चिन्तनधारा	नगीन शाह	५०(२)	५२
मौखिक अने लिखित परम्पराओ सन्दर्भे बोले बांधनारनी कथाओ	हसु याज्ञिक	५०(२)	६१
अर्धमागधी भाषा का उद्‌भव एवं विकास	सागरमल जैन	५०(२)	८४
क्या 'आर्यावती' जैन सरस्वती है ?	सागरमल जैन	५०(२)	९५
हिन्दु और जैन व्रत : एक क्रियाप्रतिक्रियात्मक लेखाजोखा	अनीता बोथरा	५०(२)	१०३
वर्त्तमानकालीन संशोधन-सम्पादन युगना आद्य प्रवर्त्तक : आगमप्रभाकर पू. मुनिराजश्री पुण्यविजयजी	जम्बूविजयजी	५०(२)	२५८

प्राचीनग्रन्थोना स्वाध्याय-परिचयलेख (१६)

नाम	लेखक	अनु.	पृष्ठ
सूडाबहोंतेरी / रसमंजरी (-रत्नसुन्दरसूरिजी) - परिचय	कनुभाई शेठ	१	२०
धर्मरत्नकरण्डक (-वर्धमानसूरिजी) - परिचय	मुनिचन्द्रसूरिजी	३	६३
स्याद्वादभाषा (-शुभविजयजी) - परिचय	नारायण कंसारा	८	१०२
तारागण (-बप्पभट्टिसूरिजी) - परिचय	हरिवल्लभ भायाणी	१३	५०
लोकतत्त्वनिर्णय (-हरिभद्रसूरिजी) - समीक्षात्मक अध्ययन	जितेन्द्र शाह	१७	१९०
योगदृष्टिसमुच्चय (-हरिभद्रसूरिजी) - महत्त्वनी लाक्षणिकताओ	नगीन शाह	१८	१८८
ललितविस्तरा (-हरिभद्रसूरिजी) - दार्शनिक मतो	शीलचन्द्रसूरिजी	२२	५३

प्रबन्धकोश (-राजशेखरसूरिजी) - नोंधपात्र वातो	शीलचन्द्रसूरिजी	२३	७९
प्रबन्धचिन्तामणि (-मेरुतुंगसूरिजी) - ध्यानपात्र बाबतो	शीलचन्द्रसूरिजी	२४	१०९
पंचवस्तुक (-हरिभद्रसूरिजी) - ध्यानपात्र प्रयोगो	शीलचन्द्रसूरिजी	२५	१०३
धर्मलाभशास्त्र (-मेघविजयजी उपा.) - परिचय	विनयसागरजी	३०	१
भुवनसुन्दरीकथा (-विजयसिंहसूरिजी) - विशिष्टवातो	शीलचन्द्रसूरिजी	३४	३५
सप्तसन्धानकाव्य (-मेघविजयजी उपा.) - परिचय	विनयसागरजी	३५	७०
अष्टलक्षी (-समयसुन्दर उपा.) - परिचय	विनयसागरजी	३६	३६
निर्णयप्रभाकर (-बालचन्द्राचार्य, ऋद्धिसागरोपाध्याय) - परिचय	विनयसागरजी	४८	७४
आर्षभीविद्या - परिचय	विनयसागरजी	५०(२)	१२३

अंजलिलेख (१७)

नाम	लेखक	अनु.	पृष्ठ
मैं कभी भूलूँगा नहीं	राजाराम जैन	१७	२२२
भारतीय तत्त्वविद्याना अजोड विद्वानने स्मरणांजलि	शीलचन्द्रसूरिजी	१७	२२६
नखशिख विद्यापुरुष	भुवनचन्द्रजी	१८	२०६
एमां बे वात छे	हसु याज्ञिक	१८	२०८
विरल विद्यापुरुष	कुमारपाल देसाई	१८	२२४

विद्यानो मोजभर्यो व्यासंग	जयन्त कोठारी	१८	२२९
अगणित पंखीओना आश्रयरूप एक वडलो	जयन्त कोठारी	१८	२३७
अनेक दुर्घटनाओमांथी सर्जायेली घटना	उत्पल भायाणी	१८	२४७
वीसमी सदीना हेमचन्द्राचार्य	सुरेश दलाल	१८	२६३
अनन्य रसज्ञता-विद्वत्ताना स्वामी (- जन्मभूमिप्रवासी)	-	१८	२६६
भायाणीसाहेबनी चिरविदाय	शीलचन्द्रसूरिजी	१८	२७०
जयन्त-कोठारीनी पण चिरविदाय	शीलचन्द्रसूरिजी	१८	२७१
डो. भायाणीनुं मध्यकालीन-साहित्य-अभ्यासक्षेत्रे प्रदान	हसु याज्ञिक	३२	९१
फ्रांस में जैन धर्म व साहित्य में स्वर्गीय प्रोफ़ेसर डाक्टर श्रीमती कौलेट काइया का योगदान	नलिनी बलवीर	४३	६९
जम्बूविजयजी महाराजने स्मरणांजलि	शीलचन्द्रसूरिजी	५०(२)	२३६
श्रुतधर-परम्पराना उज्ज्वल नक्षत्र	भुवनचन्द्रजी	५०(२)	२४०
श्रद्धासुमन	विनयसागरजी	५०(२)	२४३

English Articles (37)

Artical	Author	Anu.	Page
Jain Monumental paintings of Ahmedabad	Shridhar Andhare	6	91
A Glossary of Rare and Non-Standard Sanskrit Words of the Kathāratnākara of Hemavijayagaṇi	H. C. Bhyani	9	106
Desīs Employed in Padma Vijaya's Samarāditya-Kevalī-Rās	Vijay Pandya (Tra.-Rajhans Vijay)	10	89
Notes on a few words from Bolléés Glossary to पिंडनिज्जुत्ति and ओहनिज्जुत्ति	H. C. Bhayani	10	94
Some sporadic notes on the Bṛhaddesī	H. C. Bhayani	10	100
Love or Leave ? Bhartṛhari's (?) Dilemma	Ashok Aklujkar	17	1
Alliteration of the Word-initial consonant in Mordern Gujarati Compounds	H. C. Bhyani	17	32
Some folk-etymologies in the Anuyogadvārasūtra	H. C. Bhyani	17	43
Comparative Study of the Language of the Ācārāṅga and the Isibhāsiyāiṁ both edited by Prof. Schubring	K. R. Chandra	17	47
Historio-cultural Data as Available from Samarāicca Kahā	Rashesh Jamindar	17	52
Śrimad Rājacandra on the Necessity of a Direct Living Sadguru	N. M. Kansara	17	66

Some Aspects of the Kaumudīmitrānṇnda	V. M. Kulkarni	17	75
On Sthātūś ca rātham in the Ṛgveda 1.70.7	M. A. Mehendale	17	89
Jaina Concept of Memory	Mohanlal Mehta	17	94
The Jaina Universe in a Profile of Cosmic Man	Suzuko Ohira	17	101
Śaṅkarācārya and the Taittīriyopaniṣad	Vijay Pandya	17	110
Jain Biology	J. C. Sikdar	17	122
The Gandhari Prakrit Version of the Rhinoceros Sūtra	J. C. Wright	18	1
Merutuṅga and Vikrama	A. K. Warder	18	16
Two Peculiar Usages of the Particle Kira/Kiri in Apabhraṁśa	Herman Tieken	18	18
Retention of Medical consonants in the Grammar of Ardhamāgadhī by Hermann Jacobi	K. R. Chandra	18	23
Ajaya, ajeya and ajayya	M. A. Mehendale	18	27
On Restoring Corrupt Prakrit Verses	V. M. Kulkarni	18	31
Some addenda et Corrigenda to the 'Glossary of Selected Words of Ernst leumann's Die Āvaśyaka Erzälungen.	Thomas Oberlies	18	37
An Early Example of a Late Middle Indo-Aryan Post Position ?	Paul Dundas	18	41
Hanumannāṭakam : Date and Place of its Origin	Vijay Pandya	18	46

The two rare icons of Parshwa Yaksha	Balaji Ganorkar	18	55
Dānalakṣaṇa or Dānaśāsana by Śrīvasupūjyarṣi	Jagannatha	42	71
Perculiarities of Jain Mahārāṣṭri Literature	Nalini Joshi	46	85
The Jain Versions of Rāmāyaṇa	Nalini Joshi	47	63
Models of Conflict-resolution and Peace in Jain Tradition	Nalini Joshi	50(2)	131
On nouns with Numerical Value in Sanskrit	Willem Bollee	50(2)	144
Lexicographical Notes on the Taraṅgalolā	Thomas Oberlies	50(2)	155
Truthfulness and Truth in Jaina Philosophy	Peter Flugel	50(2)	166
The Cult of the Jakhs in Kutch	Francoise Malligon	50(2)	219
Muni Jambuvijayaji Homage and reminiscences	Nalini Balbir	50(2)	246
Report on the accident of Param Pujya Munishri Jambuvijayaji Maharaj Saheb	Hiroko Matsuoka	50(2)	249

२. टूंकनोंध (९२)

गुजराती, हिन्दी (८०)

नाम	लेखक	अनु.	पृष्ठ
प्रथमानुयोग-ना चौदमी शताब्दी लगभगना बे उल्लेख	शीलचन्द्रसूरिजी	१	१
पूर्वीय प्राकृतोना एक तद्धित प्रत्यय विशे (क)	के. आर. चन्द्र	१	२
सम्बन्धक भूतकृदन्तनो प्रत्यय - इउ	के. आर. चन्द्र	१	३
श्रद्धा, प्रसाद अने अध्यात्मप्रसाद	नगीन शाह	२	८
ढोल्ला सामला (सिहे. ८-४-३३०) नो पाठ अने छन्द	हरिवल्लभ भायाणी	२	१८
जिवँ जिवँ तिक्खालेवि (सिंहे ८-४-३९५)नो पाठ अने अर्थ	हरिवल्लभ भायाणी	२	२०
जिवँ सुपुरिस तिवँ (सिहे. ८-४-४२२) नो पाठ अने अर्थ	हरिवल्लभ भायाणी	२	२०
छन्दोनुशासन-गत प्राकृत छन्दप्रकार द्विभंगीनां उदाहरणोनी पाठचर्चा	हरिवल्लभ भायाणी	२	२१
काव्य-गुम्फ	हरिवल्लभ भायाणी	२	२३
त्रण मूल्यवान पद्यो[१]	शीलचन्द्रसूरिजी	३	२१
सिद्धसेनदिवाकरना चरितमां मळतुं एक अपभ्रंश पद्य (अणफुल्लिय फुल्ल...)	हरिवल्लभ भायाणी	३	४३
धर्ममहिमानुं एक सुभाषित (धम्मु सामिउ सयल...)	हरिवल्लभ भायाणी	३	४३

१) रूप्यकच्चोलकस्थेन (-उमास्वाति), गव्यहव्यदधि० (-उमास्वाति), सदसेण धवलवत्थेण (-आर्य समुद्र) ४.१६, ५.५४

वाचक उमास्वातिजीना पद्य विशे[२] (रूप्यकच्चोलकस्थेन...)	महाबोधिविजयजी	४	१६
वाचक उमास्वातिजीनुं एक वधु पद्य[३] (परिभवसि किमिति लोकम्...)	शीलचन्द्रसूरिजी	४	१७
धर्मसार	शीलचन्द्रसूरिजी	४	१८
केटलांक प्रसिद्ध पद्योनां समान्तर जूनां स्वरूप	शीलचन्द्रसूरिजी	४	१८
एक गाथाना पाठ विशे (न दुक्करं अंबयलुंबितोडणं)	शीलचन्द्रसूरिजी	४	१९
तूतीनामा-नां बे जैन चित्रो	शीलचन्द्रसूरिजी	४	२०
अपभ्रंश छन्द भ्रूवक्रणक	हरिवल्लभ भायाणी	४	२३
झंबडक-गीत	हरिवल्लभ भायाणी	४	२४
उद्दामदण्डक छन्दनुं एक प्राकृत उदाहरण	हरिवल्लभ भायाणी	४	२५
बे प्राचीन सुभाषितो उत्तरकालीन साहित्यमां[४]	हरिवल्लभ भायाणी	४	२६
मूलशुद्धिवृत्ति-मांनुं एक सुभाषित - वाया सहस्समइया	हरिवल्लभ भायाणी	४	२८
एक कहेवतरूप उक्तिनुं पगेरुं -दियहाइं पंच दह वा जोव्वणं	हरिवल्लभ भायाणी	४	२८
नीलीराग-जैन	हरिवल्लभ भायाणी	४	२९
सातवाहनकशास्त्र	हरिवल्लभ भायाणी	४	३०
पुष्पदूषितक, नन्दयन्ती, भद्राभामिनी	हरिवल्लभ भायाणी	४	३१
वाचक उमास्वाति (?)नुं वधु एक पद्य (शौचमाध्यात्मिकं त्यक्त्वा....)	शीलचन्द्रसूरिजी	५	६३
शुं आ गप्पुं गणाय ?	शीलचन्द्रसूरिजी	५	६३

२) ५.५४ ३) ५.५४ ४) तिक्खा तुरिअ न माणिआ, किवणाणं धणं णाआणं

नखच्छोटिका, ढौक, सुखासिका / दुःखासिका, ललते	शीलचन्द्रसूरिजी	५	६५
पाण्डवचरित्र-बालावबोध-ना थोडाक शब्दप्रयोगो विशे	भुवनचन्द्रजी	५	६६
मीण-प्रत्ययवाळां अर्धमागधी वर्तमान कृदन्तो	हरिवल्लभ भायाणी	६	७६
जुगाइजिणिंदचरियं-ना एक पद्यनो आधार	हरिवल्लभ भायाणी	६	९०
उपाध्याय श्रीयशोविजयजीना अन्तिमसमय तथा समाधिस्थल विशे	शीलचन्द्रसूरिजी	७	१०२
हेमचन्द्राचार्यनी शिष्यपरम्परा विशे	शीलचन्द्रसूरिजी	७	१०४
अजारा तीर्थना चैत्यनी प्राचीनता	शीलचन्द्रसूरिजी	७	१०५
उवहाण-पइट्ठा-पंचासग-ना कर्ता विशे ऊहापोह	शीलचन्द्रसूरिजी	७	१०६
मुनि प्रेमविजयजीनी टीपना गुजराती शब्दो	भुवनचन्द्रजी	७	१०७
हेमचन्द्राचार्यनी काव्यव्युत्पत्तिसूचक एक वधु उदाहरण - एतम्मि महायत्ते.... (देशी० ६-११०)	हरिवल्लभ भायाणी	७	११०
प्रबन्धचिन्तामणि-गत एक अनुप्रासनी युक्तिवाळुं पद्य - शीतत्रानपटी...	हरिवल्लभ भायाणी	७	१११
सिद्धहेम-ना एक अपभ्रंश दोहानुं अर्वाचीन रूपान्तर - सामीपसाउ सलज्जु...	हरिवल्लभ भायाणी	७	११२
शत्रुंजयमंडन-ऋषभदेव-स्तुति : थोडी पूर्ति	जयन्त कोठारी	७	११४
चंदप्पहचरियं (-हरिभद्रसूरिजी) नी एक दृष्टान्तकथा	सलोनी जोषी	७	११६
ललितांगचरित्र : एक उत्तरकालीन विरल रासाबन्ध	हरिवल्लभ भायाणी	७	१२९

एक नोंधपात्र पुस्तकनी प्रशस्ति	शीलचन्द्रसूरिजी	८	८०
हेमचन्द्राचार्ये प्रतिष्ठित प्रतिमा	शीलचन्द्रसूरिजी	८	८१
ओष्ठय म् पछी उ के ओ-नो अ	हरिवल्लभ भायाणी	८	११९
बे कहेवत[१]	हरिवल्लभ भायाणी	८	१२०
विधवाने रातो साडलो पहेरवानी रूढि	हरिवल्लभ भायाणी	८	१२०
पृथ्वीराज-रासो-नी मूळ भाषा	हरिवल्लभ भायाणी	८	१२१
व्यवहारभाष्य-मांना केटलाक देश्य शब्दो पर टिप्पण	हरिवल्लभ भायाणी	८	१२८
व्यवहारभाष्य-नी एक गाथानी पाठचर्चा - लक्खणजुत्ता पडिमा... (२६३५)	शीलचन्द्रसूरिजी	१०	७७
हेमचन्द्राचार्यरचित कृष्णगोपीना प्रणयने लगतुं एक मुक्तक - रंजणथणिमरयवलिं (१९७४, देशीनाममाला)	हरिवल्लभ भायाणी	१०	७८
बे परम्परानो एक समान पौराणिक कथाघटक	हरिवल्लभ भायाणी	१०	८८
श्राद्धदिनकृत्यना कर्ता विशे ऊहापोह	शीलचन्द्रसूरिजी	१४	११८
गुजरातीमां महाप्राण व्यंजननो अल्पप्राण थवो	हरिवल्लभ भायाणी	१४	१२४
बीरबलनां रींगणां	शीलचन्द्रसूरिजी	१५	९६
मस्तकलेख	शीलचन्द्रसूरिजी	१५	९७
पांच पंक्तिनो कलश	शीलचन्द्रसूरिजी	१५	९८

१) घी ढोलायुं ते खीचडीमां, चणानी जेम मरी न चवाय.

वाचक उमास्वातिनां बे पद्य	शीलचन्द्रसूरिजी	१८	१९४
हीरविजयसूरिजीना समाधिस्थल विषे	शीलचन्द्रसूरिजी	१८	१९५
यशोविजयवाचकनां पगलां	शीलचन्द्रसूरिजी	१८	१९८
एक अप्रकट मूर्तिलेख	शीलचन्द्रसूरिजी	१८	१९८
भगवान महावीरना आहार सम्बन्धी भ्रमणा	शीलचन्द्रसूरिजी	१९	१३५
योगबिन्दुवृत्तिना (गा. ४२७) एक पाठनी समस्या	शीलचन्द्रसूरिजी	२०	१०९
षड्दर्शनसमुच्चय-ना कोकुलकाण्ठेविद्धि० वाक्य विशे	शीलचन्द्रसूरिजी	२१	६३
हेमाचार्यकृत ज्ञानसार	शीलचन्द्रसूरिजी	२२	६२
विनयविजयजी उपाध्यायनी शिष्यपरम्परा विशे	शीलचन्द्रसूरिजी	२२	६२
बे भिन्न कर्ताओनी तुल्य कल्पनानां बे उदाहरण	शीलचन्द्रसूरिजी	२४	१०६
जैन धर्म विशे भ्रान्त धारणाओ	शीलचन्द्रसूरिजी	२५	१०६
पतियाला-ना राजमहेलमां जैन भींतचित्र	शीलचन्द्रसूरिजी	२५	१०६
ते धन्ना - स्तोत्र विशे	शीलचन्द्रसूरिजी	२५	१०८
गुजरातना इतिहासलेखनमां रही जता मुद्दाओ (- नरोत्तम पलाण, बुद्धिप्रकाश,मार्च-२००४) लेख विशे चर्चा	हसु याज्ञिक, शीलचन्द्रसूरिजी	२९	९६
उपधानप्रतिष्ठापंचाशक विषे	शीलचन्द्रसूरिजी	३०	६२
कन्धारान्वय विषे	शीलचन्द्रसूरिजी	३०	६४
भुवनहिताचार्य	विनयसागरजी	३२	८९

निष्कुलानन्दकृत शियळनी नव वाडनां पदो विषे	शीलचन्द्रसूरिजी	३५	७९
नेशनल मिशन फोर मेन्युस्क्रिप्ट विषे	शीलचन्द्रसूरिजी	३५	७९
७४१ वर्ष जूनुं एक समवसरण	भुवनचन्द्रजी	४५	१०५
पुष्पमालाचिंतवणी-मां सूचित क्रीडा अंगे विवरण	त्रैलोक्यमंडनविजयजी	४९	१४१

English (12)

Name	Author	Anu.	Page
Ālia - tied	H. C. Bhyani	7	118
Prakrit Subhāshitas from Rāmchandra's Lost Sudhākalaśa	H.C. Bhyani	7	130
A Note on उल्लण, कुसुण/कुसण, तीमण	H.C. Bhyani	9	102
bhadram te and bhadanta	H.C. Bhyani	9	104
Some Noteworthy Expressions	H.C. Bhyani	9	112
Notes on some Prakrit Words तुप्प, चुप्प, परिकट्टलिय	H. C. Bhyani	10	105
Saraha's मातृकाप्रथमाक्षरदोहक in Apabhraṁśa	H. C. Bhyani	12	93
Were Śānti and Bhusaka the same or different ?	H. C. Bhyani	12	97
One more instance of the Jhambaḍaka Song in Apabhrāṁśa	H. C. Bhyani	12	100
On the Names of Some siddha-Nāthas	H. C. Bhyani	12	102
Sporadic Notes on Some Terms from the Nṛttaratnāvali	H. C. Bhyani	13	57
Notes on some words - मोटा, छोटा, गोटो, पोट, मोट, एंट	H. C. Bhyani	14	135

३. सूचि (१३)

नाम	कर्ता	अनु.	पृष्ठ
पढमाणुओग-नां विशेषनामो	शीलचन्द्रसूरिजी	७	५९
देशीनाममालाउद्धारः	विमलसूरिजी - सं.दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी	१६	३२
शब्दयादी	सं. कान्तिभाई शाह	४६	२८
समुद्रवहाणसंवाद-पाठसंशोधननोंध	शीलचन्द्रसूरिजी	२	१
प्रमाणसार-पाठभेदनोंध	शीलचन्द्रसूरिजी	२७	६७
विशेषावश्यकभाष्य-नां शुद्धिपत्रक	शीलचन्द्रसूरिजी	३०	७२
		३२	१०२
		३४	४९
		३६	५०
सांकळियुं : अनु. १ - १२	दीप्तिप्रज्ञाश्रीजी, चारुशीलाश्रीजी	१२	१०५
,, अनु. १३ - १९		१९	१४४
,, अनु. १९ - २६		२७	९५
,, अनु. २७ - ४१		४१	५८
रोयल एसिआटिक सोसा.-लण्डन-टोड हस्तप्रतसंग्रह-गत नोंधपात्र हस्तप्रतो	हरिवल्लभ भायाणी	८	१३०
दलसुखभाई मालवणियानी साहित्योपासना	जितेन्द्र शाह	१७	२३३
हरिवल्लभ भायाणीनां प्रकाशित मुख्य पुस्तको	-	१८	२७५

४. शब्दचर्चा (१४०)

शब्द	अर्थ	अनु.	पृष्ठ
अउगउ-उगउ G	मूंगो	२	१०
अउगनाइ G	ध्यानमां न लेवुं	२	९
अउले खाले वहै G	ऊभरावुं	२	९
अउल्हाइ G	खिन्न थवुं	२	९
अकड G	-	१४	१२६
अकबन्ध G	-	१४	१२७
अखाडो G	शौर्यस्पर्धानुं स्थान, क्रिडाभूमि	२	१०
अघरणी G	सीमंत	१४	१२८
अघरुं G	-	१४	१२०
अछिवउं-अछीउं G	रहेवुं	२	११
अछूतउ G	अस्पृश्य	२	११
अज्जुका S	गणिकानुं सम्बोधन	१०	७९
अधिवासियां G	तैयार कर्यां	३	३३
अनिवड G	अनात्मीय	३	३३
अनुभाव G	गौरव	३	३४
अप्रमाण G	असिद्ध	३	३५
अबाह G	अत्यन्त	३	३६
अभोखउ-आभोखउ-अभोखण G	सत्काररूपे पाणीनुं सिंचन	३	३६
अमलीमाण G	अखंडितमानवाळो	३	३८
अमाइ-अमामो-अमाणुं-अमान G	अमाप	३	३८
अरित्र S	सुकान	९	९१
असङ्गल A	असाधारण	३	२३
आंबलु G	पति, प्रियतम	६	७८
आथर G	गधेडा पर बांधवामां आवती गोदडी	१४	१२०
आदह् P	निन्दा	१	११

उउबद्ध-उडुबद्ध A	वर्षाकाल सिवायनो ८ मासनो समय	७	९९
उक्कुक्कुर् P	ऊंचा ऊठवुं	१	१३
उट्ठुब्भइ P	उपेक्षाथी पड्युं रहेवा देवुं	२	१५
उड्डुक्किय P	दांतथी कापीने ऐंठुं करवुं	७	१०१
ए !-एय !-ओ भाई ! G	-	११	९५
ओडवो G	पाणी माटेनो खाडो	१४	१२१
ओलिम्भा D	ऊधई	१०	८०
ओलुं, पेलुं, अली, अल्या G	-	११	९४
कटरि P	आश्चर्य	१	०२
कडितल्ला D	एकबाजु धारवाळुं वांकुं लोढानुं आयुध	३	२४
कसरक्क P	चावतां थतो अवाज	८	१०८
कियाडिया P	काननी बुट्टी	६	८१
कुटर S	घोडो	१०	८२
केकाण S	कय्कान प्रदेश	८	१०९
क्षेपणी S	हलेसुं	९	९१
खमण G	छीणीने करेलो छूंदो	१३	५३
खामणुं G	छीछरो क्यारो	१३	५३
खेह P	धूळ	८	११०
गब्दिका S	गादी	४	३९
गर्त V	गादी	४	३९
गुण्ड् P	धूळथी खरडवुं	१०	८७
गूंगणुं G	नाकमांथी बोलवानी टेववाळुं	८	१११
गूंगळावुं G	श्वास रूंधावो	८	१११
घउंली-गूहली G	-	३	२८
घायां-पडघायां G	-	१३	५३
चंचोळवुं G	वारंवार चोकवुं	८	११३
चक्कोडा D	अग्निभेद	३	२५

चणवुं-चुगना G	चांचथी एक एक दाणो पकडी गळी जवानी पक्षीनी क्रिया	२	१७
चपटुं, चांपवुं, चीपवुं, चीवडो व.G	-	८	११२
चाउरि D	गादी	४	३९
चामरी S	घोडो	१०	८२
चेलक्नोपम् S	कपडां तरबोळ बनी जाय तेटलुं (वरसवुं)	२	१४
छारुं G	इंटवाडानो घसाइने पडेलो भूको	१४	१२१
छाल-छीलटुं-छोलवुं G	-	१४	१२९
छीणवुं G	-	१३	५३
छेअ P	अन्त, हानि	४	३९
छो-अछो-भले G	-	४	४१
जड G	-	१३	५४
जाखल-सेखल G	यक्षप्रतिमा-नागप्रतिमा	४	४१
जूठुं G	ऐठुं	१३	५५
झडि G	निरन्तर वृष्टि	१३	५५
झपट, झापट व. G	-	८	११३
झाड G	वृक्ष	१३	५५
झाडवुं G	वाळवुं	१३	५५
झाडो G	दस्त	१३	५५
झूमवुं, झूमखो, झूमणुं व. G	-	८	११४
टोयली G	लोटी	१४	१२२
ठोंसो, ठांसवुं, ठसवुं, ठेस G	-	८	११५
डंगा G	लाठी	१५	१००
ढकोसलां G	आभास, कपटव्यवहार	१५	१००
ढग G	ढगलो	१५	१००
ढगरो G	कूलो	१५	१००
ढगो G	आखलो	१५	१००
ढब्बु G	बे पैसानी किंमतनो सिक्को	१५	१००

ढांकवुं G	-	१५	१०१
ढाढी G	एक धंधादारी ज्ञाति	१५	१०१
ढींढुं G	कूलो	१५	१०२
ढीको-ढींको G	धब्बो	१५	१०२
ढीम-ढीमचुं-ढीमणुं G	जाडुं मोटुं गठ्ठुं	१५	१०२
ढेक G	कूलो	१५	१०२
ढेबरुं G	-	१५	१०३
ढेसडो G	पोदळो	१५	१०३
ढोल G	-	१५	१०३
ढोसो G	-	१५	१०४
तणी G	दोरडी	४	४३
तम्बा P	गाय	१	१४
तलवट G	-	८	११७
तल्लोविल्लि D	तरफडाट	३	३०
ताइ A	तेना जेवा	७	१००
तोडहिआ P	एक प्रकारनो ढोल	४	४४
थपथपी, थापडी, थपाट G	-	८	११६
दीप S	दीवो	८	१०८
दुली D	काचबो	४	४५
नकळंक G	-	८	११६
नन्द G	वाणियो	३	२६
पडछो G	शेरडीने छेटे पांदडानो भाग	१३	५५
पराठ G	बकराना वाळनी दोरी	१४	१२२
पाणद्धि P	शेरी	२	१५
पुरिसादाणीए A	आप्तपुरुष	७	९९
पोपट, पोपचुं G	-	८	११६
प्रत्यूषाण्ड S	सूर्य	१०	८६
प्रथमालिका S	शिरामण	६	८१
फेट्टा P	ढींक	१	१३

बले P	निर्धारण	१	९
बालग्गकवोदपालिआ, बालग्गपोतिआ P	-	१०	८५
भेञ्जलअ P	भीरु	१	१४
भोप्पय P	भूवो	१४	११७
मळी G	तेलनुं कीटुं	८	११७
मुग्गड-मोग्गड D	अपुत्र विधवानी जप्त कराती मालमिलकत	१०	८३
मोरउल्ला D	व्यर्थ	२	१५
युगन्धरी S	जुंधरी	३	२७
रम्प् P	छोलवुं	३	३१
रांझण G	सणका मारे तेवो पगनो रोग	८	११७
लजामणी G	एक छोड	६	८०
वक्तीतीती G	टिटोडी	१४	१२३
ववठावुं, वावठवुं G	उपरथी पवन फूटतां सूकातुं	८	११८
वाणजु G	वेपारी	८	१११
वामलूर P	ऊधईनो राफडो	१०	८०
वावलवुं G	दाणामांथी फोतरां छूटां पडे ए माटे अनाजने अद्धरथी थोडुं थोडुं ढोळवुं	८	११९
वाहुडि A	पाछो	८	११०
शीन S	थीजेलुं	१	११
शेळो G	एक प्राणी	४	४६
साइतंकार D	विश्वस्त	२	१६
सात S	सुख	९	९०
सिऊरा U	श्रमणो	४	४६
सीझवुं-सीजवुं G	धीमे तापे रंधावुं	५	८१
सुकुमारिका S	सूकवीने तळेली पूरी	६	८१
सुण्णासण A	सूनुं	१	१९

सूनासणा G	खाली बेठकवाळुं, सूनुं	५	८१
सेल्लि P	जोतरुं	३	२५
स्थूर S	स्थूल	३	६५
हं, हुं G	-	११	९७
हांउं G	-	११	९५
हाय G	-	११	९५
हेय !-हैय्या ! G	-	११	९६
हेलि S	सूर्य	१०	८६

शब्दो कई भाषाना छे-ते जणावनारी संज्ञाओ-

A = अपभ्रंश D = देशी P = प्राकृत V = वैदिक

AM = अर्धमागधी G = गुजराती S = संस्कृत

आ शब्दचर्चा प्रायः हरिवल्लभ भायाणीसाहेबे करी छे. केटलाक शब्दो शीलचन्द्रसूरिजी, जयन्त कोठारी अने रमेश ओझाए पण चर्च्या छे.

५. विहंगावलोकन* (३०)

कया	क्यां ?		कया	क्यां ?	
अनु. नुं ?	अनु.	पृष्ठ	अनु. नुं ?	अनु.	पृष्ठ
११	१२	९०	२८	३०	६६
१४	१५	१०७	२९	३२	१०९
१५	१६	२३६	३०	३३	८०
१६	१७	१६८	३१, ३२	३३	८५
१७	१८	२०२	३३	३४	५७
१८	१९	१३८	३४	३५	८८
१९	२१	५६	३५, ३६	३७	६६
२०	२१	६०	३७	३८	६७
२१	२३	७२	३८	३९	९४
२२	२३	७४	३९, ४०	४१	५१
२३	२५	९७	४१, ४२	४३	७४
२४	२७	७९	४३, ४४	४५	१०८
२५	२७[1]	८४	४५	४६	८३
२६	२८	९५	४६, ४७, ४८	४९	१६९
२७	२९	९९	४९	५०(२)	२२७

* लेखक - भुवनचन्द्रजी

१. २८.९८, ३०.७९

प्रकीर्णखण्ड

१. माहिती व. (२०)

नाम	अनु.	पृष्ठ
जिनविजयजीनो एक स्मरणीय भावोद्‌गार	७	१२८
दसमी विश्व संस्कृत परिषदमां जैन विभागमां रजू थयेल निबन्धो	८	१३२
जिनागमोनी मूळ भाषा विशे परिसंवाद	९	११७
ओरिएन्टल-कोन्फरन्स ३८मुं संमेलन	९	११४
वर्षानुं आगमन (ज्ञाताधर्मकथा-वर्षावर्णन-अनुवाद)	१०	११०
जैनधर्मना विश्वकोश-ज्ञानकोशनी योजना	१०	११४
तीर्थंकर महावीरनुं देहवर्णन (औपपातिकसूत्र-आधारित)	११	९९
मध्यकालीन धर्म विषयक पद्यपरम्परा : संगोष्ठी अहेवाल	११	११०
आर्य भद्रबाहु और उनका साहित्य : संगोष्ठी अहेवाल	१४	११३
मुनिश्रीजम्बूविजयजीए जेसलमेरना जैन भण्डारोमांनी ताडपत्रीय अने कागळनी हस्तप्रतोनी नकल करावनी हाथ धरेली योजना	१६	२३०
प्राकृत ग्रन्थ परिषद् आदिनो उद्‌घाटन समारोह	१७	२१९
अवधू आनन्दघननी आध्यात्मिक शब्दचेतना : संगोष्ठी	१८	२७८
विदेशमां रहेली मूल्यवान जैन हस्तप्रतोना केटलोग माटे बे करोड रू. नी जाहेरात करतां श्रीवाजपेयी	२२	६९
जैन पाण्डुलिपिओनुं सूचीकरण तथा संरक्षण	२३	९१
एक ऐतिहासिक प्रसंगनी नोंध (भूकम्प)	२४	८६
मानवसर्जित दुर्घटनानो भोग बनेल एक विद्यातीर्थ (भाण्डारकर इन्स्टिट्यूट-पूना)	२७	८९
भाण्डारकरशोधसंस्थान विषे	२८	९९
प्राकृत-अंग्रेजी बृहद् कोष का निर्माण	२९	९१
पंचग्रन्थिव्याकरण-पुस्तक विमोचन समारोह तथा संगोष्ठि	३५	८५
भारतीय योग परम्परा के परिप्रेक्ष्य में जैन योग विषयक त्रिदिवसीय आन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी	३८	६९

२. महत्त्वनां पत्रो (३०)

शेना विषे ?	लेखक	अनु.	पृष्ठ
'म-न'नो खुलासो (अनु. ५, पृ. ८४)	म. अ. मेहेंदळे	६	११३
अनु.- ३, ४, ५	धुरन्धरविजयजी	६	११५
उपरनो पत्र	मधुसूदन ढांकी	७	१२०
वडगच्छस्थापनास्थळ	मुनिचन्द्रसूरिजी	७	१२३
शेळो, कुलिंग (अनु. ४, पृ. ४६)	मकरन्द दवे	७	१२५
जैनागम-भाषा-विषयक संगोष्ठी (४ पत्रो)	विद्वानो	१०	११४
अनु.- १२	भंवरलाल नाहटा	१४	४५
राग, नन्द्यावर्त, घवळी व.	मधुसूदन ढांकी	१७	१६०
भुवनसुन्दरीकथानो रचनासमय	मधुसूदन ढांकी	१७	२१७
सारस्वतोल्लासकाव्यना कर्ता	जयन्त कोठारी	१८	२००
प्रकीर्ण	जयन्त कोठारी	१८	२७२
प्रकीर्ण	जयन्त कोठारी	१८	२७३
विबुधपदविज्ञप्तिपरिपत्र	प्रद्युम्नसूरिजी	२२	६४
सहजकीर्ति उपाध्याय	विनयसागरजी	२५	१००
राणभूमीशवंशप्रकाशः (अनु. २५)	विनयसागरजी	२६	१२९
'मरुदेवा' शब्द	भुवनचन्द्रजी	३०	७९
पाठक रुघपति	विनयसागरजी	३३	७५
लब्धिरत्नगणि	विनयसागरजी	३३	७७
चन्द्रप्रभस्तवना कर्ता	विनयसागरजी	३४	५५
जसराज, चारित्रनन्दी उपा., कल्याणचन्द्रगणि, सम्पादक-टिप्पणी (अनु. ३६, पृ. ३४)	विनयसागरजी	३८	५४
ऋषभप्रभुस्तवना कर्ता	विनयसागरजी	४०	८३
श्रेष्ठी क्षेमन्धर, लालविनोदी	विनयसागरजी	४९	१३०
श्रीजम्बूविजयजीने श्रद्धांजलि (५ पत्रो)	विद्वानो	५०(२)	२३४

३. प्रकाशन-परिचय

अनुसंधानमां घणां घणां प्रकाशनोना उल्लेख, मात्र सम्पादक वगेरेनी माहिती साथेनो निर्देश, संक्षिप्त परिचय, विस्तृत परिचय अथवा समीक्षा करवामां आव्या छे. घणी वार प्रवर्त्तमान संशोधन-सम्पादन वगेरेनी संक्षिप्त के विस्तृत माहिती आपवामां आवी छे. कोईक पुस्तकमां आवेला उपयोगी लेखनी जाणकारी पण केटलीक वार अपाई छे. जेमांथी, आ अनुक्रमणिकानी मर्यादा ध्यानमां राखीने जेमना संक्षिप्त के विस्तृत परिचय अने समीक्षा करवामां आव्या होय तेवा प्रकाशनो तेमज विस्तृत माहिती आपवामां आवी होय तेवा सम्पादनोनी ज स्थाननिर्देश साथेनी अकारादिक्रमे सूची आपी छे. तेमां देवनागरी-लिपि अने रोमन-लिपिमां नाम धरावता ग्रन्थोने अनुक्रमे विभाग-१ अने २-मां समाव्या छे. वाचकोनी सगवडता माटे आ प्रकारनी माहिती धरावता तमाम स्थानोनी सूची विभाग-३-मां आपी छे.

विभाग-१

प्रकाशन	माहिती	अनु.	पृष्ठ
३५० गाथाना स्तवननो बालावबोध	क. - पद्मविजयजी सं. - प्रद्युम्नसूरिजी प्र. - श्रुतज्ञानप्रसारक सभा, अमदावाद	३९	९८
अकारादिक्रमेण अनुक्रमणिका (१-४)	सं. - विनयरक्षितविजयजी प्र. - शास्त्रसन्देश, सुरत	५० (१)	१५४
अभिधानचिन्तामणिनाममाला (सटीक)	क. - हेमचन्द्राचार्य टी. - देवसागरजी सं. - श्रीचन्द्रविजयजी प्र. - जैन संघ, रांदेर रोड-सुरत	१ २६	२२ १३१
अमदावादनी जैन चैत्य परिपाटी	सं. - रमणलाल महेता, कनुभाई शेठ	१	२२
अलंकारमहोदधि	क. - नरेन्द्रप्रभसूरिजी सं. - पारुल मांकड	१	३८
अष्टसहस्रीतात्पर्यविवरणम्	क. - यशोविजय उपा. सं. - वैराग्यरतिविजयजी प्र. - प्रवचन प्रकाशन, पूना	३३	९४

आख्यानकमणिकोशः (सटीक)	क. - नेमिचन्द्रसूरिजी टी. - आम्रदेवसूरिजी सं. - पुण्यविजयजी प्र. - P. T. S.	३३	९३
आचारांग (सटीक) (श्रुत० - १)	क. - सुधर्मास्वामी टी. - शीलांकाचार्य सं. - अमृतलाल भोजक, जम्बूविजयजी प्र. - सिद्धिभुवन० ट्रस्ट, अमदावाद	४३	८१
आचारांग - अक्षरगमनिका	क. - कुलचन्द्रसूरिजी प्र. - दिव्यदर्शन ट्रस्ट, धोळका	२२	६७
आचारांग - अनुवाद	क. - सुशीलसूरिजी सं. - जिनोत्तमसूरिजी प्र. - सुशीलसाहित्य प्र. समिति, जोधपुर	४६	९५
आचारांग - बालावबोध (श्रुत०-१)	सं. - भुवनचन्द्रजी, अमृत पटेल प्र. - पार्श्व साहित्य प्र. समिति, नानी खाखर, कच्छ	३५	८४
आवश्यकनिर्युक्ति - १	क. - आर्य भद्रबाहु सं. - कुसुमप्रज्ञाजी	२०	१११

	प्र. जैनविश्वभारती, लाडनू		
इन्दुदूतम् (सटीक)	क. - विनयविजय उपा. टी. - धुरन्धरसूरिजी प्र. - वर्धमान ग्रन्थ प्रकाशन, पालीताणा	५० (१)	१५४
उत्तरज्झयणाणि-१,२ (टीका - सर्वार्थसिद्धि)	टी. - कमलसंयम उपा. सं. - वज्रसेनविजयजी प्र. - भद्रंकर प्रकाशन, अमदावाद	४८	८०
उत्तराध्यायाः-१,२ (सटीक)	टी. - जयकीर्तिसूरिजी सं. - चन्दनबालाश्रीजी प्र. - भद्रंकर प्रकाशन, अमदावाद	५० (२)	२३२
उपदेशप्रदीपः	क. - मुक्तिविमल गणि सं. - धर्मतिलकविजयजी प्र. - स्मृतिमन्दिर प्रकाशन, अमदावाद	४०	८६
उपदेशमाला (सटीक)	क. - धर्मदास गणि टी. - सिद्धर्षि सं. - चन्दनबालाश्रीजी प्र. - श्रुतज्ञानप्रसारक सभा, अमदावाद	३८	७१

उपदेशमाला-बालावबोध	सं. - प्रद्युम्नसूरिजी, कान्तिभाई शाह प्र. - श्रुतज्ञानप्रसारक सभा, अमदावाद	२४	१२२
उपदेशमाला-बालावबोध-१, २	क. - सोमसुन्दरसूरिजी सं. - कान्तिभाई शाह प्र. - प्राणगुरु सेन्टर, मुंबइ	२०	११२
उपमितिकथोद्धारः	क. - हंसरत्न गणि सं. - मुनिचन्द्रसूरिजी प्र. - ॐकारसूरि ज्ञानमन्दिर, सुरत	२०	११२
एक अभिवादन-ओच्छव : एक गोष्ठि	सं. - कान्तिभाई शाह	१५	१११
कथारत्नसागरः	क. - नरचन्द्रसूरिजी सं. - मुनिचन्द्रसूरिजी प्र. - ॐकारसूरि ज्ञानमन्दिर, सुरत	४६	९५
कादम्बरी (सटीक)	क. - बाणभट्ट टी. - भानुचन्द्र उपा., सिद्धिचन्द्र उपा. सं. - हितवर्धनविजयजी प्र. - कुसुम-अमृत ट्रस्ट, वापी	३३	९३
कुमारपालचरित्रसंग्रहः	सं. - चन्दनबालाश्रीजी प्र. - श्रुतरत्नाकर, अमदावाद	४६	९६

कुम्मापुत्तचरियं	क. - जिनमाणिक्य सं. - चन्दनबालाश्रीजी प्र. - भद्रंकर प्रकाशन, अमदावाद	४९	१७७
कूर्मशतकद्वयम् (सानुवाद)	क. - भोजदेव अं.अनु. - वी.एम. कुलकर्णी सं. - आर. पिशेल प्र. - L. D.	३८	७२
कैलास श्रुतसागर ग्रन्थसूची - १, २, ३	प्र. - महावीर आराधना केन्द्र, कोबा	३३	९५
गुर्जरसाहित्यसंग्रह - यशोवाणी	क. - यशोविजय उपा. सं. - प्रद्युम्नसूरिजी प्र. - श्रुतज्ञानप्रसारक सभा, अमदावाद	३३	९४
चतुःशरणप्रकीर्णक (सटीक)	सं. - कीर्तियशसूरिजी प्र. - सन्मार्ग प्रकाशन, अमदावाद	४३	८२
चतुर्विंशतिजिनस्तवनम् (सानुवाद)	अनु. - सुलोचनाश्रीजी प्र. - जैन उपाश्रय, पीपरडी पोळ - अमदावाद	२२	६६
चन्द्रलेखाविजय	क. - देवचन्द्र सं. - प्रद्युम्नसूरिजी	१	२३

जम्बुचरियं	क. - गुणपाल सं. - चन्दनबालाश्रीजी प्र. - भद्रंकर प्रकाशन, अमदावाद	५० (१)	१५०
जयन्तीप्रकरणवृत्ति	क. - मलयप्रभसूरिजी सं. - चन्दनबालाश्रीजी प्र. - श्रुतज्ञानप्रसारक सभा, अमदावाद	५० (१)	१५३
जिनरंगसूरिग्रन्थावली	सं. - विनयसागरजी प्र. - M.S.P.S.G.	५० (१)	१४७
जैन आगमोमां आवता प्राकृत विशेषनामोनो परिचय कोश १, २	प्र. १०८ जैनतीर्थदर्शन ट्रस्ट, पालीताणा	५० (१)	१४७
जैन काष्ठपट - चित्र	ले. - वासुदेव स्मार्त्त सं. - जगदीप स्मार्त प्र. - ॐकारसूरि ज्ञानमन्दिर, सुरत	१९	१३७
जैन भाषादर्शन	क. - सागरमल जैन प्र. - B. L.	२१	६५
जैन विधिविधान सम्बन्धी साहित्य का बृहद् इतिहास	क. - सौम्यगुणाश्रीजी सं. - सागरमल जैन प्र. - प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर	३९	९८

जैन संस्कृत साहित्यनो इतिहास - १, २, ३	क. - हीरालाल कापडीया सं. - मुनिचन्द्रसूरिजी प्र. - ॐकारसूरि ज्ञानमन्दिर, सुरत	२९	१०४
जैनतर्कभाषा	क. - यशोविजय उपा. टी. - उदयसूरिजी, सुखलालजी सं. - त्रैलोक्यमण्डनविजयजी प्र. - जैनग्रन्थ प्रकाशन समिति, खम्भात	५० (२)	२२९
जैनदर्शन अने सांख्ययोगमां ज्ञान-दर्शन विचारणा	क. - जागृति शेठ	२	८३
जैनदर्शनमां नय	क. - जितेन्द्र शाह प्र. - भो. जे. विद्याभवन, अमदावाद	२२	६७
जैनविद्याः नेमिचन्द्र विशेषांक	प्र. - जैनविद्या संस्थान	१६	२३१
जैनसाहित्यनो संक्षिप्त इतिहास	क. - मोहनलाल देसाई सं. - मुनिचन्द्रसूरिजी प्र. - ॐकारसूरि ज्ञानमन्दिर, सुरत	३६	६२
ज्ञानविमलसझायसंग्रह	सं. - कीर्तिदा शाह, अभय दोशी प्र. - ज्ञानविमल प्रकाशन समिति	२४	१२०
ज्ञानसार-बालावबोध	क. - यशोविजय उपा. सं. - प्रद्युम्नसूरिजी, मालती शाह	४२	७९

	प्र. - श्रुतज्ञानप्रसारक सभा, अमदावाद		
ज्ञानसार-स्तबक	सं. - प्रद्युम्नसूरिजी, मालती शाह	३९	९८
	प्र. - श्रुतज्ञानप्रसारक सभा, अमदावाद		
तत्त्वचिन्तामणिः (टीका-सुखबोधिका)	क. - गंगेशोपाध्याय	३३	९०
	टी. - गुणरत्न वाचक		
	सं. - नगीन शाह		
	प्र. - M. L. B. D.		
त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्रम्	क. - विमलाचार्य	४३	८०
	सं. - जिनेशचन्द्रविजयजी		
	प्र. - जैन संघ, रांदेर रोड, सुरत		
दशवैकालिक (सटीक)	क. - शय्यंभवसूरिजी	२२	६८
	टी. - तिलकाचार्य		
	सं. - जिनेशचन्द्रविजयजी		
	प्र. - जैन संघ, रांदेर रोड - सुरत		
दिव्य-गहन जैन यन्त्र-मन्त्र-स्तोत्र	सं. - हितेश पण्ड्या	२८	१०३
	प्र. - हर्षदराय हेरिटेज, मुंबइ		
द्रव्यगुणपर्यायनो रास (स्वोपज्ञटबो-विवेचन सहित)	क. - यशोविजय उपा.	३३	९५
	वि. - धीरजलाल महेता		

	प्र. - जैनधर्मप्रसारण ट्रस्ट, सुरत		
धर्मरत्नकरण्डक (टीका-स्वोपज्ञ)	क. - वर्धमानसूरिजी	१	२५
	सं. - मुनिचन्द्रसूरिजी		
धर्मशिक्षाप्रकरणम् (सटीक)	क. - जिनवल्लभसूरिजी	३३	९२
	टी. - जिनपाल उपा.		
	सं. - विनयसागरजी		
	प्र. - प्राकृत भारती, जयपुर		
नयविंशिका	क. - अभयशेखरसूरिजी	५० (१)	१५१
	प्र. - दिव्यदर्शन ट्रस्ट, धोळका		
नलचम्पू और टीकाकार महो. गुणविनय : एक अध्ययन	क. - विनयसागरजी	२८	१०२
	प्र. - प्राकृतभारती, जयपुर		
नवतत्त्वसंवेदनप्रकरण	क. - अम्बप्रसाद	४०	८६
	सं. - धर्मतिलकविजयजी		
	प्र. - स्मृतिमन्दिर प्रकाशन, अमदावाद		
नियतिद्वात्रिंशिका (सविवेचन)	क. - सिद्धसेन दिवाकर	२१	६६
	वि. - भुवनचन्द्रजी		
	प्र. - जैनसाहित्य अकादमी, गांधीधाम		

निर्ग्रन्थ : हरिवल्लभ भायाणी विशेषांक	सं. - मधुसूदन ढांकी, जितेन्द्र शाह प्र. - S.C.	२२	६६
निर्ग्रन्थ ऐतिहासिक लेख समुच्चय-१, २	क. - मधुसूदन ढांकी प्र. - S.C.	२० २२	११४ ५६
निर्ग्रन्थस्तोत्रमणिमंजूषा	सं. - जितेन्द्र शाह	१	३९
न्यायसिन्धुः	क. - नेमिसूरिजी सं. - कीर्तित्रयी प्र. - जैनग्रन्थप्रकाशन समिति, खंभात	४२	८०
पंचग्रन्थिव्याकरण	क. - बुद्धिसागरसूरिजी सं. - नारायण कंसारा प्र. - B.L.	३५	८५
पंचसूत्रकम् (सपद्यानुवाद)	क. - हरिभद्रसूरिजी अं. - भुवनचन्द्रजी सं. - कीर्तित्रयी प्र. - भद्रंकरोदय ट्रस्ट, गोधरा	३९	९९
पण्डित वीरविजयजी स्वाध्याय ग्रन्थ	सं. - कान्तिभाई शाह प्र. - श्रुतज्ञानप्रसारक सभा, अमदावाद	९	१००

पत्रमां तत्त्वज्ञान (विवेचनात्मक)	क. - यशोविजय उपा. वि. - धुरन्धरसूरिजी प्र. - श्रुतज्ञानप्रसारक सभा, अमदावाद	४२	७९
परमपददायी आनन्दघन पदरेह - १, २	क. - खीमजीभाई सं. - मुक्तिदर्शनविजयजी प्र. - गुजराती जैन संघ, अन्धेरी-मुम्बई	३६	६०
परम्परागत प्राकृतव्याकरण-समीक्षा और अर्धमागधी	क. - के. आर. चन्द्रा प्र. - प्राकृत विद्याविकास फंड, अमदावाद	८	१२२
पाइअभाषाओ अने साहित्य	क. - हीरालाल कापडीया सं. - मुनिचन्द्रसूरिजी प्र. - ॐकारसूरि ज्ञानमन्दिर, सुरत	३६	६३
पाटण जैन धातुप्रतिमा - लेखसंग्रह	सं. - लक्ष्मणभाई भोजक प्र. - M.L.B.D.	२३	८९
पातंजलयोग एवं जैनयोग का तुलनात्मक अध्ययन	क.- अरुणा आनन्द प्र. - M.L.B.D.	२१	६५
पुण्यचरितमहाकाव्यम्	क. - नित्यानन्द शास्त्री सं. - सोमचन्द्रसूरिजी, विनयसागरजी प्र. - M.S.P.S.G.	५० (१)	१४७

प्रतिष्ठालेखसंग्रह-२	सं. - विनयसागरजी प्र. - प्राकृतभारती, जयपुर	२८	१०२
प्रबुद्धरौहिणेयम् (सानुवाद)	क. - रामचन्द्रसूरिजी गुज. अनु. - शीलचन्द्रसूरिजी प्र. - जैनसाहित्य अकादमी, गांधीधाम	२३	९०
प्रश्नोत्तरैकषष्टिशतककाव्यम् (सटीक)	क. - जिनवल्लभसूरिजी टी. - पुण्यसागर उपा. सं. - सोमचन्द्रसूरिजी, विनयसागरजी प्र. - M.S.P.S.G.	५० (१)	१४८
प्राकृतप्रबोध	क. - नरचन्द्रसूरिजी सं. - शीलचन्द्रसूरिजी	१	२६
प्राचीन मध्यकालीन साहित्यसंग्रह	क. - मोहनलाल देशाई	१६	२३५
	सं. - जयन्त कोठारी प्र. - L.D.	२१	६७
बारहक्खरकक्क	प्र. - अपभ्रंश साहित्य अकादमी	१६	२२९
बृहत्कल्पचूर्णि-१ (पीठिका)	सं. - शीलचन्द्रसूरिजी, रूपेन्द्रकुमार पगारिया प्र. - P.T.S.	४८	८०

भगवतीचूर्णि	सं. - रूपेन्द्रकुमार पगारिया	२०	१११
	प्र. - L.D.		
भारतीय तत्त्वज्ञान	क. - नगीनभाई शाह	५० (१)	१४५
	प्र. - १०८ जैनतीर्थदर्शन ट्रस्ट, पालीताणा	५० (१)	१५१
भारतीय संस्कृतिनो आत्मा	क. - कुमारपाल देसाई	५० (२)	२३२
	प्र. - वर्ल्ड जैन फेडरेशन, मुंबइ		
मंगलवादसंग्रह	सं. - वैराग्यरतिविजयजी	४३	८०
	प्र. - प्रवचन प्रकाशन, पूना		
मणिधारी श्रीजिनचन्द्रसूरि, दादा श्रीजिनकुशलसूरि	क. - अगरचन्द नाहटा, भंवरलाल नाहटा	४३	८०
	सं. - विनयसागरजी		
	प्र. - प्राकृतभारती, जयपुर		
मध्यकालीन गुजराती शब्दकोश	सं. - जयन्त कोठारी	१	३२
मल्लिनाथचरित्र	क. - हरिभद्रसूरिजी	१	२८
	सं. - सलोनी जोषी		
मुक्तकरत्नकोश	सं. - हरिवल्लभ भायाणी	१९	१३७
	प्र. - गुजरातसाहित्य अकादमी, गांधीनगर		
मूलशुद्धिप्रकरण-१, २	क. - प्रद्युम्नसूरिजी	२१	६६
	सं. - धुरन्धरसूरिजी, अमृतलाल भोजक		

	प्र. - श्रुतनिधि, अमदावाद		
मेरुतुंग-बालावबोध-व्याकरण	सं. - नारायण कंसारा	१०	१०८
मोहोन्मूलनवादस्थलम्	क. - अजितदेवसूरिजी	१	२९
	सं. - जयसुन्दरसूरिजी, महाबोधिविजयजी		
युगप्रधान आचार्य श्रीजिनदत्तसूरि का जैन धर्म एवं साहित्य में योगदान	क. - स्मितप्रज्ञाश्रीजी	१५	११०
राउलवेल	सं. - हरिवल्लभ भायाणी	१	३०
रात्रिभोजनत्याग आवश्यक क्यों ?	क. - स्थितप्रज्ञाश्रीजी	४९	११७
	प्र. - पार्श्वनाथ विद्यापीठ		
वस्तुपाल - तेजपाल राससंग्रह	सं. - महाबोधिविजयजी	३	४६
विधिमार्गप्रपा	क. - जिनप्रभसूरिजी	३५	८३
	सं. - सौम्यगुणाश्रीजी		
	प्र. - महावीरस्वामी देरासर, मुंबइ		
विनोदचोत्रीसी	क. - हरजी मुनि	४१	५६
	सं. - कान्तिभाई शाह		
	प्र. - गुजराती सा. परिषद, अमदावाद		
विश्वसाहित्यमां वार्ता - टूंकी वार्ता	क. - हसु याज्ञिक	१५	११०

वैभव और वैराग्य	क. - राकेश पाण्डेय प्र. - प्रसारण मन्त्रालय, दिल्ली	४३	८०
व्यवहारभाष्य (सानुवाद)	क. - संघदास गणि अनु. - दुलहराज प्र. - जैनविश्वभारती, लाडनू	२९	१०४
व्यवहारभाष्य व.	प्र. - जैनविश्वभारती, लाडनू	८	१२७
शतक (सविवेचन)	क. - देवेन्द्रसूरिजी वि. - रम्यरेणु प्र. - भीलडीयाजी तीर्थ	२१	६६
शास्त्रवार्तासमुच्चय (सानुवाद)	क. - हरिभद्रसूरिजी अं.अनु. - के. के. दीक्षित प्र. - L.D.	२३	८८
शुभशीलशतक-१ (सानुवाद)	क. - शुभशील गणि अनु. - विनयसागरजी प्र. - प्राकृतभारती, जयपुर	३३	९२
शृंगारवैराग्यतरंगिणी (सानुवाद)	क. - सोमप्रभाचार्य अनु. - मृगेन्द्रविजयजी प्र. - इमेज, अमदावाद	४२	८०

श्रमण भगवान महावीर	क. - कल्याणविजयजी प्र. - S.C.	२०	११३
श्रेणिकचरित्र (द्व्याश्रय) (सटिप्पण)	क. - जिनप्रभसूरिजी सं. - हेमगुणाश्रीजी, दिव्यगुणाश्रीजी	१	३१
श्वेतपटता क्रियते मया	क. - अजितदेवसूरिजी सं. - जयसुन्दरसूरिजी, महाबोधिविजयजी	१	३१
षोडशक (सटीक, सानुवाद)	क. - हरिभद्रसूरिजी टी. - यशोभद्रसूरिजी, यशोविजय उपा. अनु. - मित्रानन्दसूरिजी प्र. - पद्मविजयजी ग्रन्थमाला, अमदावाद	४६	९५
संगीतोपनिषत्सारोद्धारः	क. - सुधाकलश गणि सं. - Allyn Miner प्र. - M.L.B.D.	२१	६५
सप्तभंगीप्रभा	क. - नेमिसूरिजी सं. - कीर्तित्रयी प्र. - जैनग्रन्थप्रकाशन समिति, खंभात	४१	५६
सप्तभंगीविंशिका	क. - अभयशेखरसूरिजी प्र. - दिव्यदर्शन ट्रस्ट, धोळका	३६	५९

समणसुत्तं (सानुवाद)	अनु.- भुवनचन्द्रजी प्र. - यज्ञ प्रकाशन, वडोदरा	४०	८६
समवसरणसाहित्यसंग्रह	सं. - धर्मतिलकविजयजी प्र. - स्मृतिमन्दिर प्रकाशन, अमदावाद	४०	८६
सागरविहंगमः (सानुवाद)	अनु. - कल्याणकीर्तिविजयजी सं. - कीर्तित्रयी प्र. - भद्रंकरोदय ट्रस्ट, गोधरा	३९	९९
साधुमर्यादापट्टकसंग्रह	सं. - महाबोधिविजयजी प्र. - जिनशासन ट्रस्ट, मुंबइ	२८	१०२
सिद्धहेमढुंढिका-१, २	सं. - विमलकीर्तिविजयजी प्र. - K.H.	४६	९५
सिद्धहेमलघुवृत्त्युदाहरणकोशः	सं. - धर्मकीर्तिविजयजी, त्रैलोक्यमण्डनविजयजी प्र. - K.H.	५०(१)	१५६
सिरिभुयणसुंदरीकहा	क. - विजयसिंहसूरिजी सं. - शीलचन्द्रसूरिजी प्र. - P.T.S.	१८	२७६
सुदंसणाचरियं	सं. - सलोनी जोषी प्र. - L.D.	२३	८८

सुभाषितसंग्रहसमुच्चयः	सं. - नीलांजना शाह प्र. - K.H.	४१	५७
सुमइनाहचरियं	क.- सोमप्रभाचार्य सं. - रमणीक शाह प्र. - P.T.S.	२९	१०३
सूर्यसहस्रनामसंग्रहत्रयम्	सं. - धर्मधुरन्धरसूरिजी प्र. - जैनविद्या शोध संस्थान, ओस्तरा	३३	९४
सेतुबन्ध	सं. - शीलचन्द्रसूरिजी प्र. - K.H.	२२	६७
हितोपदेश (सटीक)	क. - प्रभानन्दसूरिजी टी. - परमानन्दसूरिजी सं. - कीर्तियशसूरिजी प्र. - सन्मार्ग प्रकाशन,अमदावाद	२९	१०३
हीरसुन्दरमहाकाव्य-२	क. - देवविमल गणि सं. - रत्नकीर्तिविजयजी प्र. - जैनग्रन्थ प्र. समिति, खंभात	३३	९६

विभाग-२

Publication	Information	Anu.	Page
A Reference Manuel of Middle Prakrit-Grammer	Au. - Frank Van Den Bossche Pu. - Gent Uni., Gent	16	232
A Study of Jayanta Bhaṭṭa's Nyāyamañjarī : 2	Au. - Nagin Shah	5	85
A Study of the Bhagavati Sutra	Au. - Suzuko Ohira	3	47
Avasyaka-Studies	Au. - Nalini Balbir	3	48
Bhakatāmara (With Tra.)	Pu. - A Divine Pub., Chicago	20	113
Catalogue of the Jain Manuscripts of the British Library-1, 2, 3	Ed. - Nalini Balbir etc. Pu. - British Lib., London	38	71
Dr. Harivallabh Bhayani : A man of Letters	Ed. - Mahesh Dave, Ramesh Oza Pu. - Image, Mumbai	22	67
Handbook to the Vachanāmṛtaṃ		15	110
Hemachandra	Pu. - Oxford Uni., USA	20	113
History & Development of Prakrit Literature	Au.- Jagadishchandra Jain	1	35
Indian Kāvya Literature	Ed. - A. K. Vorder	4	89

Jain Temples	Au. - L. M. Singhavi	21	66
	Pu. - Himalayan Books, Delhi		
Jaina Theory of Multiple Facets of Reality and Truth	Ed. - Nagin Shah	21	64
	Pu. - M. L. B. D.		
Jainism and the New spirituality	Au. - Vastupal Parikh	23	89
	Pu. - Peace Pub., Toronto		
Lord Swāminārāyaṇ : an Introduction	Au. - Mukundcharandas	15	110
Ludwing Alsdorl & Indian Studies	Ed.- Klaus Bruhn etc.	5	86
Maerials for an edition and study of the Pinda and Ohanijjuttis.	Au. - Willem Bollee	3	46
Nani Rayan	Au. - Pulin Vasa	41	57
	Pu. - K. H.		
On the Shalibhadra-Dhannā-Carita	Ed. - Ernst Bender	3	45
Osiaji	Au. - Ravindra Vasavada	23	89
	Pu. - L.D.		
Restoration of the Original Language of Ardhamāgadhī Texts.	Au. - K. R. Chandra	5	60
Scripture and Community	Au. - L. M. Singhavi	21	66
	Pu. - Himalayan Books, Delhi		

Study of Variants & Reediting of Older Ardhamagadhi Texts	Au. - K. R. Chandra	1	34
The Clever Adulteress : A Treasury of Jain Literature	Ed. - Filis Grenof	3	49
The Harivijaya of Sarvasena.	Au. - V. M. Kulkarni	3	49
Viyāhapannatti	Au.- Jozef Delen Pu. - De Tempel, Beljil	16	233
When did the Buddha Live ?	Ed. - Heinz Berchert	10	112
एरिख क्राउवाल्नर्झ पोस्थ्युमस एसेझ (अनूदित)	ले. - फ्राउवाल्नर अनु. - जयेन्द्र सोनी	4	91
धेट ह्विच इझः तत्त्वार्थसूत्र (अनूदित)	अनु. - नथमल टाटिया	4	92

विभाग-३
प्रकाशन-सम्पादन वगेरेनी माहितीनां स्थान

अनु.	पृष्ठ	अनु.	पृष्ठ	अनु.	पृष्ठ
१	२२-४२	१८	२७६, २७७	३६	५९-६३
२	८३	२१	६४-६७	३८	७१, ७२
३	४५-५१	२२	६६-६८	३९	९८-१००
४	८९-९३	२३	८८-९०	४०	८६-८८
५	८५-८७	२४	१२०-१२२	४१	५६, ५७
८	१२७	२५	१०९	४२	७९, ८०
९	११३	२६	१३१	४३	८०, ८२
१०	११२-११४	२८	१०२, १०३	४६	९५, ९६
११	११५, ११६	२९	१०३, १०४	४८	८०
१४	११५, ११६	३१	६७	४९	१७७
१५	११०-११२	३३	९०-९५	५० (१)	१४५-१५६
१६	२२७-२३४	३५	८३-८५	५० (२)	२३२

४. आवरणचित्र

अनु.	टाइटल	नाम	परिचय पृष्ठ
१७	१	पं. दलसुखभाई मालवणिया	-
१८	१	हरिवल्लभ भायाणी	-
१९	१	सरस्वतीदेवी (पोथीचित्र)	-
२०	१	वसुधाराचित्रपट - पं. दीपविजय-आलिखित	-
२२	१	समुद्रबन्धचित्रकाव्यपट - पं. दीपविजय-आलिखित	११
२३	१	मल्लिनाथनी स्त्रीदेहप्रतिमा	७०
२५	१	सरस्वतीदेवीप्रतिमा - वरमाण	१०९
२६	१	सरस्वतीदेवी (पोथीचित्र)	-
२७	१	सरस्वतीदेवी - १९मा शतकनुं चित्र	-
२९	१	सुशोभनचित्र - पोथी पर चितरेलुं	-
३०	१-४	काष्ठशिल्प - खम्भात	-
३१	१	मंगलकलश - पोथीचित्र	-
३२	१	साध्वीप्रतिमा	८८
३३	१	गुरुमूर्ति - भद्रेश्वर, सं. १३३३	७४
	४	गुरुमूर्ति - भद्रेश्वर, सं. १३३१	७४
३४	१	धातुप्रतिमा - सं. १५७४-अग्रभाग	६०
	४	धातुप्रतिमा - सं. १५७४-पृष्ठभाग	६०
३५	१	धातुप्रतिमापरिकर - अग्रभाग	८१
	४	धातुप्रतिमापरिकर - पृष्ठभाग	८१
३६	१	ज्ञानसारजी	-
३७	१	सरस्वतीदेवी - अग्रभाग	-
	४	सरस्वतीदेवी - पार्श्वभाग	-
३८	१	मल्लिनाथस्त्रीप्रतिमा - अग्रभाग	-
	४	मल्लिनाथस्त्रीप्रतिमा - पृष्ठभाग	-
३९	१-४	पोथीचित्र - जैनमुनि द्वारा चित्रित	९३

४०	१	कल्पव्याख्यान करतां जिनचन्द्रसूरिजी :	
		मांडवी, खरतरगच्छसंघ भण्डार, ताडपत्र	-
	४	कल्पश्रवण करतो श्रीसंघ :	
		मांडवी, खरतरगच्छसंघ भण्डार, ताडपत्र	-
४१	१	शालिभद्रसूरिजी व. साधुओनी चित्रपट्टिका	५५
४२	१	लोकपुरुष	७६
४३	१	सूर्यशिल्प	३९
४४	१	धातुप्रतिमा-सं. १२४४ - अग्रभाग	६ (आगळनुं)
	४	धातुप्रतिमा-सं. १२४४ - पृष्ठभाग	६ (आगळनुं)
४५	१	कर्नल टोड-ज्ञानचन्द्रयति - हाथीना होद्दे	११२
	४	कर्नल टोड-ज्ञानचन्द्रयति - अध्ययन करता	११२
४६	१-४	विविध धर्मसम्प्रदायना साधुओ	८ (आगळनुं)
४७	१-४	मधुबिन्दु	५६
४८	१	नारीअश्व पर सवार श्रीकृष्ण	५ (आगळनुं)
	४	चक्राकारे रास लेतो पुरुष	५ (आगळनुं)
४९	१	जिनप्रतिमा	९७
५०(१)	१	पद्मावतीदेवी - काष्ठप्रतिमा	४ (आगळनुं)
	४	पित्तलनी दीपदानी	४ (आगळनुं)
५०(२)	१	हेमचन्द्राचार्य	—
	४	जम्बूविजयजी	—

५. अवसान-नोंध (११)

व्यक्तिनाम	अनु.	पृष्ठ
चन्द्रभाल त्रिपाठी	७	१३१
अर्नेस्ट बेन्डर	७	१३१
मधुसेन	७	१३२
र. ना. महेता	८	१३५
रमेश मालवणिया	८	१३५
गोवर्धन पंचाल	९	११६
दलसुख मालवणिया	१६	२४५
अमृतलाल भोजक	१६	२४७
भंवरलाल नाहटा	२०	११५
मकरन्द दवे	३२	१०१
लक्ष्मणभाई भोजक	३२	१०१

६. अनुसन्धाननी तवारीख

वर्ष (ई.स.)	अंक-क्रमांक
१९९३	१
१९९४	२, ३
१९९५	४, ५
१९९६	६, ७
१९९७	८, ९, १०
१९९८	११, १२
१९९९	१३, १४, १५
२०००	१६, १७
२००१	१८
२००२	१९, २०, २१
२००३	२२, २३, २४, २५, २६
२००४	२७, २८, २९, ३०
२००५	३१, ३२, ३३, ३४
२००६	३५, ३६, ३७
२००७	३८, ३९, ४०, ४१, ४२
२००८	४३, ४४, ४५, ४६
२००९	४७, ४८, ४९
२०१०	५० (१, २)